हज़रत जी (रह०) की

यादगार तक़रीरें

मुन्शी अनीस अहमद (रह०)

हज़रत जी (रह०) की

यादगार तक़रीरें
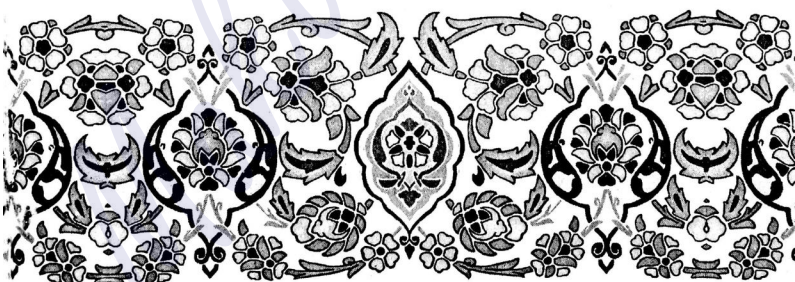
मुन्शी अनीस अहमद (रह०)

www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम : हज़रत जी (रह०) की यादगार तक़रीरें
Hazrat ji ki Yadgar Taqrirein

मुरत्तिब : मुन्शी अनीस अहमद (रह०)

अनुवादकः अहमद नदीम नदवी

प्रथम प्रकाशन : 2013

ISBN 81-7101-474-7

TP-218-13

Published by Mohammad Yunus for
IDARA IMPEX
D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: sales@idaraimpex.com
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ

हज़रत जी (रह०) की एक यादगार तक़रीर

रईसुत्तब्लीग़ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने यह तक़रीर दिल पज़ीर अपनी वफ़ात से एक हफ़्ता पहले गुजरानवाला में जुमा की नमाज़ से पहले फ़रमाई थी, गोया यह आपकी ज़िंदगी का आख़िरी जुमा था, जिसमें आपने यह तक़रीर फ़रमाई। इससे अगले जुमा यानी 2 अप्रैल 1965 ई० को लाहौर बिलाल पार्क में आपका विसाल हो गया और आप हम सबको सोगवार छोड़कर अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी से जा मिले। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

मुरत्तिब : मीर अब्दुल हलीम, गुजरानवाला

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّىْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०

मेरे भाइयो और दोस्तो!

इंसान को अल्लाह ने थोड़े दिनों के लिए इस दुनिया में भेजा है और मेहनत की दौलत देकर भेजा है और इसलिए भेजा है कि अपनी मेहनत को अपने ऊपर ख़र्च करके क़ीमती बना ले। अगर उसने अपनी मेहनत को अपने ऊपर ख़र्च करके अपने को क़ीमती बना लिया, तो हक़ तआला शानुहू दुनिया में भी रहमतों की बारिश बरसाएंगे, इनामों की बारिश बरसाएंगे, कामयाबियों के दरवाज़े खोलेंगे और जब यह मर जाएगा तो उसकी क़ीमत के एतबार से जितना उसने अपने क़ीमती बनने में मेहनत की होगी और जितना अपनी ज़ात को क़ीमती बना लिया होगा, उसके लिहाज़ से उसे जन्नत के दर्जे अता

फ़रमाएंगे। सातों ज़मीन व आसमान से दस गुने से ज़्यादा से लेकर लाखों और करोड़ों गुना तक एक इंसान को मिलेगा, उसकी अपनी क़ीमत्त के एतबार से उसके अन्दर क्या क़ीमत है।

अब मेरे अज़ीज़ दोस्तो! यह जो इंसान की मेहनत है, यह दोज़ख़ी है। इस मेहनत से दोज़ख़ पे बनता है। बाहर चीज़ों की शक्लें बनती है। इंसानों की मेहनत से, सड़कों की शक्ल, मोटरों की शक्ल, सवारियों की शक्ल, ग़िज़ाओं की शक्ल, हलवों की शक्ल, खाने-पीने की चीज़ों की शक्ल, सवारियों की शक्ल, मकान की शक्ल, तमाम चीज़ों की शक्लें तो बनती हैं, इंसान की बाहर और यक़ीन की शक्लें बनती हैं नीयत की बनती हैं इंसान के अन्दर, इल्म और जह्ल की शक्लें बनती हैं इंसान के अन्दर, ग़फ़लत और ज़िक्र बनता है, इंसान के अन्दर, अख़्लाक़ और बद-अख़्लाक़ी का नूर और ज़ुलमत बनता है इंसान के अन्दर, तो इंसान की मेहनत से जिस तरह बाहर चीज़ों की शक्लें बनती हैं, उसी तरह अन्दर में ईमान की, यक़ीन की, अख़्लाक़ की, मुहब्बत की, अदावत की शक्लें बनती हैं। मेहनत करते-करते किसी से मुहब्बत करने वाला बनता है, किसी से अदावत करने वाला बनता है, मेहनत करते-करते किसी पर एतमाद करने वाला बनता है, किसी पर एतमाद न करने वाला बनता है। मेहनत करते-करते, किसी पर यक़ीन करने वाला बनता है, किसी पर यक़ीन न करने वाला बनता है, तो मेहनत से चीज़ों की शक्लें तो बनेंगी बाहर और यक़ीन की, नीयत की, इल्म की, ध्यान की, मुहब्बत की, अदावत की, एतमाद की, भरोसे की, ये शक्लें इंसान के अन्दर बनेंगी। जो बाहर बन रही हैं शक्लें, चाहे वह वज़ीरों के हाथ में हों शक्लें, चाहे वे सदरों के हाथ में हों शक्लें, चाहे वे गवर्नरों के हाथ में हों, चाहे वे उन सरमायादारों के हाथों में शक्लें हों, चाहे वे मज़दूरों के हाथों में शक्लें हों। शक्लों को इंसान हर जगह मुंतक़िल नहीं करता और इन चीज़ों की शक्लें इंसान के साथ हर जगह मुंतक़िल नहीं होतीं। आप लाहौर जाएंगे, तो आपने बीस, तीस, चालीस, पचास साल की मेहनत से जितनी दुकान की शक्ल बनाई है और कोठी की शक्ल बनाई है या बाग़ीचे की शक्ल बनाई है या ऐश की शक्लें बनाई हैं, वे आपके साथ लाहौर नहीं जाएंगी, कराची नहीं जाएंगी, मुलतान नहीं जाएंगी। जो बाहर का बना हुआ

है, वह यहीं छोड़कर जाओगे। कुछ पैसे ले जाओगे, कुछ नक़दी ले जाओगे, कुछ ले जाओगे, अक्सर बाहर का बना हुआ छोड़ जाओगे, सड़कें यहीं छोड़ जाओगे, पुल यहीं छोड़ जाओगे और जब इस मुल्क से दूसरे मुल्क में जाओगे, तो नक़दी भी छोड़ के जानी पड़ेगी, सारी नक़दी भी साथ नहीं ले जा सकते। जितना पैसा बना हुआ है सब यहीं छोड़ जाओगे, जितना हुकूमत तुम्हें इजाज़त देगी, उतना ले जा सकोगे, दूसरे मुल्क में सारा बना हुआ उसकी शक्ल में नहीं ले जा सकोगे।

और फिर इस दुनिया से जब आख़िरत की तरफ़ जाएंगे, तो बाहर का जितना बना हुआ है, वह सौ फ़ीसद यहां छोड़ के जाना पड़ेगा, बदन के कपड़े तक छोड़ के जाने पड़ेंगे, यह ऐनक तक छोड़ के जानी पड़ेगी, जिसके बग़ैर हमारा गुज़ारा नहीं होता, घड़ियां छोड़ के जानी पड़ेंगी, ये जूते छोड़ के जाने पड़ेंगे, तो बाहर का जितना बना हुआ है, तो यह दुनिया में किसी ने कहीं साथ छोड़ा, किसी ने कहीं साथ छोड़ा। आख़िरी चीज़ें जो साथ छोड़ेंगी वे उस वक़्त साथ छोड़ेंगी, जब यह रूह जिस्म से निकल कर ख़ुदा की तरफ़ चलेगी। उस वक़्त जो कुछ था, यह दुनिया का बाहर का बना हुआ, वह सारे का सारा यहीं का यहीं रह जाएगा।

लेकिन मेरे प्यारे दोस्तो! जो इंसान के अन्दर बनता है, इंसान उसे चौबीस घंटे, जहां जाता है, अपने साथ लेकर जाता है। पाख़ानों में जाओगे, तो जो कुछ अन्दर का बना हुआ है, साथ ले के जाओगे, दस्तरख़्वान पर बैठोगे, तो जो कुछ अन्दर का बना हुआ है, साथ ले के बैठोगे, चारपाई पर सोने के लिए जाओगे, चारपाई पर लेटोगे, तो अन्दर का जो कुछ बना हुआ है, साथ ले के लेटोगे, अगर लाहौर जाओगे, अन्दर का बना हुआ सारा लेकर जाओगे, कराची जाओगे, सारा ले के जाओगे, दुनिया के किसी मुल्क में जाओगे, अन्दर का सारा ले के जाओगे, जो यक़ीन अन्दर में बना हुआ साथ जाएगा और जो मुहब्बत अन्दर में बनी हुई साथ जाएगी, जो अदावत अन्दर में बनी हुई साथ जाएगी, जो इल्म अन्दर में बना हुआ साथ जाएगा, जो ध्यान अन्दर में बना हुआ साथ जाएगा, जो एतमाद और भरोसा अन्दर में बना हुआ साथ जाएगा, तो अन्दर का बना हुआ हर वक़्त साथ चलता है और बाहर का बना हुआ

हर वक़्त साथ नहीं चलता, यहां तक कि जब दुनिया से आख़िरत की तरफ़ इंसान मुंतक़िल होगा, तो अन्दर के बने हुए को सौ फ़ीसद साथ ले जाएगा। अब अगर वह बना जो क़ीमती है, तो यह जहां जाता है, कामयाब होता है और अगर अन्दर में वह बना जो बे-क़ीमत है, तो जहां जाता है, नाकाम होता है। वह अख़्लाक़ बना, जिसमें इज़्ज़त मिलती है, वह यक़ीन बना, जिसमें बुलन्दी मिलती है, वह मुहब्बत बना, जिस पर इनाम मिलते हैं, वह एतमाद बना, जिस पर मदद के दरवाज़े खुलते हैं, वह इल्म बना, जिस इल्म पर ख़ुदा चमकाता है, वह ध्यान बना, जिस ध्यान पर ख़ुदा कामयाब करता है, तो अगर अन्दर में वह बना, जिसके बनने के लिए ख़ुदा ने दुनिया में भेजा और जिसके बनने के लिए ख़ुदा ने मेहनत की दौलत अता फ़रमाई, तो मेहनत करके अन्दर में अगर वह बन गया, तो दुनिया के जिस इलाक़े में चाहे फिरे, जिस मुल्क में जाए और जिस सड़क पर चाहे निकल जाए और जिस सवारी पर चाहे, सवार हो जाए, चाहे गधे पर सवार हो के निकले, चाहे मोटर पर सवार होकर निकले, चाहे पैदल निकले, चाहे सवारी में निकले, चाहे झोंपड़ों पर लेटे, चाहे कोठियों में लेटे, चाहे चटनी-रोटी खाता हुआ निकले, लाखों के खाने खाता हुआ निकले, अन्दर का बना हुआ अगर वह है, जिस पर ख़ुदा कामयाब करते हैं और जो क़ीमती है तो फिर जिस लाइन को निकलोगे, जिस शक्ल से गुज़रोगे, कामयाब हो जाओगे और ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वह बन गया, जो बे-क़ीमत है, वह यक़ीन बना जिस पर ख़ुदा पकड़ करते हैं, वह मुहब्बत बना, जिस पर ख़ुदा मुसीबतें डालते हैं और वह एतमाद बना, जिस पर ख़ुदा ज़िंदगी बिगाड़ते हैं और वह इल्म बना जिसको ख़ुदा जह्ल क़रार देते हैं, वह ध्यान बना, जिसको अल्लाह ग़फ़लत कहते हैं, तो अगर अन्दर में वह बना, जिसके बनने पर ख़ुदा नाकाम किया करते हैं, तो दुनिया में इंसान जहां को भी निकलेग, चाहे सवारियों पर निकले, चाहे कारों में निकले, चाहे हवाई जहाज़ों में निकले, ज़लील होगा, ख़ौफ़ज़दा होगा, ग़ैर-मुतमइन होगा, परेशानहाल होगा। दुनिया में चाहे जिन शक्लों मे कोई निकले, कामयाबी नसीब नहीं होगी, शक्लें बनी हुई मिल जाएंगी, लेकिन इज़्ज़त नहीं मिलेगी और जब मरेगा तो अन्दर का बना ख़ुदा हर एक को दिखाएंगे कि तेरे में क्या बना,

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ط

'अन्दर का बना हुआ दिखा देंगे।' साहबज़ादे! यह यक़ीन बना के लाए हो। यह तो दोज़ख़ वाला यक़ीन है, जन्नत में नहीं ले जाता, यह मुहब्बत तो दोज़ख़ में ले जाती है। यह तो दुनिया की मुहब्बत है, यह तो दोज़ख़ में ले जाती है। यह नहीं ले जाती जन्नत में। कहां है वह अल्लाह की मुहब्बत, वह किस कोने में रखी है? लाओ, लाकर दिखाओ। लाओ वह रसूलुल्लाह सल्ल० की मुहब्बत निकाल कर दिखाओ। वह मुहब्बत जिस पर आदमी जान व माल, मां-बाप, औलाद तक क़ुर्बान कर दे। कहां है वह मुहब्बत? यह दिल में दिखाओ कि मुहब्बत की जगह दिल है, ज़ुबान मुहब्बत की जगह नहीं। ज़ुबान मुहब्बत की जगह है ही नहीं। यह तो ज़ुबान पर है, इसको रसूलुल्लाह सल्ल० की मुहब्बत का इज़्हार कहते हैं और इज़्हार की जगह ज़ुबान है। मुहब्बत की जगह ज़ुबान नहीं, इज़्हार की जगह ज़ुबान है।

ईमान की जगह ज़ुबान नहीं है, ज़ुबान इज़्हार की जगह है। ईमान को ज़ाहिर करती है, यह ज़ुबान ईमान की जगह नहीं है। ईमान की जगह तो दिल है, मुहब्बत की जगह तो दिल है, एतमाद की जगह तो दिल है, ज़ुबान ख़ाइन (ख़ियानत करने वाली) रहती है और ऐसी मुनाफ़िक़ है यह ज़ुबान कि जो दिल में हो, उसे बोल पड़े और उसके ख़िलाफ़ भी बोल पड़े। कोई आदमी आया, अब आपको बहुत ग़ुस्सा आया कि बे-मौक़े आ गया। रोटी खा के सोते में तो बेगम को बुला रखा है, उस वक़्त और बे-मौक़ा आ के बैठ गया और ख़ूब तबियत में नागवारी है और ज़ुबान से क्या कह रहे हैं, आपके आने से बड़ी मुसर्रत हुई, तो ज़ुबान ने वह नहीं बोला, जो दिल में है, उसके ख़िलाफ़ बोला, तो ज़ुबान वह भी बोलती है जो दिल में है और ज़ुबान वह भी बोलती है, जो दिल में नहीं है। इंसान ज़ुबान से धोखा खा जाता है, कल को क़ियामत में ज़ुबान से वही निकलेगा जो दिल में है और ज़ुबान वह भी बोलती है, जो दिल में नहीं होगा, वह ज़ुबान पर नहीं आएगा।

इसीलिए लिखा है तह्क़ीक़ करने वाले उलेमा ने, तफ़्सीर लिखने वालों ने कि यहां दुनिया में कोई कितना ही क़ुरआन हिफ़्ज़ कर ले और सारा पढ़

ले और ऐसा याद हो कि बे-झिझके, बे-अटके सारा क़ुरआन पढ़ जाए, लेकिन कल को क़ियामत में जब क़ुरआन पढ़ने का वक़्त आएगा कि पढ़, और जन्नत के दर्जों पर चढ़, चढ़ता चला जा, पढ़ता चला जा, तो इस तरह फ़रमाया कि जितना क़ुरआन पर अमल होगा, ज़ुबान पर उतना ही आएगा, अमल में नहीं होगा तो क़ुरआन पढ़ा नहीं जाएगा। दुनिया वाली बात नहीं है, अमल कुछ और क़ुरआन पढ़ रहे हैं, दिल में कुछ और ज़ुबान पर बोल रहे हैं, वहां तो जो अमल होगा, वह ज़ुबान बोलेगी, जो यक़ीन होगा, वह ज़ुबान बोलेगी।

इसलिए मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मेहनत की दौलत अता फ़रमाई और मस्जिद के अन्दर आवाज़ लगवाई कि देखो, अपने-अपने नक़्शों से निकल कर आओ वक़्त तुम्हारे पास मौजूद है, आंख बन्द हो जाएगी, तो वक़्त जाता रहेगा मेहनत करने का। उस वक़्त अगर मेहनत कर ली तो तुम अन्दर की बुनियादों को ठीक कर लोगे। अब अगर तुमने वक़्त पर मेहनत ख़र्च की तो मौत के वक़्त यह हरकत ख़त्म हो जाएगी। मरने के बाद यह ख़त्म हो जाएगी। क़ुरआन में है, वे यों कहेंगे कि अल्लाह! हमने देख लिया—

رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ○

'ऐ रब! देख लिया, सुन लिया, सब हमारी समझ में आ गया। अब आप दुनिया में वापस भेजिए हम अच्छे अमल करके आएंगे।'

तो गोया आख़िरत अमल करने की जगह नहीं, अमल की जगह नहीं है आख़िरत, जैसे यह मां का पेट, यह कमाई की जगह नहीं, कमाने की जगह दुनिया है। मां का पेट है ही नहीं कमाने की, खाने की, हलवों की जगह और गुलाब-जामुन की जगह और चाय पीने की जगह, वह है ही नहीं। तो अमल पर मेहनत का मैदान यह दुनिया है। अब आदमी मर जाएगा, तो आख़िरत में अमल का मैदान नहीं रहेगा, मेहनत का मैदान ख़त्म हो जाएगा। आज जैसे बनेंगे, वैसा दर्जा क़ायम हो जाएगा। ख़राब बन गए तो दोज़ख़, अच्छे बन गए तो जन्नत। जिस शक्ल के अच्छे बने, उस शक्ल की जन्नत मिलेगी। अब

इसके लिए मस्जिदें बनीं और आवाज़ लगाई गई कि देखो, ये चीज़ें तुम्हें अपने में पैदा करनी हैं। अगर तुम अपने को क़ीमती बनाना चाहते हो, अगर कामयाब बनाना चाहते हो, तो तुम्हें अपने अन्दर ये चीज़ें उतारनी हैं, दिल में उतारो। ज़ुबान से जो बोलो, उसके ख़िलाफ़ मत करो। अपनी-अपनी ज़ुबानों से धोखे मत खाओ। तुम्हारे दिल में इन चीज़ों को देखा जाएगा कि तुममें ये हैं या नहीं। सबसे पहली बात! अल्लहु अक्बर! ज़मीन, आसमान, हवा, पानी, आग, पहाड़ जितनी छोटी-बड़ी शक्लें हैं, इन सबसे अल्लाह बहुत बड़े हैं। वह हवा, जिसको ख़ुदा अगर मश्रिक़ से मग़्रिब तक एक दिन के लिए तेज़ चला दें, या आधा दिन के लिए, तो मूसा अलैहि० व ईसा अलैहि० के हाथों जितनी ईजादें हैं और उनके पीछे चलने वाले जितनी शक्लें लिए बैठे हैं, वे रूए ज़मीन से आधे दिन में साफ़ हो जाएं, अगर आद जैसी हवा चला दें, सब फ़ना हो जाएं। अल्लाह उस हवा से बहुत बड़ा है। तुम्हारे हाथों की शक्लें तो हवा के सामने कुछ नहीं और हवा अल्लाह के सामने कुछ नहीं। यह आग अगर मश्रिक़ से मग़्रिब तक लगा दी जाए, जितनी उसमें शक्लें बनी हुई हैं, एक दिन की ताब न ला सकें और ये सारी राख हो जाएं जल कर और सारी ख़ाक हो जाएं, अगर मश्रिक़ से मग़्रिब तक पूरी दुनिया में आग लगा दे ख़ुदा, तुम्हारे हाथों का बना हुआ इस आग के सामने कुछ नहीं। जो ख़ुदा की कायनात के ख़ज़ानों में आग है, यह सारी आग उस आग के सामने कुछ नहीं।

अल्लाह बहुत बड़ा है। यह पूरी ज़मीन अगर उसे हिला दिया जाए और जामुनों की तरह जिस तरह जामुनों को नर्म करने के लिए बरतन को हिलाते हैं, अगर ख़ुदा कुछ मिनटों के लिए उसे हिला दें तो तुम्हारे हाथों से जो कुछ बना हुआ है, वह सारा ज़मीन के अन्दर मिलकर ख़त्म हो जाएगा। यह ज़मीन और तुम्हारे हाथों से जो कुछ इस पर बना है, अल्लाह के सामने कुछ भी नहीं। अल्लाह बहुत बड़ा है। अगर यह सारा कायनाती ख़ज़ानों में जिस क़दर पानी है, उसको पूरी दुनिया में भर दिया जाए तूफ़ाने नूह की तरह, तो यह इंसानों के हाथों का जिस क़दर बना हुआ है, एक दिन की ताब नहीं ला सकता। सारा टूट के ख़त्म हो जाएगा। तुम्हारे हाथों का बना हुआ पानी के सामने कुछ नहीं और पानी ख़ुदा के सामने कुछ नहीं, अल्लाहु अक्बर! अल्लाह बहुत बड़ा

है, अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह की बड़ाई की तस्क़ीक़ करो, क़ुरआन से अल्लाह की बड़ाई की तस्क़ीक़ करो। हदीसों से अल्लाह जैसे बड़े हैं, वैसी बड़ाई दिल में उतारो। यक़ीन ऐसा पैदा करो, जितने वह बड़े हैं, जैसा वह पैदा करने में बड़े हैं, जैसा वह देने में बड़े हैं, जैसा वह पालने में बड़े हैं, जैसा वह हिफ़ाज़त करने में बड़े हैं, जैसा वह पकड़ने में बड़े हैं, जैसा वह ज़लील करने में बड़े हैं, जैसा वह बड़े हैं, उनकी बड़ाई को तुम ख़ाली अल्लाहु अक्बर कहकर नहीं जानोगे। तुम उनकी बड़ाई का क़ुरआन सुनो बैठकर, उनकी बड़ाई की हदीसें सुनो बैठकर।

दो की बड़ाई दिल में जमा नहीं हो सकती। ख़ुदावन्द क़ुद्दूस अपनी बड़ाई को उस वक़्त तक नहीं मानेंगे, जब तक कि उनके दिल से बड़ाई निकल कर बाहर नहीं आ जाती। ख़ुदा की बड़ाई को बोल-बोल कर, सुन-सुन कर अपने दिलों में उतार लो और मुल्क व माल और ज़मीन व आसमान और राकेट और एटमियात और दुनिया भर के कारख़ाने और मिलें और दुनिया भर का सोना और चांदी और दुनिया भर का लोहा और पीतल, इन सबकी बड़ाई दिल से निकाल दो मरने से पहले-पहले, और मरने से पहले-पहले दिल में ख़ुदा की बड़ाई उतार लो। अगर ग़ैरों की बड़ाई को लेकर मरे तो रूसियाह उठोगे और वह पिटाई होगी कि अल अमान वल हफ़ीज़। इनकी बड़ाई को दिलों में यों जमाओ कि जितना कुछ आसमान और ज़मीन में है, यह कुछ नहीं है। अल्लाह माबूद है, अल्लाह मक़्सूद है, अल्लाह मत्लूब है, अल्लाह इज़्ज़त देने वाले हैं, अल्लाह ग़ैरों के बग़ैर जो जी में आए अपनी क़ुदरत से कर दें और ग़ैरों से ख़ुदा के बग़ैर कुछ नहीं होगा। ग़ैरों से न होने को दिल में उतार लो। ज़मीन से आसमान, मग़्रिब से मश्रिक़ तक, अपनी मेहनत का यक़ीन निकाल कर कि हमारी मेहनत से कुछ नहीं होगा ख़ुदा के बग़ैर। ख़ुदा से तुम्हारी मेहनत के बग़ैर सब कुछ होता है। दुनिया की चीज़ों से कुछ नहीं होता ख़ुदा के बग़ैर और ख़ुदा से दुनिया की चीज़ों के बग़ैर सब कुछ होता है। अल्लाह को किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं। वह जो कुछ करता है, अपनी क़ुदरत के साथ करता है और जितनी उसमें शक्लें हमने बना रखी हैं, वे सारी शक्लें ख़ुदा की मुहताज हैं, इस यक़ीन को दिल में बिठा लो।

अब इन दो एतबारों से सारे इंसान अंधे हैं, जितने इंसान दुनिया में हैं, चाहे वे हाकिम हों या महकूम, मालदार हों या ग़रीब हों, मौलाना साहब हों, जो भी हों, इन दो बातों के एतबार से अंधे हैं। एक उन्हें ख़ुदा की ज़ात, उनकी बड़ाई अपने आप नज़र नहीं आती। एक उन्हें ग़ैर से न होना और ख़ुदा से होना दिखाई नहीं देता। इंसान ख़ुदा की ज़ात के एतबार से अंधा है, बड़ाई के एतबार से भी अंधा और ख़ुदा की ज़ात के होने को देखने के एतबार से भी अंधा। वह बीना है, ज़मीनों को देखने के एतबार से, पहाड़ों के एतबार से, लोहे-पीतल के एतबार से, यह बीना है मख़्लूक़ात के एतबार से, यह नाबीना है ख़ालिक़ के एतबार से, ज़ाते बारी तआला के एतबार से नाबीना है यह।

अब अगर अल्लाह की बड़ाई दिल में उतारनी है और अल्लाह से अपनी ज़िंदगियों को बनवाना है, तो हमें जब अल्लाह दिखाई नहीं देते तो अल्लाह के एतबार से हम इस्तेमाल ख़ुद कैसे हो सकते हैं? जो चीज़ दिखाई देती है, उसके एतबार से हम इस्तेमाल ख़ुद हो जाएंगे, जो दिखाई देगा, वह अपने लिए इस्तेमाल का तरीक़ा ख़ुद तज्वीज़ करेगा, जो चीज़ दिखाई देगी, वह इस्तेमाल का तरीक़ा ख़ुद तज्वीज़ कर लेगी। ख़ुद माल दिखाई दे रहा है, इस्तेमाल का तरीक़ा आप ख़ुद तज्वीज़ कर लेंगे, लेकिन वह ख़ुदा सबसे बड़ा है और उसके अलावा सब छोटे हैं, उसी से सब कुछ होता है, उसके ग़ैर से कुछ होता ही नहीं, अब वह आपको दिखाई नहीं दे रहा, तो साहब बताइए! आप इसके एतबार से उसकी अज़्मत के एतबार से और उससे फ़ायदा हासिल करने के एतबार से आप इस्तेमाल का क्या तरीक़ा इस्तेमाल करते हैं?

अब क्या करना होगा? अंधे के चलने की तर्कीब यह है कि बीना की आवाज़ पर हरकत करने वाला बन जाए। यह है अंधे की कामयाबी का राज़। अगर अंधा अंधेपन से चल दे तो या मोटर से टक्कर खाकर मरेगा या खम्भे से सर फूटेगा या सांप को हाथ लगा देगा, वह काटेगा या भूखा मरेगा या प्यासा मरेगा या तिरयाक़ की जगह ज़हर खाएगा, मर जाएगा, टटोलता फिरेगा, चीज़ें खाने को हैं, लेकिन इधर-उधर से गुज़र जाएगा। हाथ लगाकर तो नाबीना अपनी ज़िंदगी के मसलों का हल खोज लेगा, लेकिन अपनी हालतों

का हल नाबीना अपने अंधेपन से नहीं कर सकता, उसे बीना की ज़रूरत है तो आवाज़ लगाई जा रही है कि सारी दुनिया के इंसान नाबीना हैं और वह जो बीना हैं, वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। ख़ुदा ने उन्हें आसमानों पर बुलाया, ख़ुदा ने अपनी ज़ात को उन्हें दिखाया। ख़ुदा ने अपनी जन्नत-दोज़ख़ उन्हें दिखलाई। ख़ुदा ने अच्छे-बुरे अमलों का नफ़ा-नुक़्सान उन्हें दिखलाया। ख़ुदा ने सूद पर ज़िंदगी किस तरह बिगड़ती है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व सल्लम को अपनी आंख से दिखाया. . . बिल्ली को भूखा मारने से और उसे बांधकर रखने से ज़िंदगी किस तरह बिगड़ती है, आंख से दिखाया, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बीना बनाया है। ख़ुदा की ज़ात को देखा, ख़ुदा की जन्नत-दोज़ख़ को देखा, ख़ुदा के बनाए हुए अच्छे-बुरे नक़्शों को अपनी आंख से देखा, इन वज्हों के एतबार से सारे इंसान अंधे हैं। अब यह आवाज़ लगाई जा रही है कि अगर ज़िंदगी बनानी है कामयाब और अन्दर बुनियादें कामयाबी की बनानी हैं, तो दो-तीन चीज़ें मेहनत करके बनाओ। ख़ुदा की बड़ाई को दिल में उतार लो। ख़ुदा से होना, ग़ैर से न होना दिल में उतार लो। ग़ैर का छोटा होना और ख़ुदा का बड़ा होना दिल में उतार लो और सबका अंधा होना और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बीना होना दिल में उतार लो और उसके बाद सब मश्क़ करो इस बात की कि बीना की आवाज़ पर इस्तेमाल होना आ जावे। पहले इस्तेमाल का तरीक़ा सीखो, तिजारत बाद में कीजियो। पहले बीना की आवाज़ पर तिजारत में इस्तेमाल होना सीखो। घर की ज़िंदगी बाद में बनाइयो, पहले बीना की आवाज़ पर घर की ज़िंदगी में इस्तेमाल होना सीखो, पैसे ख़र्च बाद में कीजियो, मकान बाद में बनाइयो, सारे काम बाद में कीजियो, पहले तो बीना की आवाज़ पर हरकत करना सीखो, उनकी आवाज़ पर खड़ा होना, उनकी आवाज़ पर बैठना, उनकी आवाज़ पर बोलना, उनकी आवाज़ पर सुनना, उनकी आवाज़ पर देखना, जिस तरह वह कहे, उस तरह झुक जाओ, जो बोलने को कहे, बोलो, जहां देखने को कहे देखो, खड़े होने में जहां देखने को कहा, वहां देखो, बैठने में जहां देखने को कहा, वहां देखो, यहां तक कि यह दिल में यक़ीन पैदा कर लो कि मैं तो अंधा हूं, मुझे तो

अपनी कामयाबी का रास्ता दिखाई नहीं देता। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुदा ने बीना बनाया है, वह जिस तरह कह गए, उस तरह उठने-बैठने में, उस तरह चलने-फिरने में, उस तरह देखने-सुनने में, उस तरह लेने-देने में, उस तरह पकड़ने-छोड़ने में मेरी कामयाबी है और यह जो मुल्क व माल में मुझे कामयाबियां दिखाई दे रही हैं, यह मेरा अंधापन है, मुझे ग़लत दिखाई दे रहा है, एक आदमी कमज़ोर निगाह का बाहर से आ रहा है, वह यों कहे, मियां! यह मस्जिद हिल रही है क्या? दूसरे कहें, यह मस्जिद नहीं हिल रही है, आप हिल रहे हैं, क्या भाई! यह एक के दो कैसे नज़र आ रहे हैं? एक मीनार के दो मीनार कैसे हो गए आज? लोग कहें, दूसरा मीनार नहीं बनवाया, आपकी आंख में ख़राबी है, आपमें अंधापन आ गया। अब यह मस्जिद इसलिए बनी कि इसके हिसाब में वक़्त निकाला जाए। ख़ाली अल्लाहु अक्बर चाहे तुम सारी उम्र कहो, अल्लाह की बड़ाई दिल में तब बैठेगी, जब उसका क़ुरआन सुनोगे। सबसे पहला क़ुरआन अल्लाहु अक्बर का आया है, सबसे पहला क़ुरआन अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु का आया है। सबसे पहला क़ुरआन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का आया है, सबसे पहला क़ुरआन इन बातों का आया है। पहले मेहनत कर करके क़ुरआन सुन-सुनकर हदीसें सुन-सुनकर अल्लाह की बड़ाई को जान जाओ।

एक बड़ाई वह है, जिसको जानते हो, सबसे बड़ा बेटा, सबसे बड़ा पत्थर, सबसे बड़ी कोठी, इस क़िस्म के अक्बर बहुत बोले जाएं दुनिया में और अक्बर को देख के बोल रहे हो, देख जान के समझ के बोल रहे हो और एक अक्बर को बग़ैर देखे, बग़ैर जाने, बग़ैर समझे बोल रहे हो, जैसे बहुत बड़ा डॉक्टर जिस तरह कहे, उस तरह कर लो। बहुत बड़ा डॉक्टर, उसने कहा कि देखो, फ़्लानी चीज़ मत खाइयो, फ़्लानी मत खाइयो, फ़्लानी मत खाइयो और यह खाइयो, यह खाइयो, वह मत पीजियो, यह पीजियो अब सब क्योंकि बहुत बड़े डॉक्टर साहब हैं, उन्होंने यह परहेज़ बतलाया है, उसके कहने पर चल रहे हैं और अल्लाह को भी बहुत बड़ा कह रहा है रात दिन। उन्होंने कहा, सूद मत खाइयो, नहीं तो मुसीबत में आ जाओगे, झूठ बोल के मत खाइयो, रिश्वत से मत खाइयो, किसी का दबा के मत खाइयो। वे इसको भी कहते हैं अक्बर

और वह भी कहता है कि यह खालोगे तो नुक़्सान होगा, यह खा लोगे तो फ़ायदा होगा, लेकिन मजाल क्या कि उसके मना किए हुए को छोड़ दें और उसके बतलाए हुए को पकड़ लें। है कोई दुनिया में आज, है कोई मुसलमान ऐसा करने वाला। बहुत बड़ा डॉक्टर जानता है, बहुत बड़ा वज़ीर जानता है, बहुत बड़ा साईंसदां जानता है, बहुत बड़ी बन्दूक़ जानता है। यह हर एक की जिन्स के बहुत बड़े को जानता है, लेकिन ख़ुदा को जो बहुत बड़ा कहता है, उसको बेवक़ूफ़ जानता ही नहीं, इसलिए कि उसने उसकी बड़ाई को दिल में उतारने के लिए कोई मेहनत ही नहीं की। उनकी बड़ाई पर मेहनत की है, उनके पास गया है, उनके पास उठा-बैठा है, उनकी लाइन की किताबें पढ़ी हैं, उनकी लाइन की चीज़ों को मालूम किया है, लेकिन अल्लाह की लाइन की चीज़ों पर कितनी मेहनत की, यक़ीन बनाने में कितने हाथ-पैर मारे, उनकी बड़ाई को दिल में उतारने में, ख़ुदा की मालूमात को मालूम करने में, कितना वक़्त लगाया, कितना उसको ज़िंदगी में बोला, कितना उसकी बड़ाई को समझा, ग़ैरों की तरदीद अपनी ज़िंदगी में कितनी की। नबियों की ज़िंदगी इस तरह गुज़री कि ग़ैरों की बड़ाई की तरदीद करते हैं, उनकी तो ज़िंदगियां गुज़री हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी भी उसी में गुज़र गई, लेकिन यहां इस फूटी ज़ुबान से एक लफ़्ज़ तरदीद में इन चीज़ों के लिए नहीं निकलता कि इनसे कुछ नहीं होता, ख़ुदा सब कुछ होता है। यह कुछ भी नहीं, अल्लाह सब कुछ हैं, तो हमारी ज़ुबानें गूंगी हैं। अल्लाहु अक्बर के एतबार से बोलने से हमारी ज़ुबानें गूंगी हैं। ला इला-ह इल्लल्लाहु के एतबार से बोलने से हमारे कान बहरे हैं। अल्लाहु अक्बर के एतबार से सुनने से, इसलिए अंधे जो हैं, पूरे बन चुके हैं।

यह मस्जिद इसलिए बनी थी, इस मस्जिद की तर्तीब क़ायम करो, यह सारी चीज़ें दिल में उतरेंगी, जान की मेहनत से, इसलिए इस बात की दावत दी गई। यह दावत जो मैं कह रहा हूं, ख़ुदा की बड़ाई की दावत, अल्लाह से होने, ग़ैर से न होने की दावत, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक बात पर होने की दावत कि जो उन्होंने फ़रमाया, अगर उसको तोड़ेंगे, तो नाकामी होगी, अगर उसको करेंगे, तो कामयाबी होगी और उसकी दावत

दी जाएगी कि मुल्क व माल के नक़्शे से कुछ नहीं होगा, यह सब धोखा है और जब मरोगे तो धोखा खुल जाएगा, इससे कुछ होता ही नहीं। एक ज़लज़ला आता है किसी इलाक़े में, धोखा खुल जाता है, सारी चीज़ें टूट के गिर जाती हैं, किसी इलाक़े में सैलाब आता है, धोखा खुल जाता है, सारी चीज़ें टूट के गिर पड़ती हैं। यह तो तुम्हारा धोखा है कि इन चीज़ों के अन्दर कामयाबी है। कामयाबी इसमें नहीं है, कामयाबी इसमें है।

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

'हय-य अलस्सलात, हय-य अलल फ़लाह' ही के तरीक़े पर नमाज़ पढ़ना सीख ले और कामयाबी ले ले, पस इसमें है कामयाबी, किसी कोठी में नहीं, किसी मकान में नहीं, किसी कारख़ाने में नहीं, कान खोल कर सुन ले, बाद में जब आंख खुलेगी तो पछतावेगा।

मरने से पहले-पहले इस बात को दिल में उतार ले कि हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े में इस्तेमाल होने में कामयाबी है और मुल्क व माल के चीथड़ों में कोई कामयाबी नहीं, इसको अपने पे खोल ले। मरने से पहले-पहले तेरे दिल पे खुल जाए, क्योंकि तेरे मरते ही क़ब्र में जब जाएगा, तो पहला सवाल यह होगा कि बता तेरा पालने वाला कौन है? अगर इस पर मेहनत की थी कि दुकान से पलता हूं, अपनी मेहनत से पलता हूं, पैसे से पलता हूं, तो तू क़ब्र में यह नहीं कह सकता कि मेरा रब ख़ुदा है। जो दिल में नहीं तो ज़ुबान पर कैसे आए? चाहे तो करोड़ मर्तबा रोज़ पढ़ लिया कर اللهُ اَكْبَر اللهُ اَكْبَر 'अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर' और दुकान पर यक़ीन जमा है तो यह यक़ीन मोतबर नहीं है, जिसको पालने वाला समझा करता है, उसके ख़िलाफ़ कोई नहीं करता, कोई करता ही नहीं। उसके ख़िलाफ़ होने के मानी यह हैं कि हमने उसको ज़ुबान से कहा, जिसकी हमें मालूमात हासिल नहीं हैं तो पहला सवाल होगा, तेरा रब कौन है? दुकान जाती रहेगी, खेती जाती रहेगी, मुल्क का नक़्शा हाथ से ले लिया जाएगा, तो अगर अल्लाहु अक्बर तेरे दिल में बैठा हुआ नहीं है और यही है कि मेरी मेहनत

से नक़्शे बनते हैं और नक़्शों से मेरी ज़िंदगी बनती है, तो ख़ुदा की क़सम! यह आदमी क़ब्र में यह नहीं कह सकता कि अल्लाह मेरे रब हैं।

दूसरा सवाल होगा, तेरा दीन क्या है? पलने के लिए क्या किया? आख़िर पलने के लिए क्या किया? कोठियां बनवाईं, नक़्शे बनाए, आख़िर क्या किया? पलने के लिए क्या किया? अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर यह सब किया, तो चलो कहेगा कि पलने के लिए इस्लाम पर चला हूं और अगर यहां नक़्शों ही में पलना दिखाई देता रहा तो कोई आदमी क़ब्र में यह नहीं कह सकता कि मेरे पलने का तरीक़ा इस्लाम है। फिर ये पूछेंगे कि उस आदमी को क्या कहता है? जिसने कमाने में यह न कहा कि जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस तरह कमाऊंगा और शादी करने में यह न कहा, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने शादी को बतलाया, उस तरह करूंगा। ज़िंदगी में कहीं सरमायादारों को बोलता, कहीं हाकिमों को बोलता था, कहीं यूरोप को बोलता था, कहीं एशिया को बोलता था, कहीं नसारा को बोलता था, कहीं यहूद को बोलता था, मकान ऐसा बनाएंगे, कपड़े ऐसे बनाएंगे, फ़्लानी चीज़ ऐसे बनाएंगे। हुज़ूर सल्ल० का नाम ज़िंदगी के किसी मरहले में आया ही नहीं, शादी की तो ग़ैरों के नाम पर, ग़ैरों के तरीक़े क्या हैं, मकान बनाया तो ग़ैरों के नाम पर, फ़्लानी जैसी कोठी बनाएंगे, फ़्लानी जैसी मोटर ख़रीदेंगे, कहीं फूटी ज़ुबान से ज़िदंगी के शोबों में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम न आया। वे कहेंगे क्या कहता है इस आदमी को? वह कहेगा, मैं नहीं जानता, किसको पूछते हो? भई, मेरे तो बहुत से हैं, कोई कोठी में मेरा मुक़्तदा है, कोई लिबास में मेरा मुक़्तदा है, कोई ग़िज़ाओं में मेरा मुक़्तदा है, कोई कामयाबी में मेरा मुक़्तदा है। मैं तो हज़ारों के पीछे चला हूं, एक हो तो बताऊं। तुम बताओ, तुम किसे पूछते हो? मैं तो समझा नहीं। एक आवाज़ आएगी, झूठा है कमबख़्त! इसके लिए आग के बिस्तर बिछा दो और दोज़ख़ की खिड़की खोल दो और आग के कपड़े पहना दो। बस यही तीन सवाल हैं, मेरे अज़ीज़ो!

इन तीन चीज़ों के लिए इन तीन पर मेहनत करनी पड़ती है। वे यह हैं, ख़ुदा पालने वाला है, हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर मेहनत करने से ख़ुदा पालता

है, हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा यह ज़ुबान पर चढ़ जाए और ख़ुदा पालने वाला है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करके हाथ उठाएंगे, ख़ुदा पालेगा, बस पहले नमाज़ पर मेहनत कर लो। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर नमाज़ पढ़नी सीख जाओ, उसकी दावत दो, उसके इल्म के हलक़ों में, फ़ज़ाइल में, मुज़ाकरों में, मसाइल के सीखने-सिखाने में, दुआओं में, क़ुरआन में, ज़िक्र में, तिलावत में और नमाज़ों में, यही हमारा घर में मेहनत का मैदान है, यही हमारा बाज़ार का नारा है, यही हमारा कोठियों का नारा है, यही हमारा हाकिमों के पास जाने का नारा है, कामयाबी के लिए नमाज़ है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी नमाज़ बनाओ तो ख़ुदा कामयाबी के दरवाज़े खोलेगा, पांच बातों पर नमाज़ ले आओ, नमाज़ मक़्बूल हो जाएगी, दरवाज़े खुल जाएंगे, कलिमे वाले यक़ीन पर कमाओ, कलिमे-नमाज़ के फ़ज़ाइल वाला शौक़, मसाइल वाले तरीक़े, इख़्लास वाली नीयत हो जाएगी, अल्लाह वाला ध्यान, इन पांच चीज़ों पर नमाज़ आएगी, नमाज़ मक़्बूल हो जाएगी, इन्हीं पांच पर कमाई आएगी, तो कमाई हुज़ूर सल्ल० वाले तरीक़े पर आ जाएगी। कलिमे वाले यक़ीन पर कमाओ। तुम्हारी शक्लों से पैसा नहीं मिलता, ख़ुदा के देने से मिलता है। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर आ जावेगी। कलिमे वाले यक़ीन पर कमाओ, तुम्हारी शक्लों से नहीं मिलता, ख़ुदा के देने से मिलता है, हुज़ूर सल्ल० पर कमाओगे, ख़ुदा तुम्हें बहुत कुछ देगा, दुनिया में बहुत देगा। आख़िरत में फ़ज़ाइल के शौक़ पर, मसाइल के तरीक़ों पर, अल्लाह के ध्यान पर और इख़्लास वाली नीयत पर जब कमाई आएगी इन पर, तो तुम्हारी ये कमाइयां तुम्हें जन्नत में पहुंचाएंगी। घर की ज़िंदगी इन पांच पर आएगी, तो घर की ज़िंदगी तुम्हें जन्नत में पहुंचाएगी। अगर तुम्हारी मुआशरत और आपस के मेल-जोल इन पांच पर आएंगे तो तुम्हें जन्नत में पहुंचाएंगे। ये पांच चीज़ें अपने में पैदा करना और इनके लिए वक़्त निकालना, और इसकी मेहनत का मैदान क़ायम करना, इसकी दावत देना, इसका माहौल बनाना, इसके लिए फिरना-फिराना, इसके लिए मस्जिदों में इकट्ठा करना, और होना बस एक चीज़ है कि जो अपना हिस्सा इस मेहनत में डालेगा, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि ख़ुदा की बड़ाई उसके बोलने में आएगी, सुनने में

आएगी, तालीम के हलक़े चल जाएंगे, कलिमे-नमाज़ के फ़ज़ाइल खुल जाएंगे। कलिमे-नमाज़ की तर्तीब हुज़ूर सल्ल० ने अपने ज़माने में मस्जिद में जो चलाई थी, अगर हम अपनी मस्जिदों में बैठकर इन चीज़ों को चलाने लगेंगे और नमाज़ के बाहर जिस क़दर हमारे शोबे हैं, वे भी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर आएंगे। हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर आ गए तो हुकूमत करके भी जन्नत में जाएंगे। अगर हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर न आए तो महकूमियत में भी दोज़ख़ में जाएंगे। अगर आप हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर चल पड़े तो मालदारी में भी जन्नत में जाएंगे। अगर हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर न चले तो फ़क़ीरी में भी दोज़ख़ में जाएंगे।

असल में कामयाबी की जो गारंटी है, वह तो हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों में है, मस्जिद में माहौल बना लो हुज़ूर सल्ल० के तरीक़ों के सीखने-सिखाने का और उसके अन्दर कामयाबी के यक़ीन बनाने में मस्जिद में माहौल, फिर अपने-अपने शोबों को धीरे-धीरे इस यक़ीन पर लाओ जितना अल्लाह शरहे सद्र नसीब फ़रमाते रहें और जितना नमाज़ और दुआओं के साथ यक़ीन बढ़ता रहे, उतना ही अपने बाहर के शोबों को भी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर लाते रहो। एकदम सारे तरीक़े नहीं बदला करते, हां, अलबत्ता मेहनत एकदम शुरू हो जाया करती है। आदमी मेहनत एकदम शुरू कर देता है, खेती की मेहनत एकदम शुरू कर देता है, लेकिन खेती होते-होते होती है, कोठी बनते-बनते बनती है, बस मेहनत शुरू कर दी जाए। इसीलिए तब्लीग़ में थोड़ी-सी तर्बियत अपनी मेहनत की करनी है, कलिमे-नमाज़ का मस्जिद में माहौल बनाने की मेहनत, एक बार हिम्मत करके तीन चिल्ले दे दो, साल का चिल्ला देते रहो, महीने में तीन दिन के लिए निकलते रहो, हफ़्ते की दो गश्तें करते रहो। अपनी मस्जिद में तालीम, तस्बीह और नफ़्लों का और ईमान की दावत का एक माहौल बना लो। बस अगर इतना कर लिया सारे मुसलमानों ने मिलकर तो हुज़ूर सल्ल० के ज़माने का दीन ज़िंदा हो जाएगा।

और एक बात ख़ूब समझ लो कि जब एक बार आंख बन्द हो गई तो आंख बन्द नहीं होगी, ख़्वाब वाली बन्द हो गई, जागने वाली खुल गई। यह जो तुम्हारी नज़रों के सामने है, इसका कोई एतबार नहीं। जब आंख खुलगी,

फिर क्या होगा। तुम्हारे सामने यह है असल, आंख खुल जाएगी उस वक़्त पछतावेगा। अगर अपनी ज़िंदगी के शोबों में हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े चल रहे हैं, तो चलो मुबारक हो और अगर हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े ज़िंदगी के शोबों में टूटे हुए हैं, तो कमाइयां हराम हैं, जब उस पर पकड़ेंगे, तो फिर रोना पड़ेगा उस वक़्त पता चलेगा।

और भाई! आओ अब घर की ज़िंदगी की तरफ़, अगर घर की ज़िंदगी में हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े टूटे हुए हैं, तो अगर एक भी हराम का लुक़्मा खिलाया, बीवी को या औलाद को तो उस पर पकड़ेंगे कि यह क्यों खिलाया और यह जो सुवर की तरह है, सुवर पका-पका के खिलाएं अपने बच्चों को, अपने बीवी-बच्चों को सुवर पका-पका के खिला रहे हो और जो सूद है, वह सुवर से ज़्यादा सख़्त है। उलेमा किराम ने लिखा है कि जो भी शरीअत के ख़िलाफ़ कमाना होगा, वह सूद के हुक्म में है और सूद सुवर से ज़्यादा सख़्त है तो अगर आपकी घर वाली ज़िंदगी सूद वाले पैसे पर चल रही है और आपकी कमाई हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से हटकर चल रही है, तो मियां! फिर एक मिनट की गुंजाइश नहीं ताख़ीर की कि उससे तौबा की जाए। एक मिनट की गुंजाइश नहीं ताख़ीर की, फिर तो बाहर निकलो, यक़ीनों को ठीक करो और अपनी कमाई को अपने घर को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर लाना सीखो।

अपनी कमाई को हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर कैसे लावें। यहूद के तरीक़ों को तो हम ले आए, नसारा के तरीक़ों को तो हम ले आए, मुश्रिकों के तरीक़ों को तो हम ले आए, अपनी जान व माल के ख़र्च को उनके तरीक़ों पर तो ले आए, जिन्होंने हमें ज़िब्ह किया, हमारे टुकड़े किए और चौदह सौ वर्ष तक हमें पीसा है और अब भी पीस रहे हैं। उनके तरीक़ों पर तो हम अपना सब कुछ ले आए हैं। बच्चे उन्हीं के अच्छे लगते हैं। हुज़ूर सल्ल० के और आपके सहाबा के बच्चे अच्छे नहीं लगते। लिबास नसारा का अच्छा लगता है, हुज़ूर सल्ल० का और उनके सहाबा रज़ि० का लिबास अच्छा नहीं लगता। मकान नसारा के अच्छे लगते हैं, मकान हुज़ूर सल्ल० के और सहाबा रज़ि० के अच्छे नहीं लगते, तो ज़िंदगियों को यहूद और नसारा तक पहुंचा दिया हमने।

अब इस तश्कील को सीखो कि किस तरह यहूद और नसारा के तरीक़ों से हटकर हुज़ूर सल्ल० और उनके सहाबा रज़ि० के तरीक़ों पर आ जावें। अब तो हालत यह है कि बीवी, बच्चे, मकान, कारोबार, उसके अन्दर, उसके सामने यहूद हैं, नसारा हैं, ये उनको देख-देख के चल रहे हैं। एक बार भी आंख उठा कर नहीं देखते कि हुज़ूर सल्ल० का मकान कैसा था। जब ये कपड़ा बनाते हैं, एक दिन यह तसव्वुर में नहीं आता कि अपने बच्चों के कपड़े ऐसे बना लो, जैसे हुज़ूर सल्ल० के थे। ये शादी करते हैं, कभी तसव्वुर में नहीं आता। हुज़ूर सल्ल० ने दस ब्याह किए, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने किया, हम भी कर लें, तो आप तो हुज़ूर सल्ल० को इमाम बनाएंगे ही नहीं, आज इमाम बना रखा है यहूद को, उस अंधे यहूद को जिसने हमें ज़िब्ह किया, चौदह सौ वर्ष तक वह इमाम बन चुके हैं ज़िंदगी में, थोड़े से नमाज़ी! कुछ पढ़ रहे, कुछ नहीं पढ़ रहे, तो नमाज़ियों ने भी मुक़्तदा बनाया यहूद को और इन बे-नमाज़ियों ने भी अपना मुक़्तदा और इमाम बनाया नसारा को।

इब्राहीमी ज़ौक़ नहीं है, आज़री ज़ौक़ है, मूसवी ज़ौक़ नहीं है, फ़िरऔनी ज़ौक़ है, मुहम्मदी ज़ौक़ नहीं है, क़ारूनी ज़ौक़ है, तो भई! अगर यही अच्छा लगता है तो मुबारक है। चलिए आप मरने के बाद देखिएगा, क्या होगा। अगर यही अच्छा लगता है और चलाना उसे ही है जिसे अब चला रहे हैं, यह ठीक है। तो तीन चिल्ले क्या, हम एक दिन भी नहीं चाहते, किसी से एक दिन भी नहीं और मियां! अगर उससे मुड़ना चाहिए हमें, हम बड़े ग़लत फंस गए और ज़िंदगी में हमने अपने हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ियां मारी हैं। यह सब हमने ख़ुद किया है और दुनिया के अन्दर जो हम मुसीबतों का शिकार अपने हाथों से हुए हैं, अब हम कैसे ज़िंदगी के रुख़ को फेरें तो सबसे पहले अपने में मुजाहदे की आदत डालिए, पहले इल्म सीखिए, दावत देना सीखिए, तालीम के हलक़ों में बैठना सीखिए तो कम से कम मस्जिद वाली ज़िंदगी की मश्क़ कीजिए।

फिर आओ और उसे मुहल्ले में चलाओ, ख़ानदान में चलाओ, रिश्तेदारों में चलाओ। नीयत में रखो। सबसे मुंह मोड़ना है इनको सीखते-सीखते, फिर

किसी के जी को लग गई, तो ख़ानदान बन गया। ख़ानदान बन जाएगा सारा अगर किसी एक के भी जी को लग गई।

एक एक नक़्शा बदतर है आज, औरतें कहां तक पहुंच गईं, औरतें यहां तक पहुंच गईं कि कुत्तों से ज़िना कराएंगी, यूरोप की ईसाई औरतें कुत्तों से ज़िना कराती हैं। अगर यूरोप ही इमाम बना रहा, तो आदमी अपनी माओं से ज़िना करेगा, अपनी बेटियों से ज़िना करेगा, ये ज़िना के इमाम हैं। वहां तक पहुंचोगे, जहां ये पहुंचे हैं। उफ़-उफ़! ये ख़ून की नदियां बहाने के इमाम हैं, तुम भी वहीं तक पहुंचोगे, लुटेरे बनोगे, शरीफ़ इंसान नहीं बन सकते। शरीफ़ के पीछे चलोगे, शरीफ़ बनोगे और कमीनों के पीछे चलोगे, तो कमीने बनोगे। शरीफ़ों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, वे जिनके साथ शराफ़तें जमा हैं, सारी शराफ़तें, सारे कमालात, सारी ख़ूबियां उनमें जमा हैं, उनके पीछे चलो। इसके लिए चाहिए वक़्त, ज़ौक़ की तब्दीली के लिए चाहिए वक़्त और जितना उसके लिए मेहनत करोगे, ज़ौक़ बदलेगा। हम कमाते रहें, कमाते रहें, एकदम हुज़ूर सल्ल० का ज़ौक़ आ जाए, यह नामुम्किन है। हम मकान बनाते हैं, कोठियां बनाते हैं, बिल्डिंगें बनाते हैं, ब्याह-शादियां करते हैं, शानदार चीज़ें ख़रीदते हैं और जो पैसा हाथ में आवे, वह هَلْ مِنْ مَزِيْد *'हल मिन मज़ीद'*। वह सारा इन्हीं में लगाते रहें और उसके लिए न माल लगे, न जान, तो ख़ुदा की क़सम! यहूद और नसारा की तरफ़ ज़्यादा क़रीब हो जाओगे और हुज़ूर सल्ल० से दूर हो जाओगे और ख़ून चूसने वालों के और क़रीब हो जाओगे। जिसने (यानी हुज़ूर सल्ल० ने) हमारी हिफ़ाज़त के लिए ख़ून दिया था, उससे दूर हो जाओगे और जो अपनी हिफ़ाज़त के लिए हमारा ख़ून करता है, उसके और क़रीब हो जाओगे, तो गोया ख़ून देने वाले से दूर हुए और ख़ून लेने वाले से क़रीब हुए, हालांकि हुज़ूर सल्ल० से क़रीब होने में हमारा फ़ायदा है और हुज़ूर सल्ल० से दूर होने में हमारा नुक़्सान है, इसलिए कहते हैं कि इस माहौल को बदलो। यह माहौल निहायत ज़हरीला है, इसकी तो हर चीज़ ग़लत। इसकी एक चीज़ भी सही हो तो कहें कि कुछ सही है। मुझे बता दो कि उसकी कौन-सी चीज़ सही है।

अब एक बात हमारी मान लो। सौ, डेढ़ सौ, दो सौ रुपए साथ ले के हमारे साथ लाहौर चलो तीन दिन, तो सुनते रहो, फिर जितना वक़्त ख़ुदा तुम्हारे दिल में डाल दे, उतना दे दीजियो, पैसे ले के तीन दिन के लिए चलो और यह नीयत करके चलो कि अल्लाह मेरे जी में डाल दे और यों दुआ करो कि अल्लाह! तू इसको मेरे जी में डाल दे अगर जी में न आवे तो वापस चले आइयो और अगर अल्लाह जी में डाल दे तो जितना वक़्त अल्लाह जी में डाल दे, उतना दे आइयो।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन○

अपने तरीक़ों को नबियों के तरीक़ों से बदलो

तारीख़ 18 अप्रैल सन् 1964 ई०, मुताबिक़ 18 ज़ुलहिज्जा सन् 1384 हि० को बाब इब्राहीम हरम शरीफ़ मक्का मुकर्रमा के इज्तिमाअ में, वक़्त अरबी 2 बजे दिन हिन्दुस्तानी टाइम 10 बजे में की गई तक़रीर

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ط

वल्लज़ी-न जाहदू फ़ीना ल-नह्दि यन्नहुम सुबुलना व
इन्नल्ला-ह ल-मअल मुह्सिनीन०

हम्द व सना के बाद,
बिरादराने इस्लाम!

सारी दुनिया के हालात पर नज़र डालें तो हालात की ख़राबी के साए नज़र आते हैं। हाकिम व मह्कूम के हालात ख़राब, मालिक व मज़दूर के हालात ख़राब, ज़मींदार व किसान के हालात ख़राब, अमीर और ग़रीब के हालात ख़राब नज़र आते हैं। दुनिया वालों ने मेहनत के तरीक़े बदल लिए हैं। मुल्क व माल वालों ने तरीक़े बदल लिए, सामान व जायदाद वालों ने तरीक़े बदल लिए है, ख़ेमों और मिल वालों ने तरीक़े बदल लिए, चूंकि ये तरीक़े उनके मनगढ़त तरीक़े हैं, ख़ुदा के बताए हुए, अंबिया के अपनाए हुए तरीक़े नहीं हैं, इसलिए नतीजे में जगह-जगह क़दम-क़दम पर ख़राबी ही ख़राबी नज़र आती है। अल्लाह पाक के तरीक़े और हैं यानी नबियों के तरीक़े और हैं।

अल्लाह पाक के हुक्मों में नबी एतराज़ नहीं करते, बल्कि अल्लाह का हुक्म होता है और नबी का अमल। अल्लाह और नबी में इख़्तिलाफ़ नहीं होता, मुल्क व माल वालों का झगड़ा होता है। जिन लोगों ने नबियों की

मेहनत का इंकार किया, अल्लाह ने उनको बिगाड़ दिया। अल्लाह तो नबियों को लोगों के हालात दुरुस्त करने के लिए भेजता है, लोगों ने नबियों के आमाल को अपना लिया, फ़लाह पा गए। अगर नबियों के आमाल से अपने आमाल टकरा दिए, चूर-चूर हो गए। चूंकि नबियों वाला नक़्शा, नबियों वाला अमल ज़िंदगियों में मौजूद नहीं रहा, इसीलिए ज़िंदगियां बिगड़ रही हैं। अगर दीन पर मेहनत नहीं होगी, दिलों की दुरुस्ती नहीं होगी, दिल दुरुस्त नहीं, तो कोई चीज़ भी दुरुस्त नहीं होगी। अगर नबियों वाले तरीक़े पर मेहनत होगी तो हालात ठीक होंगे।

हालात

हालात की बुनियाद, मुल्क व माल, ज़र व ज़मीन, राकेट वग़ैरह पर नहीं है, बल्कि हालात की बुनियाद आमाल हैं। अंबिया, सुलहा और उलेमा के आमाल हालात संवारने वाले बनेंगे। हालात मुल्क व माल, सोना-चांदी की बदौलत ठीक नहीं होंगे। जो यह समझता है धोखे में है, हक़ीक़त यह नहीं है। अल्लाह तआला ने हालात को आमाल के ज़रिए जोड़ा है, हालात को चीज़ों के ज़रिए नहीं जोड़ा, बल्कि आमाल के साथ जोड़ा है। जैसे अमल करेगा, हालात मुरत्तब होंगे।

यक़ीन

अगर यक़ीन क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ है, आमाल नबियों वाले होंगे। हालात ठीक होंगे, हालात का ताल्लुक़ आमाल से है। अगर यक़ीनों को ठीक करना है तो अंबिया के तरीक़ों पर चलें, ग़लत यक़ीन निकाल कर सही यक़ीन अपनाएं।

मेहनत

ग़लत यक़ीन को निकालने और सही यक़ीन अपनाने के लिए मेहनत की ज़रूरत है। अपनी-अपनी ताक़त भर मेहनत करें। अंबिया किराम ने सबसे ज़्यादा मेहनत की। अगर इन जैसी मेहनत होगी, यक़ीन दुरुस्त हो जाएगा। अगर तेरा यक़ीन, साज़ व सामान, फ़ौज व हथियार, जहाज़ व सालार से हटकर अल्लाह की ज़ात पर आ जाए, तो कामयाबी है। अल्लाह अपनी

क़ुदरत से सब कुछ करते हैं, अपनी क़ुदरत से ख़ौफ़ को अम्न से बदल देंगे। ख़ुदा की क़ुदरत पर यक़ीन आ जाए, अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन आ जाए, 'आमन्तु बिल्लाह' को अपना लिया तो अल्लाह का हो गया, तो वह तेरा हो गया, तो तूने सब कुछ पा लिया।

अल्लाह सामान के मुहताज नहीं, वह जो कुछ करते हैं, अपनी क़ुदरत से करते हैं, वह इरादा करते हैं और हो जाता है। वह इंसान को बग़ैर इंसान के पैदा कर देते हैं। ज़मीन के बग़ैर ग़ल्ला उगाया। हज़रत सुलैमान अलैहि० के लिए तमाम हवाओं, चरिंद व परिंद को ताबे कर दिया। अल्लाह तआला जो चाहते हैं, करते हैं। उनके अह्काम में, उनके नाम में, उनकी ज़ात में कोई दूसरा शरीक नहीं। हर चीज़ उसी की क़ुदरत के क़ब्ज़े में है।

हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने इस काबे को तामीर करके दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! सारी दुनिया के लोग तेरे इस घर की ज़ियारत को आया करें। दुआ क़ुबूल हुई। सारी दुनिया के लोग अल्लाह के इस घर की ज़ियारत और हज के लिए आते हैं। इस घर से ख़ुदा की क़ुदरत की निशानियां ज़्यादा नज़र आती हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने हज़रत हाजरा और हज़रत इस्माईल अलैहि० को ऐसी जगह छोड़ा था, जहां ज़िंदगी की कोई रमक़ न थी, न दरख़्त, न पानी, न खेती, न मकान, न साया, न इंसान, न चरिंद, न परिंद, ग़रज़ यह कि हर वक़्त मौत की-सी ख़ामोशी थी। इंसानी अक़्ल इस अमल पर आज तक दंग है कि यह अनोखी बात हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने कैसे क़ुबूल कर ली? वह पैग़म्बर थे, वह ख़ुदा के हुक्मों को अपनी अक़्ल की कसौटी पर न परखते थे। अल्लाह पाक ने हुक्म दिया, उन्होंने तामील में सर झुका दिया, बेटे को अल्लाह का हुक्म सुनाया, उसने गरदन झुका दी। यह उन मुक़द्दस हस्तियों के इनाम का बदला है कि यह शहर, यह जंगल में मंगल, यह ज़मज़म, यह ज़र व जवाहर, ये पाकबाज़ लोग यहां नज़र आते हैं। ऐ लोगो! अगर तुम अल्लाह के इनाम हासिल करना चाहते हो तो अल्लाह के हुक्मों के सामने ऐसी झुकने की आदत पैदा करो, जैसी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहि० में थी।

इस साल पाकिस्तान से 26000 हाजी क़ुरआ के ज़रिए आए और 15000 पासपोर्ट के ज़रिए आए, कौन ले आया? क़ादिरे मुतलक़ ले आया, क़ुदरत

वाले हैं, हर काम कर सकते हैं, बग़ैर नक़्शों के कर सकते हैं। ऐ यहां आने वाले! तुझे तेरा रुपया यहां नहीं लाया, बल्कि तेरा अल्लाह लाया है, तू अपने यक़ीन को दुरुस्त कर। अगर तू ख़ुद यहां आया, या अपने रुपए के सहारे से यहां आया है, तो वह आदमी तुझसे ज़्यादा बेहतर है, जिसको अपने रुपए पर ज़रा भी भरोसा न था, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह पर भरोसा था। उसका यक़ीन तेरे यक़ीन से बेहतर है, उसका ईमान तेरे ईमान से बेहतर है, अल्लाह के बग़ैर कुछ भी नहीं हो सकता। ज़िंदगी-मौत उसी के हाथ में है। तेरा दिल कहता है, काम कैसे चलेगा, पैसे नहीं होंगे तो काम कैसे चलेगा, तेरे हाथ में पैदाइश के वक़्त क्या था, दूध कैसे मिला। हज़रत इस्माईल अलैहि० और उनकी मां को सिर्फ़ पानी से पालने वाला कौन था? तू अपने दिल व ज़ुबान में यक़ीन पैदा कर सारे यक़ीनों की जड़ अल्लाह पाक की ज़ात पर यक़ीन क़ायम करना है, फिर आमाल का सिलसिला उसी बुनियाद पर क़ायम करना।

आमाल

इस तरह यक़ीन की जड़ लग जाने पर इंसान के अन्दर आमाल आ जाते हैं और जैसे बारिश होने से ज़मीन में नबातात उगती है, उसी तरह यक़ीन के साथ अमल। अगर अमल दुरुस्त होंगे, तो हालात दुरुस्त हो जाएंगे।

बैतुल्लाह शरीफ़

बाज़ारी मुज़ाहरे, ऐश के सामान, दुनिया की चीज़ें, ज़ाहिरी नक़्शे, मक्का में यूरोप के सामान हैं। लोग मक्का में यूरोप के सामान देखने नहीं आते, बल्कि मक्का के यक़ीन को अल्लाह पर यक़ीन के नज़ारे को देखने आते हैं। आज के मक्का को देखेगा, तो यक़ीन नहीं बनेगा। जो नबी वाला मक्का देखेगा, नबी वाला नक़्शा लेकर जाएगा।

अल्लाह ने पानी बनाया, फिर मक्का से ज़मीन फैलाई, पहाड़ खड़े किए, पहाड़ों और ज़मीनों में बड़ी दौलतें छिपा दीं। जब तक वह चाहेंगे, ज़मीन व आसमान का निज़ाम चलाएंगे। जब चाहेंगे, ज़मीनों और आसमानों को लपेट देंगे और इस निज़ाम को तोड़-फोड़ देंगे।

बैतुल्लाह शरीफ़ से साबित होता है, औरत से मर्द से इंसान नहीं बनता, क़ुदरत से इंसान बनता है, क़ुदरत से मकान, आसमान, शक्लों से शक्लें, चीज़ों से चीज़ें, आटा ख़ुद नहीं बनता, पीसने वाला पीसता है, गूंधने वाला गूंधता है, फिर रोटी पकती है। अल्लाह ने अपनी ज़ात के सिवा सबको बनाया है। ऐ इंसान! तू बना हुआ है, तू बनाने वाला नहीं है। ज़मीन व आसमान, हैवान, इंसान सब मख़्लूक़ हैं। एक अल्लाह सबका ख़ालिक़ है, मनी से, ख़ून से लोथड़ा, शक्ल इंसान वही बनाएंगे। यक़ीन यह हो जावे कि ख़ुदा के बनाए हुए सब कुछ बनता है और किसी से नहीं बनता। अल्लाह अपनी क़ुदरत से पालते हैं, चीज़ों से नहीं पालते। हज़रत इस्माईल अलैहि० को कैसे पाला। नमरूद, फ़िरऔन चीज़ों वाले थे, कैसे ख़त्म हो गए। अल्लाह तआला की क़ुदरत से नक़्शे बनते हैं। अल्लाह तआला की क़ुदरत से नक़्शे बिगड़ते हैं।

इसी ख़ाना काबा को मिटाने के लिए हाथियों का एक लश्कर आया जैसे इस ज़माने में अमरीका के राकेटों का लश्कर, पहाड़ों में लश्कर फैल गया। कोई ज़ाहिरी शक्ल नहीं कि ख़ुदा का घर बच जाए, मगर बचाने वाले ने बचा लिया। कैसे बचाया, एक फ़रिश्ते ने सफ़ेद हाथी का कान पकड़ा, हाथी बैठ गया, लश्कर रुक गया, अबाबील आए, हर एक के पास तीन-तीन कंकड़ियां थीं, हाथियों पर कंकड़ियां गिराईं। वह सब लश्कर नेस्तनाबूद हो गया। इसी तरह रूसी, अमरीकी ताक़त को अल्लाह जब चाहेंगे, ख़त्म कर देंगे।

यह बैतुल्लाह शरीफ़ सत्तर नबियों की ज़िंदगी का मर्कज़ है। इसका संगे बुनियाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने रखवाया, हज़रत इब्राहीम अलैहि० की दुआ यह थी कि एक उम्मत ऐसी उठे कि सारी दुनिया में नमाज़ की इबादत खड़ी हो जावे, सारी दुनिया के लिए हमदर्द और मुहब्बत वाली बन जाए, सारी उम्मत पर मेहनत करने वाले बन जाएं। यह हज़रत इब्राहीम अलैहि० की पहली दुआ थी। दूसरी दुआ मेरी औलाद से ऐसी उम्मत हो जो दीन पर मेहनत करे, उनको बग़ैर कमाए दुनिया के माल व ज़र दे। मक्का में जमाअतें आएंगी, दुनिया भर के लोगों के दिलों में मक्का की मुहब्बत डाल दे, इसी बैतुल्लाह शरीफ़ में ज़िद आ गई, बुतों की पूजा हुई। अब घड़ियों और कपड़ों की ख़रीद व फरोख़्त, आप अपनी स्कीमें बनाएं, अल्लाह पाक अपनी

स्कीम बनाता है। हज़रत इब्राहीम अलैहि० की स्कीम उभरने का जब वक़्त आया, हज़रत रसूले मक़्बूल सल्ल० तशरीफ़ लाए, स्कीम चलाने वाला आ गया। यतीम, अनपढ़, माल के बग़ैर उसी मक्के से चले, सहाबा रज़ि० स्कीम के चलाने वाले थे, स्कीम चलाई, मुल्क व माल व ज़र के बग़ैर चलाई। यतीमी की सूरत, ग़रीबी की सूरत, बाहर कुछ नहीं था, अन्दर में सब कुछ था, कुफ़्फ़ार धोखे में आ गए, मुहम्मद सल्ल० यतीम है, भूखा है, कुछ भी नहीं, बाप भी नहीं, सब छोड़ गईं, जब कोई और बच्चा न मिला तो हलीमा ने ले लिया, वह ऊंटनी जो सबसे पीछे आई थी, अब सबसे आगे-आगे थी, रहबर की रहबर ऊंटनी, अल्लाह की स्कीम ताक़त से नहीं, यक़ीन से चलती है, उसको चलाने वाले माल व मुल्क वाले नहीं, बल्कि मुहकम यक़ीन के हामिल होते हैं। यह स्कीम मुल्क व माल से नहीं चलती, नक़्शों और शक्लों से नहीं चलती है।

आपने देखा मुल्क व माल के बग़ैर इस्लाम का नक़्शा उसी मक्का में चलाया, सारी दुनिया में चलाया। रोकने वालों के रोके न रुका। रोकने वालों ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, मगर उनके यक़ीन के तूफ़ान पर काह की तरह बह गए। मुहम्मद सल्ल० और उनके सहाबा रज़ि० के पास खाने को कुछ न था, कपड़ा न था, मकान न था, यक़ीन दुरुस्त था, उठे और तमाम दुनिया के लश्करों की मौजूदगी में सब पर छा गए। अब भी उसी बुनियाद पर जो भी उठेगा, तो अल्लाह अपनी क़ुदरत से काम चलाएंगे। वही कारसाज़, वही मुसब्बबुल अस्बाब है, अल्लाह के ख़ज़ानों के लेने का घर बैतुल्लाह शरीफ़ है। रसूले अक्रम सल्ल० ने स्कीम चलाई, चाहे तुम लाखों मील दूर पड़े हो, बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ रुख़ कर लोगे तो हज़रत इब्राहीम अलैहि० वाली बरकतों का अज्र व सवाब और मदद मिलेगी। अल्लाह वाले यक़ीन पर उठो, सिर्फ़ यक़ीन के रुख़ को मोड़ने की बात है। अगर तमाम सिम्तें छोड़कर तुमने रुख़ बैतुल्लाह की तरफ़ कर लिया और इस बात पर भी उसी तरह जमे रहे, जिस तरह सहाबा रज़ि० का यक़ीन था—

आज भी गर हो बराहीम का ईमां पैदा।
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा।।

नबी सल्ल० की सुन्नत व तरीक़ा

बैतुल्लाह की तरफ़ कैसे बुलाया गया है, ज़माने का जो नक़्शा है, वह उस्वा नहीं है, बल्कि अपने-अपने नक़्शों को इब्राहीम अलैहि० के नक़्शों के मुताबिक़ बना लो। इर्शादे बारी है, इब्राहीम की इताअत करो।

अल्लाह तबारक व तआला ने शाम जैसे सरसब्ज़ व शादाब मुल्क से हज़रत इब्राहीम अलैहि० को छोड़ने का हुक्म दिया, सेहरा में पहुंचा, वहीं बीवी-बच्चे को छोड़ जाने का हुक्म दिया। इकलौते बेटे और चहेती बीवी का और कोई बाप होता तो इस हुक्म से कांप उठता और भड़क कर बग़ावत कर जाता। लेकिन ख़लीलुल्लाह जैसी हस्ती पर गूना ख़ुशी हुई। क्यों न हो, पैग़म्बर के लिए अपने आक़ा व मौला की ख़ुशी से ज़्यादा कोई चीज़ महबूब नहीं होती। खलीलुल्लाह का आग में कूदना, बीवी-बच्चों को लक़ व दक़ सेहरा में ऐसी जगह छोड़ना उनको आग में धकेलने से कम न था, मगर यह कुछ अल्लाह जल्ल शानुहू की ख़ुश्नूदी के लिए। क़ादिरे मुतलक़ ने उन्हें झुलसती आग से कैसे बचा लिया, सिर्फ़ पानी पर पाल के दिखा दिया। फिर आप लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया के लिए उस ज़मज़म के पानी को मुतबर्रुक बना दिया। ये सब उसी के इनाम हैं। यह बैतुल्लाह शरीफ़, यह ज़मज़म, यह मक़ामे इब्राहीम, ये वादियां वग़ैरह सब उसी के ख़ुशी के इनाम हैं, उनके मज़े लूटें, मगर अपने-अपने नक़्शों को इब्राहीम के नक़्शों के मुताबिक़ बनाएं। उनके उस्वे से अपने आमाल को टकराएं नहीं। अल्लाह की ख़ुश्नूदी वाले आमाल से, अल्लाह के ग़ज़ब वाले आमाल से टकराएं नहीं।

याद रखो, यह बैतुल्लाह अल्लाह का घर है, यह मर्कज़ है, ख़ुदा की क़ुदरत का मुज़ाहरे का। अभी इंसान चांद पर जाएगा, फिर दज्जाल बन जाएगा, साइंस के बादल बनाएगा। अल्लाह करीम यह सब कुछ देखते हैं। वह ऐसे-ऐसे हौलनाक हथियार बनाने वाले को ख़त्म कर देंगे, जैसे अस्हाबे फ़ील के लश्कर को कंकड़ियों से ख़त्म कर दिया था। दज्जाल मुर्दों को ज़िंदा करके दिखाएगा, फिर बैतुल्लाह पर चढ़ेंगे। तीन झटके मक्का शरीफ़ में आएंगे जो ग़लत यक़ीन वाले होंगे, निकल जाएंगे, सही यक़ीन वाले मक्का में आ जाएंगे। इंसान राकेट से ख़ुद एक बड़ी ताक़त बन जाएगा।

हज

अल्लाह जल्ल जलालुहू ने तुम्हें हज के लिए बुलाया, हाजरा दौड़ी, अंबिया दौड़े, तुम भी दौड़ो, चक्कर काटो, कामयाब होगे। अंबिया ने दुआएं मांगीं। तुम भी गिड़गिड़ाओ, अल्लाह से मांग लो। उसके दर पर आकर अपनी अकड़फ़ों मिटा लो। उसके बन्दे बन जाओ, मांग लो अपने मालिक से, उसके दरवाज़े से ज़ारी करो, शायद उसको तरस आ जावे। याद रखो उसके रहम शुरू हो जाएं, तो बड़े इनाम मिलते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहि०, उनकी बीवी-बच्चों पर ख़ुदा का रहम हुआ, अल्लाह ने तरस खाया, सदियों से इनामों की वर्षा हो रही है। दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा उस करम से फ़ायदा उठाता है। अगर तू नबियों वाले रास्ते पर आ जाए, तो—

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

'सिरातल्लज़ी-न अन-अम-त अलैहिम' से मालामाल हो जावे।

यक़ीन

ख़ुदा की ज़ात पर यक़ीन न बना तो किस पर बनेगा, दिल के यक़ीन की बीमारियों को ठीक कर लो, दिल के अन्दर यक़ीन की झलकी पैदा करो।

हालात की ख़राबी दूसरों की वजह से ख़राब नहीं, यह ख़राबी हमारी अपनी वजह से है। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने उम्मते मुस्लिमा नमाज़ के लिए मांगीं। हज़रत नूह अलैहि० ने जन्नत की नमाज़ के लिए। क्या तू अन्दाज़ा कर सकता है कि हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने उम्मते मुस्लिमा नमाज़ के लिए क्यों मांगी, तुझे नमाज़ के इनामों का अन्दाज़ा ही नहीं, यह अन्दाज़ा इब्राहीमी आंख ही कर सकती है।

मेहनत

बैतुल्लाह की बुनियाद पर मेहनत, नबियों वाली मेहनत पर चलना है। मुहम्मद सल्ल० ने हज़ारों घर क़ुर्बान किए, हज़ारों सहाबा रज़ि० के घर क़ुर्बान किए। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने एक घर क़ुर्बान किया। नमाज़ के लिए एक घर का क़ुर्बान कर देना और ख़ुदा की महबूबियत हासिल कर लेना निहायत

सस्ता सौदा है। ज़मीन व आसमान बदल जाए, लेकिन तू न बदल, मुसलमान रह, उम्मती बन, इब्राहीमी रह, उस्वा-ए-मुहम्मदी अपना, यह तरक़्क़ियों में सबसे बड़ी तरक़्क़ी है, यह तेरी आक़िबत तक काम आने वाली तरक़्क़ी है। अगर यह अमल तेरी तबियत के ख़िलाफ़ है, तो अपनी तबियत पर ग़ौर कर, उसकी इस्लाह कर।

सुलह हुदैबिया में सुलह करना रब का हुक्म था, मुहम्मद सल्ल० ने इताअत की, बात मान ली। ज़ाहिरी एतबार से यह पशेमानी थी। सहाबा किराम रज़ि० पर यह पशेमानी बहुत गिरां थी, ऐसा मौक़ा कभी न आया था। अभी आमाल में इतनी पुख़्तगी न आई थी जितनी हज़रत नबी करीम सल्ल० में थी। अल्लाह की तरफ़ से सुलह का हुक्म हुआ, पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां ने तस्लीम किया और नतीजा ख़ुदा पर छोड़ दिया। सहाबा किराम रज़ि० को बग़ैर उमरा के वापस जाने का सदमा था। मगर ऐसा न हो सका कि हुज़ूर सल्ल० की बात से इंकार कर दें। मुआहदा लिखवाना शुरू किया, कुफ़्फ़ार ने 'अल्लाह के रसूल' पर एतराज़ किया। हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से लफ़्ज़ रसूल मिटा दिया। अल्लाह पाक रसूल के यक़ीन पर ख़ुश हुए। "اِنَّا فَتَحْنَا" 'इन्ना फ़-तह्ना' के नक़्क़ारे बजने लगे। सहाबा किराम फ़त्हुल मुबीन की ख़ुशख़बरी पर और भी सटपटाए, मगर सब ने अपने ख़दशों के ख़िलाफ़ ख़ुदा की बात को मानकर अपना यक़ीन ख़ालिस कर लिया। अपने ख़दशों के ख़िलाफ़ अल्लाह की बात मानना ही ईमान की बुनियाद है। अगर आज हमारे फ़ैसले ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जावें, नबियों वाले तरीक़ों पर आ जाएं तो बात बन गई।

पस ऐ मुसलमान! अपने तरीक़ों को बदल, अपने तरीक़ों को नबियों के तरीक़ों से बदल, अपने नक़्शों को नबियों के नक़्शों से बदल, अपनी मेहनत को नबियों की महेनत से बदल, इब्राहीम अलैहि० की स्कीम को दुनिया में चालू करने के लिए निकल, अख़्लाक़ दुरुस्त करने के लिए निकल, यक़ीन दुरुस्त करने के लिए निकल, आमाल दुरुस्त करने के लिए निकल, हरकत पैदा करो, तीनत का दायरा तोड़ कर फिरो, इल्म, आमाल, क़ुरआन व दीन के लिए फिरो, कमाई ½ दीन ½ की बुनियाद पर मेहनत करो। उम्मत को उठाओ।

अगर आप मस्जिद वाली ज़िंदगी पर आ जाएंगे, तो नक़्शा बदल जाएगा। सारी दुनिया में दीन का बोलबाला होगा। उम्मत भर की उम्मीदों का नक़्शा बदल जाएगा।

दुआ—ऐ ख़ुदा! मुझे यहां बैतुल्लाह शरीफ़ में हिजरत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। हम इस तरह फ़ैसला कर लें जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने फ़ैसला किया था। दीन इस्लाम के लिए फ़ी सबीलिल्लाह निकल जाएं तो अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से बैतुल्लाह वाली बरकात के मुताबिक़ अल्लाह तआला मदद फ़रमाएंगे।

—असरारुल हई हुसनाबाद, रावलपिंडी

अरफ़ात के मैदान में
हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) का
ख़िताब

यौमे अरफ़ा 9 ज़ुलहिज्जा 1384 हि० मुताबिक़
21 अप्रैल 1964 ई० शंबा (शनिवार)

बुज़ुर्गो और दोस्तो!

अल्लाह तआला का बड़ा एहसान है कि हमको बावजूद हमारी नाअह्ली के और इस बात के कि इस पाक मैदान में आने के क़ाबिल नहीं थे, क्योंकि हम में बहुत ज़्यादा गन्दगियां भरी हैं, इस पाक मैदान में बुलाया, जहां आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूरे अक्रम सल्ल० तक तमाम नबियों को बुलाकर हज नसीब कराया, जिस जगह हज़ारों, लाखों नबियों और रसूलों का पसीना गिरा और आंसू गिरे और उनके अन्वार अब तक इस सरज़मीन में मौजूद हैं, उसकी ज़ात से उम्मीद है कि हमें ऐसी जगह बुलाकर उनके आंसुओं, ज़िक्र व इस्तग़फ़ार, तलबिया, चीख़ व पुकार की निस्बत से अल्लाह तआला हमें भी मग़्फ़िरत नसीब फ़रमाएगा, हमें यही उम्मीद रखनी चाहिए कि ज़रूर हमारी मग़्फ़िरत होगी। यहीं हज़रत आदम अलैहि० और हज़रत हव्वा की तौबा क़ुबूल फ़रमाई और मुलाक़ात भी इसी मैदान में करवाई। इसी वजह से इस मैदान का नाम अरफ़ात हुआ। अल्लाह तआला हमें भी अपनी मारफ़त से एक क़तरा अता फ़रमाएं। (आमीन)

हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने इस मैदान में ख़ुत्बा दिया और आख़िर में फ़रमाया कि—

فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ

'फ़ल युबल्लिग़िश-शाहिदुल ग़ाइब' यानी हर आदमी यहां से मुबल्लिग़ बनकर जाए, इससे पहले फ़रमाया, यह कौन-सा दिन है? कौन-सा महीना

है? कौन-सी जगह है? क्या यह फ़्लां दिन नहीं? फ़्लां महीना नहीं? फ़्लां जगह नहीं? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, बेशक है, फिर फ़रमाया कि जिस तरह ये सभी एहतराम के क़ाबिल हैं, मुतनब्बह हो जाओ कि इसी तरह तुम्हारी जान का एक-एक क़तरा, एक-एक बाल और माल का एक-एक पैसा एक दूसरे के ऊपर हराम है, भले ही दुनिया के किसी हिस्से का मुसलमान हो, सारी दुनिया के मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि उसकी जान और माल की हिफ़ाज़त करें।

भाइयो! यह ज़मीन जिस पर अल्लाह ने हमें और आपको सिर्फ़ अपने करम से बिला किसी हक़ के पहुंचाया, सारे नबियों के दुआ मांगने की जगह है और क़ियामत तक सारे इंसानों की दुआओं का मर्कज़ है। जैसा जिसको अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन होगा, उसी क़दर उसकी दुआ में क़ूवत होगी। पहले सब नबियों से यक़ीनों के बदलने की और अल्लाह जैसे हैं, उनकी ज़ात को पहचानने के लिए और अल्लाह से लेने के लिए इबादतों पर मेहनत करवाई, फिर उनकी दुआओं की ताक़त उनके इलाक़े में दिखलायी। नूह अलैहि० की दुआ पर पूरी क़ौम को ग़र्क़ कर दिया। इसी तरह सारे नबियों से मेहनत करा के उनकी दुआओं की ताक़त को उनके इलाक़े में ज़ाहिर किया। अपने-अपने इलाक़े में मेहनत करके, इलाक़े की तर्तीब को बदलवा कर सारे अंबिया किराम बैतुल्लाह पर पहुंचा करते थे, जिस तरह एक ग़ुलाम अपने आक़ा के काम को मेहनत से करके उसके पास आता है। वे बहुत डरते हुए, हिचकियों से रोते-पीटते, भिखारी बनकर अल्लाह के दर पर आते थे, फिर अरफ़ात के मैदान में हाज़िर हुआ करते थे।

सारे अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तरह हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी एक मेहनत का मैदान क़ायम किया और सारे सहाबा रज़ि० को नबियों के तरीक़े पर ईमान और नेक आमाल की बुनियाद पर उठाया और ज़ाहिर के ख़िलाफ़ मेहनत करके ख़ुदा के यक़ीन की बुनियाद पर दुआ मांग कर अल्लाह से अपनी हाजतों को पूरा करा लेना सिखाया। सहाबा रज़ि० ने अल्लाह की इताअत में ज़ाहिर के ख़िलाफ़ किया और फिर दुआ मांगी तो अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से ज़ाहिर के ख़िलाफ़ करके दिखाया।

एक बार हज़रतमौत के इलाक़े में सहाबा रज़ि० को पानी न मिलने की वजह से मौत नज़र आ रही थी। सहाबा रज़ि० पड़ाव करने के लिए एक मैदान में रुके ही थे कि सारे जानवर भाग गए। पानी न मिलने की वजह से मौत पहले ही सामने थी, अब जानवर भी भाग गए। पहले एक ही मौत थी, अब दो मौतें नज़र आने लगीं। उनके अमीर हज़रत अला हज़रमी रज़ि० ने कहा, क्या तुम मुसलमान नहीं? क्या अल्लाह के रास्ते में निकले हुए नहीं हो? क्या अल्लाह की मददें हक़ नहीं हैं? सब ने कहा, हैं। उन्होंने कहा, फिर तयम्मुम करो और अल्लाह से दुआ मांगो। चुनांचे फ़ज्र की नमाज़ तयम्मुम करके पढ़ी और फिर दुआ मांगी, और उस वक़्त तक दुआ के हाथ नहीं छोड़े जब तक ज़मीन से फट कर पानी नहीं निकल आया। मारे ख़ुशी के उनकी ज़ुबान पर था कि यह है, जिसका वायदा अल्लाह ने किया था। ख़ुशी से पानी में कूद पड़े और फिर देखा कि जानवर भी चले आ रहे हैं, इस तरह कि जैसे कोई उनको पकड़ कर ला रहा है।

हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा रज़ि० को ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अमल करके दुआ मांग कर अल्लाह की क़ुदरत के ज़रिए अपने सारे मस्अलों को हल कराना सिखा गए थे। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा हासिल करने के लिए यक़ीन और अल्लाह की इबादत और ख़ुदा के बन्दों से हमदर्दी ख़िदमते ख़ल्क़ और इख़्लासे अमल के ज़रिए उनको दुआ की क़ूवत हासिल हो गई थी। दुआ एक ऐसी बुनियाद है कि माल से तो तुम नाकाम हो सकते हो, लेकिन तुम मालदार हो या मुफ़्लिस, अमीर हो या फ़क़ीर, हाकिम हो या महकूम, बीमार हो या तन्दुरुस्त, हर सूरत में दुआ के ज़रिए से अल्लाह तुमको ज़रूर कामयाब करेगा। चुनांचे हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० को दुआ के रास्ते से अपनी ज़रूरतों का अल्लाह से पूरा कराना ख़ूब सिखाया। इन्फ़िरादी और इज्तिमाई दोनों मस्अलों में उनकी दुआएं ख़ूब चला करती थीं।

ज़ाहिर तो सिर्फ़ ख़ुदा के हाथ में है। उसे जैसा चाहे बदल दे। तेरह साल की लगातार मेहनत पर तफ़सीली दुआ का तरीक़ा आया और उसके बाद जब आप यहां पहुंचे, तो आपने और आपके सहाबा ने उम्मत के लिए दुआएं

मांगीं। हर नबी को एक दुआ ऐसी दी जाती थी कि जिस वक़्त वह दुआ मांगेंगे, अल्लाह वह कर देंगे। यह दुआ उस नबी की मेहनत के बदले में दी जाती थी। सारे नबियों ने अपनी क़ौम या उम्मत के बारे में दुआएं या बद-दुआएं दीं और अल्लाह तआला ने फ़ौरन उनको क़ुबूल फ़रमाया। नबी के मानने वालों को उनकी दुआ ने चमका दिया और न मानने वालों को बर्बाद कर दिया। कहीं आसमान से खाने उतार दिए, इस तरह उनकी मेहनतों वाली दुआएं दुनिया ही में निमट गईं और ख़त्म हो गईं।

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी दूसरे नबियों की तरह अल्लाह ने एक दुआ मेहनत वाली अता फ़रमाई, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने वह दुआ दुनिया में नहीं मांगी, बल्कि उसको पूरी उम्मत के आख़िरत के मस्‌अले हल करने के लिए महफ़ूज़ रखा, फ़रमाया कि सब नबी आकर अपनी-अपनी दुआ कर गए, लेकिन मैं अपनी मेहनत वाली दुआ को आख़िरत में लेकर जा रहा हूं, वही 'शफ़ाअत' है। वह मेरी मेहनत वाली दुआ है और अल्लाह का यह वायदा है कि तुमको राज़ी कर दूंगा और जब तक मेरी सारी उम्मत जन्नत में दाख़िल नहीं हो जाएगी, मैं राज़ी नहीं हूंगा। आम मुसलमान तो कहते थे, لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَّحْمَةِ اللهِ 'ला तक़्नतू मिर्रहमतिल्लाहि' शफ़ाअत वाली आयत है, लेकिन अहले बैअत कहते थे, وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى 'व ल-सौ-फ़ यो-ती-क रब्बु-क फ़-तरज़ा०' शफ़ाअत वाली आयत है।

एक दुआ नबी की मेहनत पर क़ुबूल होती है, एक दुआ नबी की नमाज़ पर, रोज़े पर, हज पर क़ुबूल होती है। एक उम्मती की दुआ भी इसी तरह क़ुबूल होती है। जिस ज़ात ने हज को सही किया और क़ियामत तक के लिए उसको चालू किया और ऐसा बढ़िया हज किया कि आदम अलैहि० से लेकर आज तक न ऐसा बढ़िया हज हुआ और न आगे क़ियामत तक होगा, तो उस ज़ात की हज वाली दुआ कितनी ऊंची और क़ुबूलित वाली होगी। आपने अपनी मेहनत वाली दुआ को भी आख़िरत में उम्मत की अबदी ज़िंदगी के लिए महफ़ूज़ फ़रमा दिया, न अपने लिए कुछ मांगा, न अपने ख़ानदान या सहाबा रज़ि० के लिए। इसी तरह हज की दुआएं भी सिवाए उम्मत के, किसी और के लिए कुछ न मांगा, न यह मांगा कि हुसैन रज़ि० क़त्ल न किए जाएं,

हज़रत उस्मान रज़ि० शहीद न किए जाएं और चैन की ज़िंदगी गुज़ारें, बल्कि इन दोनों को तो इसकी ख़बर दे गए, सारी उम्मत के लिए क़ुर्बानी देते रहे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० जिसके हाथों क़त्ल हुए, अली रज़ि० क़त्ल हुए, हज़रत उस्मान रज़ि० क़त्ल हुए, उसको तो पी गए और सारी उम्मत में उन क़ातिलों को भी शामिल करके पूरी उम्मत की दुआ मांग गए, चाहे कितनी तक्लीफ़ें पहुंच जाएं, उनको बरदाश्त कर लिया जाए, तो अल्लाह अपना प्यारा बना लेते हैं।

अपने और अपने ख़ानदान वालों के बारे में आपने हर क़िस्म की तक्लीफ़ें बरदाश्त करके हज वाली दुआ मांगी, तो वह भी सारी उम्मत ही के लिए मांगी। आपको अपनी उम्मत से बहुत ज़्यादा मुहब्बत और ताल्लुक़ था। आज दीन के दुश्मन बे-इंतिहा माल ख़र्च करके उम्मत को इस्लाम से निकालने की कोशिश कर रहे हैं। उम्मत आमाल तो छोड़ ही रही है, लेकिन अब भी दीन छोड़ने पर तैयार नहीं। यह बरकत और सदक़ा है उन दुआओं का, जो आप उम्मत के लिए कर गए हैं।

एक बार हज़रत आइशा रज़ि० ने दुआ की दरख़्वास्त की। आपने दुआ दी। हज़रत आइशा रज़ि० इस दुआ को सुनकर ख़ुशी में लोट-पोट हो गईं और कहा कि यह दुआ मुझको पसन्द आई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि०! मैं यह दुआ हर नमाज़ के बाद अपनी उम्मत के लिए रोज़ाना करता हूं। यह हज़रत आइशा रज़ि० कौन हैं? हुज़ूर सल्ल० से पूछा गया कि आपको सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? फ़रमाया, आइशा रज़ि०!

ऐसी आइशा रज़ि० को तो वह दुआ उम्र में एक बार दी और उम्मत के लिए वह दुआ हो रोज़ाना, हर नमाज़ के बाद, हज पर अपने या अपने रिश्तेदारों के लिए दुआ मांगने के बजाए उम्मत ही के लिए दुआ मांगी। आप इस क़दर रोए कि आंसुओं से ज़मीन तर हो गई। अर्ज़ किया कि पहले नबी आए थे, वे गिरती हुई उम्मतों को संभाल लिया करते थे। अब कोई नबी आने वाला नहीं। शैतान बहकाने के लिए मौजूद है, उम्मत गिरेगी, तो गिरती चली जाएगी। अब आप यह तै फ़रमा दीजिए कि यह सारी उम्मत जन्नत में जाएगी। अल्लाह तआला ने आपके बहुत रोने, गिड़गिड़ाने पर उम्मत की

मग़्फ़िरत फ़रमा दी सिवाए ज़ालिम के कि उसको नहीं बख़्शूंगा। अब मुज़दलफ़ा तशरीफ़ लाकर उन ज़ालिमों के लिए भी आप रोए जो मुसलमानों को सताएं और परेशान करें और अल्लाह से दुआ की।

आपको उम्मत से कितना ताल्लुक़ था, हम तो इसको समझ ही नहीं सकते। आपके सामने एक चोर लाया गया। आपने उसका हाथ काटने का हुक्म फ़रमाया। जिस वक़्त उसका हाथ काटा जा रहा था, आपका चेहरा पीला पड़ गया और आंखों से आंसू जारी हो गए। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपको तो हाथ कटने का बहुत रंज हुआ, अगर ऐसा था तो आप इसका हुक्म न फ़रमाते। आपने फ़रमाया कि वह सबसे बुरा अमीर (सरदार) है जो हद (सज़ा) को जारी न करे। तुम अपने भाई को मेरे पास तक लाए, क्यों नहीं समझा-बुझा कर तौबा करा देते। तुमने तो शैतान का साथ दिया। अब मेरे एक उम्मती का हाथ तुम सबके सामने काटा जा रहा है, इस पर मुझे क्यों न रंज हो? आप अपनी उम्मत के चोर तक के लिए इतने शफ़ीक़ हैं और तू यों कहे कि कमबख़्त चोर था, अच्छा हुआ, हाथ कट गया और सज़ा मिली। लेकिन आपके आंसू उसके लिए जारी हो गए। आज उम्मत के हज़ारों बेगुनाह लोगों, औरतों और बच्चों के गले काटे जा रहे हैं, लेकिन उन पर हमारा एक आंसू भी नहीं निकलता, जैसे हुज़ूर सल्ल० के बेशुमार आंसू एक उम्मती चोर के हाथ कटने पर निकले थे। इस उम्मत पर आपको ज़बरदस्त शफ़क़त थी। इस उम्मत पर आपने अपना ऐश क़ुर्बान किया, लज़्ज़तें क़ुर्बान कीं। एक बार एक देहाती हुज़ूर सल्ल० के पास आया और इस ज़ोर से आपकी चादर खींची कि गला घुट गया और रंग बदल गया। हज़रत अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! आपके पास ऐसे जाहिल लोग आते हैं, कोई चादर खींचता है, कोई हाथ पकड़ता है, आपके लिए कोई ऊंची जगह बनवा दें, जहां आप तशरीफ़ रखा करें। आपने फ़रमाया, नहीं, मुझको छोड़ दो इन्हीं देहातियों के साथ।

आपको जैसी शफ़क़त उम्मत के साथ थी, किसी दोस्त को किसी दोस्त के साथ नहीं हो सकती थी। आपने रो-रो कर मुज़दलफ़ा में उनकी बख़्शिश कराई। अर्ज़ किया कि या अल्लाह! आपके ख़ज़ानों में कमी नहीं। मज़्लूम को

अपने ख़ज़ाने से बदला दे दीजिए और ज़ालिम को माफ़ फ़रमा कर जन्नत में पहुंचा दीजिए। अल्लाह तआला ने इसको भी क़ुबूल फ़रमा लिया, यह दुआ भी मांगी कि कोई दुश्मन ऐसा न हो कि सौ फ़ीसद उनको ख़त्म कर दे, यह भी क़ुबूल हो गई। फिर दुआ मांगी कि ये आपस में न लड़ें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इनकी बदआमालियों की कोई सज़ा भी तो हो। अब यह होगा कि मुसलमान अल्लाह के दीन से, उसके हुक्म से ऐराज़ करेंगे, तो अल्लाह उनके दिल फाड़ देंगे और इससे उनका ज़ोफ़ होगा और उनके दुश्मन उनको कमज़ोर पाकर उन पर दस्तदराज़ी करेंगे और उनका ख़ून होगा और इसी में उनके इसयान का कफ़्फ़ारा हो जाएगा।

ख़वारिज का क़त्ल हो रहा था, वे पकड़ कर लाए जा रहे थे और मारे जा रहे थे। जब किसी ख़ारिजी का सर कटता तो एक सहाबी के साहबज़ादे 'फ़िन्नारि' कहते थे। बाप ने डांटा कि क्या कह रहा है, यह हुज़ूर सल्ल० का उम्मती है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मेरे उम्मती को नाफ़रमानियों की सज़ा दुनिया में देकर आख़िरत में जन्नत दे देते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने अपना सब कुछ उम्मत पर लुटाया है और उस पर अल्लाह ने जितना ज़्यादा दिया, वह सब भी उम्मत पर लुटा दिया। इंतिक़ाल के वक़्त बीवियों या रिश्तेदारों को बुलाकर देखने का जज़्बा न हुआ, जज़्बा हुआ तो यह हुआ कि जाते वक़्त मैं अपनी उम्मत को देखता जाऊं। फ़ज्र की नमाज़ हो रह थी और हज़रत अबू बक्र रज़ि० नमाज़ पढ़ा रहे थे। गिरया व ज़ारी से नमाज़ भरी हुई थी। उम्मत के देखने के लिए आपने परदा उठवाया।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अंक़रीब था कि हम फ़ित्ने में पड़ जाते और अल्लाह की तरफ़ से हट कर हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ हो जाते। उम्मत को नमाज़ पढ़ता देखा और फिर आपने परदा गिरवा दिया। आख़िरी वक़्त में आपकी तवज्जोह बजाय घर वालों के उम्मत की तरफ़ थी। हज़रत उसामा रज़ि० को बुलाकर कहा कि अल्लाह के रास्ते में चले जाओ और आख़िर वक़्त में ये लफ़्ज़ थे–

اَلصَّلٰوۃُ اَلصَّلٰوۃُ وَمَا مَلَکَتْ اَیْمَانُکُمْ

'अस्सलातु-अस्सलातु व मा म-ल-कत ऐमानुकुम'

और इसके बाद सिर्फ़ 'अस्सलातु-अस्सलातु के लफ़्ज़ थे। इंतिक़ाल के बाद सीने पर कान लगाए तो भी 'अस्सलातु-अस्सलातु' के लफ़्ज़ थे। मज्मूए पर जो अपने को क़ुर्बान करता है इंतिहाई प्यारा हो जाता है। हुज़ूर सल्ल० ने उम्मत पर इंतिहाई क़ुर्बानी दी है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मक़ामे महमूद उतारा जाएगा, आवाज़ आएगी कि नबी उम्मी उस पर बैठें। फ़रमाया, मुझे डर होगा कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे उस पर बिठा कर जन्नत में पहुंचा दें और बाद में मेरी उम्मत को दोज़ख़ में भेज दें तो मैं ज़मीन पर खड़े होकर और अर्श पर हाथ रखकर अर्ज़ करूंगा कि ऐ अल्लाह! पहले मेरी उम्मत को जन्नत में भेजा जाए। अफ़सोस, आज इस उम्मत पर मर मिटने वाले ख़त्म हो गए, इस उम्मत पर रोने वाले ख़त्म हो गए, इस उम्मत पर मेहनत करने वाले ख़त्म हो गए। अगरचे अपने घर पर मेहनत करने वाले बहुत हैं, अपने घर वालों पर रोने वाले बहुत हैं। बावजूद माल, मुल्क, इमारतों के भी यह उम्मत घटती और गिरती जा रही है और इसकी यही वजह है कि इस पर मेहनत करने वाले, क़ुरबानी देने वाले आज ख़त्म हो गए। अल्लाह ने तुमको यह तौफ़ीक़ अता फ़रमाई कि उम्मत की मेहनत के लिए तुम खड़े हुए। तुम्हारी थोड़ी-थोड़ी मेहनत से नमाज़ें क़ायम हुईं। हज के सही होने की शक्लें पैदा हुईं। उसका शुक्र अदा करो और उम्मत का दर्द अपने दिल में पैदा करो, उम्मत के लिए आंसू बहाओ, रोओ। अगर रोना न आए तो रोने की सूरत बनाओ। उम्मत पर मेहनत करने वाला हर सतह पर अपने को क़ुसूरवार क़रार दे और आगे के लिए और ज़्यादा करने के फ़ैसले करे, पिछले पर रोए और आगे को सही चलने का पूरा अज़्म करे, तो अगर बिल्कुल भी करने वाला नहीं, तो इस तरह दुआ क़ुबूल होगी, जैसे करने वालों की, जो मेहनत करने वाले हैं, वे अपनी मेहनत की कोताहियों की माफ़ी मांगें कि हमने चल-फिर कर जितनी मेहनत करनी चाहिए थी, न की कि उम्मत के अन्दर यक़ीन, आमाल, इल्म और मुआशरत (रहन-सहन) दुरुस्त हो जाएं। चाहिए तो यह था कि इस राह में हम अपना पूरा माल लुटा देते, जानें झोंक देते, जिस तरह हुज़ूर सल्ल० ने अपना माल लुटाया और अपनी जान झोंकी। हुज़ूर सल्ल० के पास बहुत माल आया, लेकिन सब उम्मत पर

लुटा दिया और ख़ुद फ़ाक़े बरदाश्त किए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने आख़िर वक़्त में हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया कि हज़रत (सल्ल०) के पास बहुत माल आए, लेकिन हम पर लगा दिए। खाने आए तो हमको खिला दिए। फिर हम आपके लिए हुए माल और कपड़ों और खानों में से जाकर आप (सल्ल०) को देते। हुज़ूर सल्ल० का फ़क़्र अख़्तियारी था, इज़्तिरारी नहीं था। जो कुछ आता, उम्मत पर लगा देते, न अपना मकान बनाया, न खाने-पीने पर लगाया। हुज़ूर सल्ल० की मेहनत हमें क़ुसूरवार क़रार देगी कि हमने इस तरह मेहनत नहीं की और वह क़ुसूरवार नहीं, बल्कि हम ज़्यादा क़ुसूरवार हैं कि हमने इस मेहनत को कुछ किया और फिर समझा भी, इस तरह न कर सके जैसा उसका हक़ था। हम ज़्यादा क़ुसूरवार हैं। हक़ीक़त यह है कि हम कुछ भी नहीं कर रहे, करने वाले पहले कर गए। इस पर बहुत इस्तग़फ़ार और रोना-धोना हो कि हम इस काम की शर्तों पर बहुत कच्चे हैं और आगे के लिए अल्लाह से पूरी तौफ़ीक़ मांगी जाए कि हम इस क़ाबिल नहीं कि हक़ अदा कर सकें। हमारा इस्तिहक़ाक़ नहीं, मगर आप अपने करम से पिछला क़ुबूल फ़रमा लें और आगे को ज़्यादा करने और हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें, फिर दुआ मांगी जाए कि हुज़ूर सल्ल० और उनके साथियों की तरह अल्लाह हमको भी मेहनत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, कहीं ये हमारी मेहनतें मुल्क व माल पर न पड़ जाएं, बल्कि हम दुनिया में से उसका कुछ भी बदला न लेने वाले बनें और सारे इनाम आख़िरत में चाहें। जिन्होंने सबसे ज़्यादा किया, वह माल आने पर भी वैसे रहे, जैसे पहले थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० एक बेवा औरत की बकरी का जाकर दूध रोज़ाना निकाला करते थे। आप जब ख़लीफ़ा बने, तो औरत की लड़की ने कहा कि अब आप दूध नहीं निकाला करेंगे। हज़रत अबू बक्र रजि० रोए और फ़रमाया कि उम्मीद है मैं ऐसा ही रहूंगा जैसे पहले था। हज़रत उमर रज़ि० ने एक अपाहिज बुढ़िया छांटी जिसका कोई ख़बरगीर नहीं था। उसके घर आए तो सब काम हुआ मिला। फिर आए, फिर काम हुआ मिला। तीसरे दिन बहुत सवेरे आए तो देखा कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए। उसका पाख़ाना साफ़ किया, उसको खाना दिया, उसका घर साफ़ किया। हज़रत उमर रज़ि०

की ज़ुबान से निकला, ऐ अबू बक्र! ख़ुदा की क़सम! मैं तुमसे आगे नहीं बढ़ सकता, जैसे हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में थे, वैसे ही दुनिया से गए और वह क्या, एक पूरी क़ौम ऐसी थी, जिससे यह मुजाहदा कराया था कि दुनिया में कुछ लेना नहीं, सिर्फ़ आख़िरत में मिलेगा। आज उम्मत को एक ऐसी जमाअत की ज़रूरत है जो यह कहे कि हम न मुल्क लें, न माल लें, न इज़्ज़त चाहें, बस हुज़ूर सल्ल० की उम्मत को मुसीबत में से निकलवाने के लिए मेहनत करें, क़ुर्बानी दें और क़ियामत के दिन हुज़ूर सल्ल० से जाकर कहें।

अगर ऐसे लोग पैदा हो जाएं तो उम्मत की मुसीबतों का ख़ात्मा हो जाए और उम्मत चमक जाए। जो तुम्हारे पास है, वह लगा दो। कमाइयां छुड़ाना मक़्सूद नहीं, कमाइयां करते रहो और जो ज़्यादा से ज़्यादा हो सकता है, अपनी जान और उम्मत के ऊपर लगाते रहो।

पहले अपने क़ुसूरों की माफ़ी मांगो, फिर आगे की तौफ़ीक़ और उम्मत के लिए ज़्यादा से ज़्यादा क़ुर्बानी देने को उम्मत की हिदायत को अल्लाह से मांगो, गर्द व ग़ुबार ने उम्मत की मुहब्बत की चिंगारियों को दबा रखा है। अल्लाह से मांगो कि वह इस ग़ुबार को हटाए और इस चिंगारी को बढ़ाए। कुफ़्फ़ार भी उम्मते दावत हैं, उनके लिए भी दुआएं करनी हैं। अगर अपने मुसलमान भाइयों की बे-दीनी की वजह से हम उनमें अब तक दावत का काम शुरू नहीं कर सके, लेकिन हम पर उनका भी हक़ है, उनकी हिदायत की भी दुआ करो, साथ-साथ वे कुफ़्फ़ार जो शरीर हैं और शरारत के नाके हैं, जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, उनकी तबाही की दुआएं भी मांगो।

रईसुत्तब्लीग़ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब (रह०) की

एक अहम तक़रीर

यह तक़रीर मियां जी मुहम्मद ईसा की बयाज़ से लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ नक़्ल की गई है।

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّىْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०

भाई दोस्तो! बड़ी दिक़्क़त की बात यह है कि अपनी ग़लतकारी की बुनियाद पर हमारा ज़ेहन इंफ़िरादी बन चुका है, दीन के बारे में भी और दुनिया के बारे में भी, यहां के बारे में भी और आख़िरत के बारे में भी। ज़ेहन यह बन गया कि बस अपनी ज़ात वाले हाल में लगा रहे, ख़्वाह दीन का हाल हो या दुनिया का, इससे अपना मस्अला हल हो जाएगा, हालांकि शख़्सी अह्वाल पर ताक़त ख़र्च करने से बला व मुसीबत कम नहीं होती, बल्कि इज़ाफ़ा ही होता है। इज्तिमाई अह्वाल को जब तक ठीक न बनाया जावे, उस वक़्त तक शख़्सी हालात दुरुस्त होना मुश्किल है। अगर इज्तिमाई ज़िंदगी की ख़राबी पर कोई इज्तिमाई मुसीबत आ पड़े, तो फिर हर किसी की शख़्सी भी बिगड़ती चली जावेगी और इसके ख़िलाफ़ अगर इज्तिमाई ज़िंदगी को बेहतर बनाने को सई की जा रही होगी, तो एक-एक शख़्स का इंफ़िरादी मस्अला भी बेहतर होता चला आवेगा, जब किसी क़ौम, मुल्क या उम्मत का इज्तिमाई मस्अला बिगड़ा हुआ हो और ताक़त उसकी दुरुस्तगी पर लगाई जावे, तो वह इज्तिमाई भी दुरुस्त हो जाता है और हर किसी का शख़्सी भी दुरुस्त हो जाता है। हमें ग़लतफ़हमी होती है कि फ़्लां तदबीर के न करने की वजह से मामला बिगड़ा है, हालांकि हमारे एक-एक मस्अले का बिगड़ना और बनना इज्तिमाई मसले के साथ है। हां, अगर थोड़े से आदमी इज्तिमाई मस्अले पर ताक़त लगावें,

तो सबके इज्तिमाई और इंफ़िरादी मस्‌अले दुरुस्त हो जाएंगे और अगर कुछ लोग भी पूरी क़ौम में उसका फ़िक्र रखने वाले न हुए तो इज्तिमाई के साथ हर किसी का शख़्सी मस्‌अला भी बिगड़ जाएगा और सिवाए हसरत व यास के कुछ हासिल न होगा। इज्तिमाई मस्‌अले के बिगड़ने की सूरत में अगर क़ौम के औलिया अल्लाह उसके सुधार के लिए रास्तों को रो-रोकर भी दुआएं करेंगे तो उनकी दुआएं भी हालात को बेहतर नहीं बना सकतीं।

अगर अल्लाह तआला के यहां से फ़ैसला हो जाए कि किसी मुल्क के इंसान भूखे मरें तो अगर भूख से बचने के लिए एक-एक शख़्स पूरी तरह जान भी खपा रहा होगा, तब भी एक-एक करके भूख से हलाक हो जाएंगे। अपनी ज़ात के मस्‌अले में लग जाना ही तो इज्तिमाई के बिगाड़ का ज़रिया है। जूं-जूं अपनी ज़ात के लिए जान खपावेगा, उसी क़दर इज्तिमाई हालात बिगड़ते जाएंगे और यहां तक बिगड़ेंगे कि हदीसों में आता है कि लोग क़ब्रों पर से गुज़रते हुए हसरत करेंगे कि काश, हम भी क़ब्रों में होते, आदमी-आदमी को काट कर खा जावेगा, यह जब होगा कि हर किसी का जज़्बा जानवरों की तरह सिर्फ़ अपनी ही ज़ात के लिए हो, ऐसे इंसान इंसानों के जामे से दरिंदे होते हैं, सारी परेशानी इस वजह से है कि वक़्त तो इज्तिमाई मस्‌अलों के लिए क़ुर्बानी देने का है और कोशिश इस बात की कर रहे हैं कि अच्छा है, जब तक दुकान चलती रहे चलाओ या ज़मीन में लगा जावे, लगे रहो, महज़ अपने लगने से मसाइल दुरुस्त नहीं होते, बल्कि अल्लाह पाक ही बिगाड़ते हैं और वह ही बनाते हैं।

यक़ीन इस बात पर जमाना है कि जिस चीज़ पर अल्लाह पाक ताक़त लगवाना चाहते हैं, उसमें लगने से तो मसाइल ठीक होते हैं और जिन मख़्लूक़ों पर इंसान ख़ुद से ताक़त ख़र्च करता है, उससे मसाइल बिगड़ते हैं, इंफ़िरादी भी बिगड़ते हैं और इज्तिमाई भी। ताक़तें जब मख़्लूक़ पर ख़र्च होने लगें, तो ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल होता है और नतीजा यह होता है कि जो एक दूसरे के हमदर्द होते हैं, वे जानलेवा होते हैं। जिस तरह चीज़ें अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, उसी तरह हालात भी अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, सूरज मख़्लूक़ है, चांद मख़्लूक़ है, ज़मीन व आसमान मख़्लूक़ है, और सारे जानवर भी मख़्लूक़ हैं।

हालात चीज़ों की मख़्लूक़ नहीं हैं, हालात मुस्तक़िल तौर पर अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। यह बात नहीं कि अगर किसी ने चाहा तो अम्न कर दिया और चाहा तो फ़साद कर दिया, नहीं, बल्कि ये हालात अल्लाह पाक के लाने से ज़ाहिर होते हैं। जिस तरह सूरज अल्लाह की मख़्लूक़ है, इसी तरह वह रौशनी, जो उसमें से निकल रही है, वह भी उसकी मख़्लूक़ है। जब चाहते हैं, सूरज से रौशनी निकालते हैं और जब चाहते हैं, सल्ब फ़रमा लेते हैं। किसी हथियार से आदमी नहीं मर जाता, बल्कि जिस तरह वह आदमी अल्लाह की मख़्लूक़ है, उसी तरह उसकी मौत भी अल्लाह की मख़्लूक़ है। जब अल्लाह पाक मारना चाहते हैं, तो मौत वाक़े होती है। इसी तरह इज़्ज़त व ज़िल्लत, फ़क़्र व फ़ाक़ा वग़ैरह सब अल्लाह पाक ही की मख़्लूक़ हैं। हमें ग़ल्ले से पेट का भरना नज़र आता है और इसी तरह से दूसरी चीज़ों में हम ग़लत तौर पर अह्वाल को देखने के आदी हो गए हैं और ग़लत तख़य्युल क़ायम करते हैं, हालांकि क़ुरआन पाक में साफ़-साफ़ इर्शाद है कि पानी हम उतारते हैं, खेती हम उगाते हैं। एक औरत अगर ख़ुदा की मख़्लूक़ है तो उसके अन्दर में जो बच्चा है, वह भी अल्लाह ही की मख़्लूक़ है। मख़्लूक़ किसी वक़्त ख़ालिक़ नहीं बन जाती। जो पहली चीज़ को बनाने वाला है, दूसरी को भी वही बना देगा। किसी मख़्लूक़ को मख़्लूक़ में (से ज़ाहिर होता) देखकर (उस मख़्लूक़ पर) ताक़त ख़र्च होगी, तो मसूअला बिगड़ेगा। रोटी खाने में पेट भरना (यानी पेट भरने की लाज़िमी ख़ासियत) नहीं है। हज़रत मुआविया रज़ि० फ़रमाते थे कि कभी मेरी यह हालत थी कि रोटी खाते-खाते मेरा जबड़ा दुख जाता था और पेट नहीं भरता था।

जो कुछ भी है, ज़मीन से लेकर आसमान तक और जो इस वक़्त मौजूद है और जो आगे आने वाला है, सारी ही चीज़ें अल्लाह की मख़्लूक़ हैं और सारे अह्वाल भी उसकी मख़्लूक़ हैं, तो बस जब कुछ लेना हो, उसके लेने के लिए अल्लाह ही पर ताक़त सर्फ़ की जाए। अगर ख़ौफ़ से घबराहट है, तो भी राबता अल्लाह पाक से ही पैदा किया जावे। जिस ख़ौफ़ को अल्लाह पाक से हटवाओगे, वह हमेशा के लिए हट जावेगा। अगर मख़्लूक़ पर ताक़त लगा कर के कोई चीज़ हासिल की तो वजूद तो उसका भी अल्लाह ही के पैदा करने

से होगा, फिर भी मख़्लूक़ के वास्ते से आने की सूरत में वह फ़ानी होगी। जो शख़्स अल्लाह से न ले, बल्कि मख़्लूक़ से ले, तो बहुत ही पछताना पड़ेगा, इसलिए कि जो मख़्लूक़ मख़्लूक़ में से आएगी, वह फ़ानी होगी और उसके फ़ना पर हसरत व अफ़सोस होगा और जो चीज़ अल्लाह से आएगी, वह हमेशा के लिए होगी।

ला इला-ह इल्लल्लाहु का मतलब यही है कि तमाम मस्अलों को एक ज़ात बारी तआला से ही हल कराना है, इसलिए वे तदबीरें अख़्तियार करो जो उससे लेने की हैं। अगर अल्लाह तआला से लेने की तदबीरें अपनाई जाएंगी, तो दुनिया में भी मिलेगा और आख़िरत में भी। ग़ैर-ख़ुदा पर ताक़त लगा कर हम जो समझ रहे हैं कि चीज़ों से कुछ पैदा हो रहा है, तो उसमें शिर्क की बू आती है। कोई मख़्लूक़ अल्लाह पाक के हुक्म के बग़ैर कुछ दे नहीं सकती। क़ुरआन पाक में जगह-जगह बतलाया गया है कि मख़्लूक़ात में कुछ न समझे, बल्कि अक़ीदा रखे कि अल्लाह ही करने वाले हैं। इसी को तौहीद कहते हैं। जिस तरह मख़्लूक़ से फ़ायदा उठाने की तदबीरें हैं, उसी तरह अल्लाह तआला से लेने की भी तदबीरें हैं, सारे अह्काम बाद को आते हैं।

पहला हुक्म यह है कि अल्लाह पाक पर यक़ीन पैदा हो जाए और उसी के पैदा करने के लिए इंसानों में कोशिश की जाए। इस सिलसिले में अगर थोड़ा-सा यहां ख़ौफ़ बरदाश्त कर लिया जाएगा, तो हमेशा के ख़ौफ़ से छुटकारा हो जाएगा, थोड़ी सी भूख-प्यास बरदाश्त कर ली जाएगी, तो हमेशा की भूख व प्यास से निजात मिल जाएगी, थोड़ा वक़्त बीवी-बच्चों की जुदाई में गुज़र गया तो हमेशा का साथ नसीब होगा। हज़रात सहाबा किराम रज़ि० ने थोड़े दिन भूख-प्यास बरदाश्त की तो इस दुनिया में भी बड़ी-बड़ी सलतनतों के दबे हुए ख़ज़ाने तक उनके पैरों में आ पड़े। ज़रूरत है कि ज़ाती तास्सुर किसी चीज़ का न रहे, तब ही मुल्क व माल के फ़िल्नों से बचाव हो सकता है और अल्लाह के लिए हर किसी से मामला करना आ जावे, जब रुपया न हो, तो भी मुतास्सिर न हो और जब रुपया आ जाए तो उससे भी मुतास्सिर न हो। ऐसे ही लोग सालेह हैं जो मख़्लूक़ का तास्सुर ख़त्म कर दें। ग़रज़ यह

कि इस वक़्त के बिगाड़ की वजह सिर्फ़ यही है कि हम सब जो अल्लाह पाक के हुक्मों पर जान खपाने वाले होते, वह मख़्लूक़ पर जान खपाने और उसी से लेने के ग़लत तसव्वुर के आदी हो गए।

अल्लाह पाक के हुक्मों पर जान खपाने पर जिस क़दर अल्लाह की मददों का यक़ीन होगा, उसी क़दर ग़ैब से दरवाज़े खुलते जावेंगे। अगर ख़ुदा के दीन के लिए जान खपाने वालों की मिक़्दार बढ़े और उस पर यक़ीन हो तो चूंकि सारी मख़्लूक़ात अल्लाह की ज़ात से वाबस्ता है, हमारी मर्ग़ूबात हों या मक्रूहात, अल्लाह ही की तरफ़ से हैं। जब यह बात है तो दिनों को पूरी तरह मख़्लूक़ में अल्लाह पाक का यक़ीन पैदा करने के लिए ठोकरें खाएं और रातों को उसकी जनाब में पूरी तरह गिरया व ज़ारी से दुआएं मांगें तो इनशाअल्लाह हर तरह इज्तिमाई व इंफ़िरादी अह्वाल दुरुस्त और मुवाफ़िक़ हो जाएंगे।

एक अहम तक़रीर

मुसलमानों को उम्मत बनने की दावत

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब अलैहिर्रहमत ने अपने विसाल से तीन दिन पहले, यानी 26 ज़ीक़ादा (मुताबिक़ 30 मार्च) मंगल के दिन, फ़ज्र की नमाज़ के बाद रायविन्ड (ज़िला लाहौर) में एक अहम तक़रीर फ़रमाई थी। यह आपकी ज़िंदगी की एक अहम आख़िरी तक़रीर थी। हमें यह तक़रीर मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब खलनवी के ज़रिए हासिल हुई।

देखो, मेरी तबियत ठीक नहीं है, सारी रात मुझे नींद नहीं आई, इसके बावजूद ज़रूरी समझ के बोल रहा हूं। जो समझ के अमल करेगा, अल्लाह उसे चमकाएगा, वरना अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारेगा।

यह उम्मत बड़ी मशक़्क़त से बनी है, इसको उम्मत बनाने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० ने बड़ी मशक़्क़तें उठाई हैं और उनके दुश्मनों—यहूदियों और ईसाइयों ने हमेशा इसकी कोशिशें की हैं कि मुसलमान एक उम्मत न रहें, बल्कि टुकड़े-टुकड़े हों। अब मुसलमान अपना उम्मतपना (यानी उम्मत होने की सिफ़त) खो चुके हैं, जब तक ये उम्मत बने हुए थे, कुछ लाख सारी दुनिया पर भारी थे, एक पक्का मकान नहीं था, मस्जिद तक पक्की नहीं थी, मस्जिद में चराग़ तक नहीं जलता था। मस्जिदे नबवी में हिजरत के नवें साल चराग़ जला है। सबसे पहला चराग़ जलाने वाले तमीमदारी रज़ि० हैं। वह सन् 09 हि० में इस्लाम लाए हैं और 09 हि० तक क़रीब-क़रीब सारा अरब इस्लाम में दाख़िल हो चुका था, अलग-अलग क़ौमें, अलग-अलग ज़ुबानें, अलग-अलग क़बीले एक उम्मत बन चुके थे, तो जब यह सब कुछ हो गया, उस वक़्त मस्जिदे नबवी में चराग़ जला, लेकिन हुज़ूर सल्ल० हिदायत का जो नूर लेकर तशरीफ़ लाये

थे, वह पूरे अरब में, बल्कि उसके बाहर भी फैल चुका था और उम्मत बन चुकी थी, फिर यह उम्मत दुनिया में उठी, जिधर को निकली, मुल्क के मुल्क पैरों में गिरे। यह उम्मत इस तरह बनी थी कि उनका कोई आदमी अपने ख़ानदान, अपनी बिरादरी, अपनी पार्टी, अपनी क़ौम, अपने वतन, अपनी ज़ुबान का हामी न था। माल व जायदाद और बीवी-बच्चों की तरफ़ देखने वाला भी न था, बल्कि हर आदमी सिर्फ़ यह देखता था कि अल्लाह व रसूल सल्ल० क्या फ़रमाते हैं। उम्मत जब ही बनती है, जब अल्लाह व रसूल सल्ल० के हुक्म के मुक़ाबले में सारे रिश्ते और सारे ताल्लुक़ात कट जाएं। जब मुसलमान एक उम्मत थे, तो एक मुसलमान के कहीं क़त्ल हो जाने से सारी दुनिया हिल जाती थी। अब हज़ारों-लाखों के गले कटते हैं और कानों पर जूं नहीं रेंगती।

उम्मत किसी एक क़ौम और एक इलाक़े के रहने वालों का नाम नहीं है, बल्कि सैकड़ों, हज़ारों क़ौमों और इलाक़ों से जुड़ कर उम्मत बनती है। जो कोई किसी एक क़ौम या एक इलाक़े को अपना समझता है और दूसरों को ग़ैर समझता है, वह उम्मत को ज़िब्ह करता है और उसके टुकड़े करता है और हुज़ूर सल्ल० की और सहाबा रज़ि० की मेहनतों पर पानी फेरता है, उम्मत को टुकड़े-टुकड़े होकर पहले ख़ुद हमने ज़िब्ह किया है। यहूदियों और ईसाइयों ने तो इसके बाद कटी-कटाई उम्मत को काटा है। अगर मुसलमान अब फिर उम्मत बन जाएं तो दुनिया की सारी ताक़तें मिलकर भी उनका बाल बीका नहीं कर सकतीं। एटम बम और राकेट उनको ख़त्म नहीं कर सकेंगे, लेकिन अगर वे क़ौमों और इलाक़ों की अस्बीयतों की वजह से आपस में उम्मत के टुकड़े करते रहे, तो ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे हथियार और तुम्हारी फ़ौजें तुमको नहीं बचा सकेंगी।

मुसलमान सारी दुनिया में इसलिए पिट रहा है और मर रहा है कि उसने उम्मतपने को ख़त्म करके हुज़ूर सल्ल० की क़ुर्बानी पर पानी फेर दिया है। मैं यह दिल के ग़म की बातें कह रहा हूं सारी तबाही इस वजह से है कि उम्मत उम्मत न रही, बल्कि यह भी भूल गए कि उम्मत क्या है और हुज़ूर सल्ल० ने किस तरह उम्मत बनाई थी।

उम्मत होने के लिए और मुसलमान के साथ ख़ुदाई मदद होने के लिए सिर्फ़ यह काफ़ी नहीं है कि मुसलमानों में नमाज़ हो, ज़िक्र हो, मदरसा हो, मदरसे की तालीम हो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ातिल इब्ने मुलजिम ऐसा नमाज़ी और ऐसा ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाला) था कि जब उसको क़त्ल करते वक़्त ग़ुस्से में भरे लोगों ने उसकी ज़ुबान काटनी चाही, तो उसने कहा, सब कुछ कर लो, लेकिन मेरी ज़ुबान मत काटो, ताकि ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक मैं उससे अल्लाह का ज़िक्र करता रहूं। इसके बावजूद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अली रज़ि० का क़ातिल मेरी उम्मत का सबसे ज़्यादा शक़ी और बद-बख़्ततरीन आदमी होगा और मदरसे की तालीम तो अबुल फ़ज़्ल और फ़ैज़ी ने भी हासिल की थी और ऐसी हासिल की थी कि क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर बिला नुक़्ते के लिख दी हालांकि उन्होंने ही अक्बर को गुमराह करके दीन को बर्बाद किया था, तो जो बातें इब्ने मुलजिम और अबुल फ़ज़्ल फ़ैज़ी में थी, वे उम्मत बनने के लिए और ख़ुदा की ग़ैबी नुसरत के लिए कैसे काफ़ी हो सकती है?

हज़रत शाह इस्माईल शहीद रह० और हज़रत सैयद अहमद शहीद रह० और उनके साथी दीनदारी के लिहाज़ से बेहतरीन मज्मूआ थे। वे जब सरहदी इलाक़े में पहुंचे और वहां के लोगों ने उनको अपना बड़ा बना लिया तो शैतान ने वहां के कुछ मुसलमानों के दिलों में यह बात डाली कि ये दूसरे इलाक़े के लोग, उनकी बात यहां क्यों चले। उन्होंने उनके ख़िलाफ़ बग़ावत कराई, उनके कितने ही साथी शहीद कर दिए गए और इस तरह ख़ुद मुसलमानों ने इलाक़ाई बुनियाद पर उम्मतपने को तोड़ दिया। अल्लाह ने उसकी सज़ा में अंग्रेज़ों को मुसल्लत किया। यह ख़ुदा का अज़ाब था।

याद रखो, मेरी क़ौम और मेरा इलाक़ा और मेरी बिरादरी, ये सब उम्मत को तोड़ने वाली बातें हैं और अल्लाह तआला को ये बातें इतनी नापसन्द हैं कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० जैसे बड़े सहाबी से इस बारे में जो ग़लती हुई, (जो अगर दब न गई होती तो उसके नतीजे में अंसार और मुहाजिरों में तफ़्रीक़ हो जाती।) उसका नतीजा हज़रत साद रज़ि० को दुनिया ही में भुगतना पड़ा। रिवायतों में यह है कि उनको जिन्नात ने क़त्ल

कर दिया और मदीना में यह आवाज़ सुनाई दी और बोलने वाला कोई नज़र न आया—

قتلنا سيّد الخزرج سعد بن عباده   رميناه بسهم فلم يخط فوادة

'हमने क़बीला ख़ज़रज के सरदार साद बिन उबादा को हलाक कर दिया, हमने उसको तीर का निशाना बनाया जो ठीक उसके दिल पर लगा।' —अरबी पद का अनुवाद

इस वाक़िए ने मिसाल क़ायम कर दी और सबक़ दिया कि अच्छे से अच्छा आदमी भी अगर क़ौमियत या इलाक़े की बुनियाद पर उम्मतपने को तोड़ेगा तो अल्लाह उसको तोड़ के रख देगा।

उम्मत जब बनेगी, जब उम्मत के सब तबक़े बिला तफ़रीक़ उस काम में लग जाएं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दे के गए हैं और याद रखो उम्मतपने को तोड़ने वाली चीज़ें मामलों की और मुआशरत (रहन-सहन) की ख़राबियां हैं, एक फ़र्द या तबक़ा जब दूसरे के साथ नाइंसाफ़ी और ज़ुल्म करता है और उसका पूरा हक़ उसको नहीं देता या उसको तक्लीफ़ पहुंचाता है या उसकी तह्क़ीर और बेइज़्ज़ती करता है तो तफ़रीक़ पैदा होती है और उम्मतपना टूटता है, इसलिए मैं कहता हूं कि सिर्फ़ कलिमा या तस्बीह से उम्मत नहीं बनेगी, उम्मत मामलों की, मुआशरत की इस्लाह से और सबका हक़ अदा करने और सबका इक्राम करने से बनेगी, बल्कि जब बनेगी, जब दूसरों के लिए अपना हक़ और अपना मुफ़ाद (स्वार्थ) क़ुर्बान किया जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० ने अपना सब कुछ क़ुर्बान करके और अपने ऊपर तक्लीफ़ें झेल के इस उम्मत को उम्मत बनाया था।

हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में एक दिन लाखों-करोड़ों रुपए आए। उनकी तक़्सीम का मश्वरा हुआ। उस वक़्त उम्मत बनी हुई थी। यह मश्वरा करने वाले किसी एक ही क़बीले या एक ही तबक़े के न थे, बल्कि अलग-अलग तबक़ों और क़बीलों के वे लोग थे, जो हुज़ूर सल्ल० की सोहबत

के एतबार से बड़े और ख़वास समझे जाते थे। उन्होंने मश्वरे से आपस में तै किया कि बांटा इस तरह जाए कि सबसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० के क़बीले वालों को दिया जाए। इसके बाद हज़रत अबू बक्र रज़ि० के क़बीले वालों को, फिर हज़रत उमर रज़ि० के क़बीले वालों को। इस तरह हज़रत उमर रज़ि० के रिश्तेदार तीसरे नम्बर पर आए। जब यह बात हज़रत उमर रज़ि० के सामने रखी गई तो आपने इस मश्वरे को क़ुबूल नहीं किया और फ़रमाया कि इस उम्मत को जो कुछ मिला है और मिल रहा है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से और आपके सदक़े में मिल रहा है, इसलिए बस हुज़ूर सल्ल० ही के ताल्लुक़ को मेयार बनाया जाए, जो नसब में आपसे ज़्यादा क़रीब हों, उनको ज़्यादा दिया जाए, जो दूसरे, तीसरे, चौथे नम्बे पर हों, उनको उसी नम्बर पर रखा जाए। इस तरह सबसे ज़्यादा बनी हाशिम को दिया जाए, इसके बाद बनी अब्द मुनाफ़ को, फिर क़ुसई की औलाद को, फिर किलाब को, फिर काब को, फिर मुर्रा की औलाद को, इस हिसाब से हज़रत उमर रज़ि० का क़बीला बहुत पीछे पड़ जाता था और उसका हिस्सा बहुत कम हो जाता था। मगर हज़रत उमर रज़ि० ने यही फ़ैसला किया और माल की तक़्सीम में अपने क़बीले को इतने पीछे डाल दिया। इस तरह बनी थी यह उम्मत।

उम्मत बनने के लिए यह ज़रूरी है कि सबकी यह कोशिश हो कि आपस में जोड़ हो, फूट न पड़े। हुज़ूर सल्ल० की एक हदीस का मज़्मून है कि क़ियामत में एक आदमी लाया जाएगा, जिसने दुनिया में नमाज़, रोज़ा, हज, तब्लीग़ सब कुछ किया होगा, मगर वह अज़ाब में डाला जाएगा, क्योंकि उसकी किसी बात ने उम्मत में तफ़रीक़ डाली होगी। उससे कहा जाएगा, पहले अपने इस एक लफ़्ज़ की सज़ा भुगत ले, जिसकी वजह से उम्मत को नुक़्सान पहुंचा और एक दूसरा आदमी होगा, जिसके पास नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरह की बहुत कमी होगी और वह ख़ुदा के अज़ाब से बहुत डरता होगा, मगर उसको बहुत सवाब से नवाज़ा जाएगा। वह ख़ुद पूछेगा, यह करम मेरे किस अमल की वजह से है? उसको बताया जाएगा कि तूने फ़्लां मौक़े पर एक बात कही थी, जिससे उम्मत में पैदा होने वाला एक फ़साद रुक गया और बजाए तोड़ के जोड़ पैदा हो गया। यह सब तेरे इसी लफ़्ज़ का सिला और सवाब है।

उम्मत के बनाने और बिगाड़ने में, जोड़ने और तोड़ने में सबसे ज़्यादा दख़ल ज़ुबान का होता है, यह ज़ुबान दिलों को जोड़ती भी है और फाड़ती भी है। ज़ुबान से एक बात ग़लत और फ़साद की निकल जाती है और उस पर लाठी चल जाती है और पूरा फ़साद खड़ा हो जाता है और एक ही बात जोड़ पैदा कर देती है और फटे हुए दिलों को मिला देती है। इसलिए सबसे ज़्यादा ज़रूरत इसकी है कि ज़ुबान पर क़ाबू हो और यह जब हो सकता है, जब बन्दा हर वक़्त इसका ख़्याल रखे कि ख़ुदा हर वक़्त और हर जगह उसके साथ है और उसकी हर बात को सुन रहा है।

मदीना में अंसार के दो क़बीले थे, औस और ख़ज़रज, इनमें पुश्तों से अदावत और लड़ाई चली आ रही थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब हिजरत फ़रमा कर मदीना पहुंचे और अंसार को इस्लाम की तौफ़ीक़ मिली तो हुज़ूर सल्ल० की और इस्लाम की बरकत से उनकी पुश्तों की लड़ाइयां ख़त्म हो गईं और औस व ख़ज़रज शीर व शकर हो गए। यह देखकर यहूदियों ने स्कीम बनाई कि किसी तरह उनको फिर से लड़ाया जाए। एक मज्लिस में जिसमें दोनों क़बीलों के आदमी मौजूद थे, एक साज़िशी आदमी ने उनकी पुरानी लड़ाइयों से मुताल्लिक़ कुछ शेर पढ़ के इश्तिआल पैदा कर दिया। पहले तो ज़ुबानें एक दूसरे के ख़िलाफ़ चलीं, फिर दोनों तरफ़ से हथियार निकल आए। हुज़ूर सल्ल० से किसी ने जाकर कहा, आप फ़ौरन तशरीफ़ लाएं और फ़रमाया कि मेरे होते हुए तुम आपस में ख़ून-ख़राबा करोगे। आपने बहुत मुख़्तसर मगर दर्द से भरा हुआ ख़ुत्बा दिया। दोनों फ़रीक़ों ने महसूस कर लिया कि हमें शैतान ने वरग़लाया, दोनों रोए और गले मिले और ये आयतें उतरीं—

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ۝

'ऐ मुसलमानो! ख़ुदा से डरो और उससे डरना चाहिए और मरते दम तक पूरे-पूरे मुस्लिम और ख़ुदा के फ़रमांबरदार बन्दे बने रहो।'

जब आदमी हर वक़्त ख़ुदा का ख्याल रखेगा, उसके क़हर व अज़ाब से डरता रहेगा और हर दम उसकी ताबेदारी करेगा, तो शैतान भी उसे नहीं बहका सकेगा और उम्मत फूट से और सारी ख़राबियों से बची रहेगी।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا

'और अल्लाह की रस्सी को यानी उसकी पाक किताब और उसके दीन को सब मिलकर मज़बूती से थामे रहो, यानी पूरी इज्तिमाइयत के साथ और उम्मतपने की सिफ़त के साथ सब मिल-जुलकर दीन की रस्सी को थामे और उसमें लगे रहो और क़ौम की बुनियाद पर या इलाक़े की बुनियाद पर या ज़ुबान की बुनियाद पर या किसी और बुनियाद पर टुकड़े-टुकड़े न हो और अल्लाह के इस एहसान को न भूलो कि उसने तुम्हारे दिलों की वह अदावत और दुश्मनी ख़त्म करके जो पुश्तों से तुममें चली आ रही थी, तुम्हारे दिलों में उलफ़त पैदा कर दी और तुम्हें आपस में भाई-भाई बना दिया और तुम आपस में लड़ते वक़्त दोज़ख़ के किनारे पर खड़े थे, बस गिरने ही वाले थे कि अल्लाह ने तुमको थाम लिया और दोज़ख़ से बचा लिया।'

शैतान तुम्हारे साथ है, उसका इलाज यह है कि तुममें एक गिरोह ऐसा हो जिसका मौज़ू (विषय) ही भलाई की ओर नेकी की तरफ़ बुलाना और हर बुराई और हर फ़साद से रोकना हो—

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

'उम्मत में एक गिरोह वह हो जिसका काम और मौज़ू ही यह हो कि वह दीन की तरफ़ और हर क़िस्म के ख़ैर की तरफ़ बुलाए ईमान के लिए और ख़ैर और नेकी के रास्ते पर चलने

के लिए मेहनत करता रहे, नमाज़ों पर मेहनत करे, ज़िक्र पर मेहनत करे, हुज़ूर सल्ल० के लाए हुए इल्म पर मेहनत करे, बुराइयों और मासियतों से बचाने के लिए मेहनत करे और इन मेहनतों की वजह से उम्मत एक उम्मत बनी रहे।'

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ○

'जो लोग इन हिदायतों के बाद भी शैतान की पैरवी करके और अलग-अलग राहों पर चल के इख़्तिलाफ़ पैदा करेंगे और उम्मतपने को तोड़ेंगे, तो उन पर ख़ुदा की सख़्त मार पड़ेगी।'

(اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ○)

दीन की सारी तालीम और सारी चीज़ें जोड़ने वाली और जोड़ने के लिए हैं, नमाज़ में जोड़ है, रोज़े में जोड़ है, हज में, क़ौमों और मुल्कों और मुख़्तलिफ़ ज़ुबान वालों का जोड़ है, तालीम के हलक़े जोड़ने वाले हैं। मुसलमानों का इक्राम और आपसी मुहब्बत और तोहफ़े और तोहफ़ों का लेन-देन ये सब जोड़ने वाली और जन्नत में ले जाने वाली चीज़ें हैं और क़ियामत में उन आमाल के लिए मेहनतें करने वालों के चेहरे नूरानी होंगे और इनके बरख़िलाफ़ आपस में बुग़ज़ व हसद, ग़ीबत, चुग़लख़ोरी, तौहीन व तह्क़ीर और दिल आज़ारी, ये सब फूट डालने वाले और तोड़ने वाले और दोज़ख़ में ले जाने वाले आमाल हैं और इन आमाल वाले आख़िरत में रूसियाह होंगे।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ○ وَاَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللّٰهِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ○

'जिन्होंने फूट डाल के और फूट डालने वाले आमाल करके उम्मत को तोड़ा होगा, वे क़ियामत के दिन क़ब्रों से काले मुंह उठेंगे और उनसे कहा जाएगा कि तुमने ईमान और इस्लाम के बाद कुफ़्र वालों का तरीक़ा अख़्तियार किया। अब तुम यहां

दोज़ख़ का अज़ाब चखो और जो ठीक रास्ते पर चलते रहे होंगे, उनके चेहरे नूरानी और चमकते हुए होंगे और वे हमेशा अल्लाह की रहमत में और जन्नत में रहेंगे।'

मेरे भाइयो, दोस्तो! ये सब आयतें उस वक़्त उतरी थीं, जब यहूदियों ने अंसार में फूट डालने की कोशिश की थी और उनके दो क़बीलों को एक दूसरे के मुक़ाबले में खड़ा कर दिया था। इन आयतों में मुसलमानों की आपसी फूट और लड़ाई को कुफ़्र की बात कहा गया है और आख़िरत के अज़ाब से डराया गया है। आज सारी दुनिया में उम्मतपना तोड़ने की मेहनत चल रही है। इसका इलाज और तोड़ यही है कि तुम अपने को हुज़ूर सल्ल० वाली मेहनत में लगा दो, मुसलमानों को मस्जिदों में लाओ, वहां ईमान की बातें हों, तालीम और ज़िक्र के हलक़े हों, दीन की मेहनत के मश्वरे हों, मुख़्तलिफ़ तबक़ों के और मुख़्तलिफ़ बिरादरियों के और मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों वाले लोग मस्जिदे नबवी के तरीक़े पर इन कामों में जुड़ें, जब उम्मतपना आएगा। उन बातों से बचें जिनसे शैतान को फूट डालने का मौक़ा मिले। जब तीन बैठें तो इसका ख़्याल रखें कि चौथा हमारे साथ अल्लाह है। चार-पांच बैठें तो हमेशा याद रखें कि पांचवां या छठा अल्लाह हमारे साथ ही मौजूद है और हमारी हर बात सुन रहा है और देख रहा है कि हम उम्मत बनाने की बात कर रहे हैं या उम्मतपना तोड़ने की। हम किसी की ग़ीबत और चुग़लख़ोरी तो नहीं कर रहे, किसी के ख़िलाफ़ साज़िश तो नहीं कर रहे।

यह उम्मत हुज़ूर सल्ल० के ख़ून और फ़ाक़ों से बनी थी। अब हम अपनी मामूली-मामूली बातों पर उम्मत को तोड़ रहे हैं। याद रखो, जुमा की नमाज़ छोड़ने पर भी इतनी पकड़ नहीं होगी, जितनी उम्मत के तोड़ने पर होगी। अगर मुसलमानों में उम्मतपना आ जाए तो वे दुनिया में हरगिज़ ज़लील न होंगे, रूस और अमेरिका की ताक़तें भी उनके सामने झुकेंगी और उम्मतपना जब आएगा जब "اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ" 'अज़िल्लतिन अलल मोमिनीन' पर मुसलमानों का अमल हो, यानी हर मुसलमान दूसरे मुसलमान के मुक़ाबले में छोटा बने और ज़िल्लत व तवाज़ो अख़्तियार करने को अपनाए। तब्लीग़ में इसी की मश्क़ करनी है। जब मुसलमानों में "اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ" 'अज़िल्लतिन अलल

मोमिनीन' वाली सिफ़त आ जाएगी तो वे दुनिया में "اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ" 'अअिज़्ज़तिन अलल काफ़िरीन' यानी काफ़िरों के मुक़ाबले में ज़बरदस्त और ग़ालिब ज़रूर होंगे, चाहे वे काफ़िर यूरोप के हों या एशिया के।

मेरे भाइयो, दोस्तो! अल्लाह और रसूल सल्ल० ने उन बातों से शिद्दत और सख़्ती से मना फ़रमाया है, जिनसे दिलों में फ़र्क़ पड़े और फूट का ख़तरा हो। दो-दो, चार-चार अलग-अलग कानाफूसी करें, इससे शैतान दिलों में बद-गुमानी पैदा कर सकता है, इससे मना फ़रमाया गया और इसको शैतानी काम बताया गया।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ

इसी तरह हक़ीर समझने, मज़ाक़ उड़ाने और दिल्लगी से से मना फ़रमाया गया।

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ

इससे भी मना फ़रमाया गया कि दूसरे की कोई बुराई जो मालूम न हो, उसको टोह में पड़कर मालूम किया जाए और जो बुराई किसी की मालूम हो गई हो, उसको दूसरों के सामने ज़िक्र करने से मना फ़रमाया गया और ग़ीबत को हराम किया गया। ग़ीबत इसका नाम है कि जो वाक़ई बुराई किसी की मालूम हो, उसका ज़िक्र किसी से किया जाए।

"وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا"

यह हक़ीर समझना, मज़ाक़ उड़ाना, टोह में पड़ना और ग़ीबत करना, सब वे चीज़ें हैं जो आपस में तफ़रक़ा पैदा करके उम्मतपने को तोड़ती हैं, इन सबको हराम क़रार दिया गया और एक दूसरे का इक्राम व एहतराम करना जिससे उम्मत जुड़ती बनती है, उसकी ताकीद फ़रमाई गई और दूसरों से अपना इक्राम चाहने से मना किया गया, क्योंकि इससे उम्मत बनती नहीं, बिगड़ती है। उम्मत जब बने जब हर आदमी यह तै करे कि मैं इज़्ज़त के क़ाबिल नहीं हूं, इसलिए मुझे इज़्ज़त लेनी नहीं, बल्कि दूसरों की इज़्ज़त करनी

है और दूसरे सब लोग इस क़ाबिल हैं कि मैं उनकी इज़्ज़त करूं और उनका इक्राम करूं।

अपने नफ़्सों और अपनी ज़ातों को क़ुर्बान किया जाएगा तो उम्मत बनेगी और उम्मत बनेगी तो इज़्ज़त मिलेगी। इज़्ज़त और ज़िल्लत रूस और अमरीका तक के नक़्शों में नहीं है, बल्कि ख़ुदा के हाथ में है और उसके यहां उसूल और ज़ाबता है। जो शख़्स या क़ौम, ख़ानदान, तबक़ा चमकाने वाले उसूल और आमाल लावेगा, उसको चमका देंगे, जो मिटने वाले काम करेगा, उसको मिटा देंगे। यहूदी नबियों की औलाद हैं। उसूल तोड़े तो अल्लाह ने ठोकर मार कर उनको तोड़ दिया। सहाबा किराम रज़ि० बुतपरस्तों की औलाद थे, उन्होंने चमकाने वाले उसूल अख़्तियार किए तो अल्लाह ने उनको चमका दिया। अल्लाह की रिश्तेदारी किसी से नहीं है, उसके यहां उसूल और ज़ाबता है।

दोस्तो! अपने को इस मेहनत पर झोंक दो कि हुज़ूर सल्ल० की उम्मत में उम्मतपना आ जाए, उसमें ईमान व यक़ीन आ जाए। यह ज़िक्र व तस्बीह और तालीम वाली, ख़ुदा के सामने झुकने वाली, ख़िदमत करने वाली, बरदशत करने वाली, दूसरों का एज़ाज़ व इक्राम करने वाली उम्मत बन जाए। नजवा न करने वाली, नाफ़रमानी न करने वाली, अपने भाइयों और साथियों को हक़ीर न समझने वाली, उनका मज़ाक़ न उड़ाने वाली, टोह में न रहने वाली और ग़ीबत न करने वाली उम्मत बन जाए। अगर किसी एक इलाक़े में भी यह मेहनत इस तरह होने लगे, जिस तरह होनी चाहिए तो सारी दुनिया में बात चल पड़े।

अब इसका एहतिमाम करो कि अलग-अलग क़ौमों, इलाक़ों और तबक़ों और अलग-अलग ज़ुबान वालों को जोड़-जोड़ कर जमाअतों में भेजो और उसूल की पाबन्दी कराओ, फिर इनशाअल्लाह उम्मत बनने वाला काम होगा और शैतान और नफ़्स ख़ुदा ने चाहा, तो कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे।'

इसके बाद हज़रत मौलाना ने देहात में मेहनत करने और फ़िज़ा बनाने पर ख़ास तौर से ज़ोर दिया और मामूल की तरह दुआ पर तक़रीर ख़त्म हुई।

पाकिस्तान में हज़रत जी के

आख़िरी सफ़र की रूदाद

—हज़रत मौलाना जमील अहमद साहब मेवाती ख़लीफ़ा मजाज़ हज़रते अक़्दस रायपुरी (रह०)

जो वाक़ियात मैंने अपनी आंखों से देखे, उनको ज़िक्र किया गया है, बाक़ी बहुत-सी बातें किसी से नक़ल की हैं और बहुत-सी बातें ख़ास-ख़ास दोस्तों की ज़ुबानी मालूम हुईं। इस पर यह मज़्मून पूरा किया गया है।

—जमील अहमद

मुलतान के बाद कंगनपुर, टल, रावलपिंडी का सफ़र रहा। कंगनपुर में मज्मा काफ़ी था, मगर दिलजमई कम थी। टल में हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू की अजीब कैफ़ियत थी। आपने सादगी और जफ़ाकशी को एक नेमत फ़रमाया कि इस्लाम की असल माया (पूंजी) है और उनकी जवांमर्दी पर फ़रमाया कि यह आज माल हासिल करने पर ख़र्च हो रही है, उसको दीन की इशाअत पर ख़र्च होना चाहिए था। टल के सारे ताजिरों ने तमाम दुकानें और बाज़ार बन्द कर दिए थे। रावलपिंडी में पेशावर मरवान और सुवात तक से देहाती तबक़ा काफ़ी आया हुआ था। जामा मस्जिद सदर में इज्तिमाअ हुआ और मामूल के मुताबिक़ ख़ूब बारिश हुई। रायविन्ड में तशरीफ़ ले गए। दस पन्द्रह हज़ार का मज्मा होगा। खाने-पीने का निज़ाम

भी बहुत अच्छा चला। शहरी तबक़ा काफ़ी आया था। हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू के बयानात भी निराले थे।

कलिमा के नम्बर के साथ रब की इबादत पर बहुत ज़ोर दिया था। एक अरब के शेख़ मुहम्मद सुलैमान साहब, जो कि दम्माम म्युनिसिपेलटी के सदर हैं और इंश्योरेंस के मुहकमा डायरेक्टर भी हैं, वे भी भाई अब्दुस्सत्तार अल-ख़ुबर वालों के साथ रायविन्ड पहुंच गए थे। उनका बयान भी हुआ। उन्होंने उलेमा किराम की तालीम के साथ हलक़े में शिरकत भी फ़रमाई और बयान भी अजीब अन्दाज़ और दर्द से फ़रमाया कि अलग-अलग दौरों में अल्लाह तआला मुख़्तलिफ़ बुज़ुर्गों से अपने दीन का काम लेते रहे और इस सदीमें हज़रत शेख़ मुहम्मद इलयास साहब नव्वरल्लहु मर्क़दहू से काम लिया है और उम्मत की रहबरी फ़रमाई है। अब मसला उलेमा किराम के हाथ में है। अगर आप खड़े हो जाएं तो उम्मत की डूबती कश्ती सलामती के साथ मंज़िल तक पहुंच जाएगी और इस काम के ज़ाहिर होने के बाद अगर इसमें ग़फ़लत हुई तो अज़ीम ख़तरा है। उलेमा किराम के मज्मे को ख़ूब रुलाया और ख़ुद भी रोए। तीन-चार अलग-अलग कॉलेजों के तलबा भी आए हुए थे। उनसे ख़ालिद साहब लेक्चरार अलीगढ़ युनिवर्सिटी ने ख़ुसूसी बातचीत की। तलबा ने बहुत अच्छा असर लिया। उन्होंने बतलाया कि किस तरह अलीगढ़ युनिवर्सिटी कम्युनिज़्म का अड्डा बनी हुई है और अब फिर किस तरह दीन की फ़िज़ा इस काम की बरकत से पैदा हो रही थी और अब के अलीगढ़ के तमाम प्रोफेसरों का इज्तिमाअ हुआ और उसमें हज़रत जी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू की तक़रीर हुई।

आपने फ़रमाया कि विलायत की दो क़िस्में हैं—

एक यह कि सब कुछ छोड़ कर जंगलों में निकल जाना और तज्क़िया अख़्तियार कर लेना और अल्लाह तआला जल-ल शानुहू की तरफ़ चलना। यह विलायत का अदना दर्जा है।

और दूसरा विलायत का आला दर्जा है कि जिस शोबे में चल रहे हैं, उसको विलायत वालों की सिफ़तों से चलाना, उसके लिए अपने-अपने शोबों से निकल कर, अपना-अपना यक़ीन, इबादत और अख़्लाक़ बनाने की ज़रूरत

है। इन चीज़ों को बनाकर फिर शोबों में लगा जाए। अब के कॉलेज के तलबा ने कसरत से औक़ात लिखाए, सत्तर जमाअतें निकलीं। जमाअतें रुख़्सत होने के वक़्त हज़रत जी रह० की रिक़्क़त अंगेज़ तक़रीर ने अरब शेख़ तक को रुला दिया। इज्तिमाअ के बाद जनरल साहब के यहां और अब्दुर्रहमान साहब क़ुरैशी जी.एम.ए.डी.सी. के यहां अफ़सरों का इज्तिमाअ हुआ। दोनों जगह मिलाकर तक़रीबन एक सौ अफ़सरों, कॉलेज के प्रोफेसरों ने बात को सुना। लाहौर में तीन रात क़ियाम के बाद एक दिन के लिए नौनार गांव नारुवाल के पास मेवाती लोगों का इज्तिमाअ रहा।

इस इज्तिमाअ में हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने सकरातुल मौत और ग़मरातुल मौत से बचने की बार-बार दुआ की। हज़रत जी रह० को इससे पहले कभी इतनी कसरत से यह दुआ करते हुए नहीं सुना था। इस इलाक़े के इज्तिमाअ से हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू बहुत ख़ुश हुए और इलाक़े को दुआ भी दी। इस इज्तिमाअ में एक पीर साहब भी बैअत हुए, ईसाई भी बयान में शरीक रहे और बहुत असर लिया।

फिर तीन दिन रायविन्ड ठहरे और हर सुबह मुख़्तलिफ़ ईमान अफ़रोज़ बयान हुए। एक दिन बयान किया, उम्मत कैसे बनी? और उसका उरूज व ज़वाल क्या होता है? एक दिन फ़रमाया, यह काम क्या है? दावत, नज़्म, ज़िक्र व नमाज़ को ज़िंदा करना और इंतिज़ामी मामले सब इसके ताबेअ हैं, असल नहीं हैं और इनको काम न बनाया जाए और तीसरे दिन यह फ़रमाया, इस काम से माहौल बनेगा और किसी के दिल में दर्द पैदा होगा और फ़िक्र लगेगा कि यह उम्मत किस तरह से यहूदियों और ईसाइयों के हाथ से छूटे और उसकी दर्द भरी आह व ज़ारी पर अल्लाह की जानिब से इस उम्मत के दोबारा चमकने की शक्ल पैदा होगी, जैसे तातारियों के ज़मानें में 22 लाख मुसलमानों में से 17 लाख मुसलमानों को शहीद कर दिया था, फिर हज़रत शेख़ुल मशाइख़ सैयदना शहाबुद्दीन सहरवरदी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के फ़िक्र पर दरवाज़ा खुला। अकबर के दीने इलाही पर हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी क़ुद्दिस सिर्रुह के हाथों दरवाज़ा खुला। ख़ुसूसी मज्लिसों और मश्वरों में अजीब-अजीब नसीहतें फ़रमाते रहे। तबियत पर मश्रिक़ व

मग़्रिब के 52 रोज़ा सफ़र का असर था। कमज़ोरी और नक़ाहत के असरात थे, देहातों के काम के बढ़ाने पर ख़ुसूसी ज़ोर दिया और फ़रमाया, अगले साल हमारे सफ़र में इज्तिमाओं को देहातों में रखा जाए और शहरी तबक़े को देहात की फ़िज़ा में लाकर बात सुनाई जाए, सरहदी इलाक़े में काम को बढ़ाया जाए और मश्रिक़ी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) में कोशिश को बढ़ावा दिया जाए और इस्लामी मुल्कों में जमाअतों को भेजा जाए। ये ख़ुसूसी तक़ाज़े बयान फ़रमाए। शफ़क़त बहुत थी।

(जुमारात, पहली अप्रैल को) अस्र बिलाल पार्क में पढ़ी। बुध के दिन से गले से मेदे तक सांस की नली में चुभन की शिकायत करते रहे। उस दिन बयान फ़रमाने को तबियत आमादा नहीं हो रही थी। लाहौर के दोस्तों ने ज़ोर दिया कि शहरी मज्मा कसीर तायदाद में आया हुआ है और मस्जिद ऊपर नीचे से भरी हुई है और यह इस सफ़र की आख़िरी तक़रीर होगी, क्योंकि जुमा को रेल से रवानगी थी। तबियत के ख़िलाफ़ हिम्मत करके उठ खड़े हुए और सवा घंटे तक लम्बी तक़रीर फ़रमाई। आवाज़ में कमज़ोरी थी और दर्द ज़ाहिर था। तक़रीर से पहले मौलाना इनामुल हसन से फ़रमाया कि हमारी मंज़िल पूरी हो चुकी है। उन्होंने अर्ज़ किया, अभी तो मुल्कों के फ़ैसले कराने हैं। हज़रत जी क़ुद्दिस सिर्रुह ने फ़रमाया, स्कीम तो तैयार हो गई है, अब करने वाले तो करते रहेंगे। फ़रमाया, बड़े हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि ने किस उम्र में विसाल फ़रमाया? अर्ज़ किया, 63 साल। फ़रमाया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने? अर्ज़ किया 63 साल और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने? अर्ज़ किया 63 साल में इंतिक़ाल फ़रमाया। कुछ देर सकता फ़रमाया, फिर फ़रमाया, 63 साल ठीक है। मौलाना इनामुल हसन साहब ने फ़रमाया, यह मश्वरा की चीज़ थोड़ी है कि सब अपने लिए तै कर लें।

मौलवी शम्सुद्दीन क़ारी बदरुद्दीन मेवाती के भाई से फ़रमाया, तुम सब हिन्दुस्तान छोड़ आए हो। वह ख़ामोश मुअद्दब खड़े रहे, फ़रमाया, अच्छा, हज़रत शेख़ वहां हैं, बहुत काफ़ी हैं, फिर तक़रीर के लिए तशरीफ़ ले गए और तक़रीर के दौरान पसीना आता रहा। डेढ़ घंटा बयान फ़रमाया। तश्कील के वक़्त थक चुके थे, मगर जब्र करके बैठे रहे क्योंकि इज़्ज़त पुरी साहब के यहां

का निकाह पढ़ाना था और सर से टोपी उतार दी और पसीना पोंछते रहे। ठंडा पानी मंगवा कर दिया। सांस की नाली की तक्लीफ़ को इस तरह पानी पी-पीकर दूर किया करते थे। निकाह और दुआ मुख़्तसर कराई और अन्दर से निकल कर बाहर तशरीफ़ ले आए, मस्जिद से निकल कर बाहर तशरीफ़ ले आए। मस्जिद से निकल कर हाजी साहब की बैठक के सामने फ़रमाया, मुझको संभालो।

साद बिन सिद्दीक़ साहब और रियाज़ लाहौरी ने गले और कमर को हाथों से सहारा दिया। भाई याक़ूब के दरवाज़े में दाख़िल होते ही लड़खड़ाए और ग़शी छा गई। भाई एहसान याक़ूब वग़ैरह को आवाज़ दी गई और सबने मिलकर चारपाई पर लिटाया। नब्ज़ बन्द हो चुकी थी। मौलवी ज़ियाउद्दीन के भाई हकीम अब्दुल हई साहब को और उनके साहबज़ादे हकीम अहमद हसन साहब थे, उनके पास जेब में जवाहर मोहरा था, वह दूध में दिया गया तो होश आया। लगभग चार-पांच मिनट बेहोश रहे थे, कुछ तबियत संभली तो कर्नल ज़ियाउल्लाह साहब को बुलाया गया। यह दिल के माहिर डॉक्टर हैं। उन्होंने फ़रमाया कि दिल की बीमारी का ज़बरदस्त हमला है, इससे बच जाना एक करामत है। हाथ-पांव ठंडे, नब्ज़ 56, ख़ून का दबाव 90 था। डॉक्टर ने अस्पताल के लिए बहुत ताकीद की और क़तई हरकत से मना किया, यहां तक कि करवट भी ख़ुद न बदलें और कम्बल भी ख़ुद न लिया करें। रात के पौने तीन बजे इशा की नमाज़ पढ़ी। रात बेचैनी में गुज़री, नींद का टीका लगाया गया, कुछ नींद हुई, सुबह को उठे तो तबियत में बशाशत थी। पूछते रहे, रात को क्या हुआ था? एक दोस्त औरंगज़ेब पठान के इलाक़े और वहां के लोगों में काम करने की अहमियत को बताया, फ़रमाया कि यह हमारी रीढ़ की हड्डी है। हकीम अब्दुल हई को फ़रमाया कि जमाअत लेकर जाओ। रात को डॉक्टर साहब ने इशारे से नमाज़ पढ़ने और मुकम्मल आराम करने और बीस दिन क़ियाम करने को फ़रमाया। जुमा की सुबह को हकीम साहब से मालूम किया गया कि आपकी भी यही राय है। उन्होंने कहा कि हमारे दोस्तों में भी इसी राय का ज़िक्र हो रहा है, क्योंकि हरकत होने से दौरे का फिर

ख़तरा हो जाता है। क़ुरैशी साहब से फ़रमाया कि आराम के दौरान में तक़रीर की सिफ़ारिश तो न करोगे। अर्ज़ किया, नहीं। फ़रमाया, अगर तुम्हारा कोई ख़ास आदमी आ गया तो? अर्ज़ किया गया, फिर भी नहीं। फ़रमाया, अगर हमारे जी में आ गया तो? इस पर क़ारी रशीद साहब ने अर्ज़ किया कि हज़रत! हम सब मिलकर आपको रोक देंगे।

अगले दिन सुबह कर्नल ज़ियाउल्लाह साहब ने तशरीफ़ लाते ही पूछा, सांस की कैफ़ियत और खांसी तो नहीं है। कहा गया, नहीं। डॉक्टर साहब ने ज़ोर से अलहम्दु लिल्लाह कहा और कहा, इतनी जल्दी सेहत में तरक़्क़ी हमारे ख़्याल से बाहर की चीज़ है।

अक्सर नब्ज़ 130 रहा करती थी। ख़ून का दबाव 128 था, हालत अच्छी थी। चाय, डबल रोटी खाई। दिल की हरकत का तहरीरी चार्ट कार्डियोग्राम भी लिया। मरज़ अपना असर कुछ छोड़ गया था। अब डॉक्टर साहब ने अस्पताल का ज़ोर नहीं दिया कि डॉक्टर असलम साहब निगरानी करते रहेंगे। नींद आती और आठ-दस मिनट बाद उखड़ जाती। सहारनपुर जाने का इरादा मुलतवी कर दिया गया, ताकि कुछ दिन आराम के बाद जाएं। जुमा का वक़्त हुआ तो हम सब नमाज़ को चले गए। ख़ुत्बे के ख़त्म होने पर सफ़ें सीधी हो रही थीं कि भाई ख़ुदा बख़्श ने डॉक्टर मुहम्मद असलम साहब को ऊंची-ऊंची आवाज़ दी, वह गए, सांस की तक्लीफ़ शुरू हो चुकी थी। क़ाजी अब्दुल क़ादिर साहब को बुलवाया। उनका माथा पहले ही ठनक चुका था। उन्होंने कहा, वक़्त क़रीब है, आप पढ़ें। फ़रमाया, तुम भी पढ़ो। यह तक्लीफ़ दोपहर दो गोलियां खाने के बाद शुरू हो चुकी थी। फ़रमाया, मुझे नमाज़ पढ़ाओ और मुख़्तसर पढ़ाओ। मौलाना इनामुल हसन साहब ने नमाज़ पढ़ाई। डॉक्टर साहब ने फ़रमाया, दोबारा हमला शुरू हो गया है। आक्सीजन के लिए अस्पताल ले जाना ज़रूरी है, तैयार नहीं हो रहे थे। जब हज़रत मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन ने फ़रमाया कि हज़रत! औरतें नहीं होंगी तो तैयार हो गए। इतने में सांस की खड़खड़ाहट शुरू हो चुकी थी। रब्बी अल्लाह रब्बी अल्लाह फ़रमा रहे थे। मौलवी इलयास ने बताया कि शाम की दुआएं पढ़नी शुरू कर दीं,

سُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ......الٰى آخره) 'सुब-हानल्लाहि ही-न तुम्सून०. . . (आख़िर तक) भाई याक़ूब ने कहा कि एक उंगली उठाकर اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ (अन-ज-ज़ वादहू व न-स-र अब्दहू) जिस दिन मक्का शरीफ़ फ़त्ह हुआ था, उस दिन जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो दुआ पढ़ी थी, वह पढ़ने लगे) हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली दुआ पढ़ते रहे और फिर कलिमा पढ़ना शुरू कर दिया और क़ुरैशी साहब की कार में लिटाया गया और लेटते वक़्त अपने जिस्म को अन्दर कार में खींचा जिससे मौलवी इलयास साहब को काफ़ी ताक़त महसूस हुई।

मुफ़्ती साहब भाई गुलज़ार की कार में डॉक्टर मुनीर साहब को आगे लेकर चले, ताकि ऑक्सीजन का इन्तिज़ाम करें। हज़रत जी की कार पीछे आ रही थी। इसमें मौलाना इनामुल हसन साहब, डॉक्टर असलम साहब, मौलवी मुहम्मद इलयास साहब मेवाती थे। रेलवे वर्कशाप का पुल पार करके गढ़ी शाहू के चौक के क़रीब दरयाफ़्त फ़रमाया, अस्पताल कितनी दूर है? अर्ज़ किया गया, अभी आधा फ़ासला बाक़ी है, कलिमा पढ़ रहे थे لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' कहा, इसके बाद ज़ुबान फूल गई, आंखें पथरा गईं। मौलाना इनामुल हसन साहब ने सूरः यासीन पढ़नी शुरू कर दी थी। बस वक़्त मौऊद आ चुका था (29 ज़ीक़ादा 1384 हि०, 2 अप्रैल 1965 ई०, 2 बजे दिन, रूहे मुबारक परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'। इक्कीस वर्ष, जो दिन-रात जान खपती रही, यों अल्लाह की राह में वतन से दूर चली गई। मौलाना इनामुल हसन साहब ने फ़रमाया कि अस्पताल मत ले जाओ, वापस चलो, मगर डॉक्टर असलम साहब का ख़्याल ऑक्सीजन देने का था। पांच-छः मिनट बाद अस्पताल आया। मौलाना इनामुल हसन साहब ने कार में से निकालने को मना फ़रमाया, मगर डॉक्टर असलम के फ़रमाने पर निकाला गया और अस्पताल में लाया गया। चार-पांच मिनट दो-तीन डॉक्टर मिलकर ऑक्सीजन देते रहे, जिस्म को दबाते रहे और दो टीके भी दिए कि दिल की हरकत शायद शुरू हो जाए,

मगर न हुआ। जब डॉक्टर साहब ने मायूसी का इज़्हार किया तो कुछ दोस्त रोने लगे। मौलवी इलयास साहब और हाफ़िज़ सिद्दीक़ साहब ऊंची-ऊंची आवाज़ से रो रहे थे और बेक़ाबू थे। मौलाना इनामुल हसन की तबियत भी भरी हुई थी, मगर ज़ब्त था और

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ اَللّٰهُمَّ اٰجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० अल्लाहुम-म आजुर्नी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़ ली ख़ैरम मिन्हा० पढ़ते थे और पढ़ने की ताकीद फ़रमाते थे।

डॉक्टर साहब के ज़रिए एम्बुलेन्स गाड़ी का इन्तिज़ाम करवाया और हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू को और दूसरे दोस्तों को उसमें सवार कर दिया और बिलाल पार्क पहुंचे। मैंने अज़ीज़ुद्दीन साहब को अस्पताल ही से भेज दिया था कि साबरी साहब कड़ी के ताजिर सहारनपुर को टेलीफ़ोन के ज़रिए इत्तिला भिजवा दें। वह भी टेलीफ़ोन करके आ गए। उन्होंने बतलाया कि साबरी साहब कलकत्ता गए हैं और अब्दुल हफ़ीज़ साहब को पैग़ाम भिजवाया गया। हज़रत शेख़ुल हदीस साहब ने टेलीफ़ोन पर फ़रमाया कि निज़ामुद्दीन शरीफ़ लाने की कोशिश की जाए और अगर मुश्किल हो तो रायविन्ड की कोशिश कर दी जाए। अलग-अलग जगहों पर टेलीफोन कर दिए गए।

जिस वक़्त नाश शरीफ़ अस्पताल से बिलाल पार्क पहुंची तो मज्मा जुमा की नमाज़ के बाद जो सेहत की दुआ मांगने में लगा हुआ था, विसाल की ख़बर पाकर बेचैन हो गया, फ़ौरन मग़्फ़िरत की दुआ की तलब में लग गए। अगरचे दिल ग़मगीन और आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं। मदरसा काशिफ़ुल उलूम जामे बिलाल पार्क के दक्खिनी कमरे में कफ़नाने के लिए मैयत शरीफ़ा को रखा गया। मौजूदा लोगों में से मियां जी अब्दुल्लाह साहब मेवाती, जनाब क़ारी अब्दुर्रहीम साहब मेवाती, हाफ़िज़ मुहम्मद सुलैमान साहब मेवाती, इमाम मस्जिद रायविन्ड, भाई मुहम्मद इब्राहीम साहब मेवाती और दूसरे साथियों ने मिलकर ग़ुस्ल दिया, कफ़न पहनाया और जनाज़े को ज़ियारत के लिए रख दिया गया। ज़ियारत का यह सिलसिला इशा की नमाज़ से पहले तक जारी

रहा। रेडियो पाकिस्तान लाहौर की मुक़ामी ख़बरों में 5½ बजे दिन को यह ग़मनाक ख़बर नश्र की गई।

सरगोधा, लायलपुर, गुजरानवाला, क़सूर, मोनटगोमरी, मुलतान, शेख़पुरा, सियालकोट से अवाम व ख़वास, उलेमा-मशाइख़ पहुंचना शुरू हो गए। लाहौर के दीनी मदरसों के असातज़ा, तलबा के अलावा दर्द व फ़िक्र रखने वालों के अलावा दफ़्तर, कॉलेज के प्रोफ़ेसर, तलबा, साथ ही आम लोग कसरत से जनाज़े में पहुंच गए थे। आन की आन में मस्जिद बिलाल पार्क और मिला हुआ मैदान भर गया। मुक़ामी उलेमा में से हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब अनवर जानशीं हज़रत शेख़ुत्तफ़्सीर मौलाना अहमद अली नव्वरल्लाहु मर्क़दहू, लाहौर, हज़रत मौलाना रसूल ख़ां साहब मद्दज़िल्लहुल आली और दूसरे असातज़ा किराम जामिया अशरफ़ीया और दूसरे तमाम दीनी मदरसों के उलेमा, हाफ़िज़, क़ारी शरीक थे मज्मे पर जो ग़म व रंज का आलम तारी था, वह बयान से बाहर था। वफ़ात की ख़बर सुनकर भी लोग यक़ीन नहीं करते थे कि हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू इंतिक़ाल फ़रमा गए हैं, बल्कि इस ख़बर को ग़लत करने के लिए मुख़्तलिफ़ तावील करते थे कि मुम्किन है कोई और मौलाना यूसुफ़ हों। हज़रत जी तो माशाअल्लाह अभी जवान हैं, तन्दुरुस्त व तवाना हैं, फिर अल्लाह पाक ने अभी उनको बहुत दिन रखना है और बड़ा काम लेना है। फिर इस कम उम्री में तो शायद ही किसी अह्ले हक़ को जाते देखा होगा, मगर ये सब तावीलें अपनी जगह ग़लत साबित हुईं। जब जनाज़े की ज़ियारत की तो वाक़ई सब ने हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ नव्वरल्लाहु मरक़दहू ही को अबदी नींद में ग़र्क़ पाया।

इसमें कोई मुबालग़ा नहीं कि चेहरा-अन्वर की हालत से क़तई तौर पर कोई यह नहीं पहचान सकता था कि हज़रत का विसाल हो गया, बिल्कुल जैसा कि सोये हुए हैं और यह भी नहीं, बल्कि जिस तरह हयात में दीनी दर्द व फ़िक्र के असरात ये चेहरा-ए-अन्वर पर ज़ाहिर होते थे, बिल्कुल यह हालत उस वक़्त भी थी। हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह अन्वर लाहौरी जनाज़े की नमाज़ की नीयत से बिलाल पार्क तशरीफ़ लाए और फिर फ़ौरन ही वापस घर तशरीफ़ ले गए। यह तशरीफ़ ले जाना इसलिए था कि हिजाज़ मुक़द्दस से लाया हुआ

इत्र जो उन्होंने अपने वालिद मरहूम हज़रत शेख़ुत्तफ़्सीर मौलाना अहमद अली लाहौरी नव्वरल्लाहु मरक़दहू की वफ़ात के वक़्त लगाया था, उसमें से आधा बाक़ी रखा था, उसको लाए और इस गुनाहगार को हुक्म फ़रमाया कि अब तो मज्मा ज़्यादा है, मज्मा घट जाने पर हो सके तो हज़रत मौलाना नव्वरल्लाहु मरक़दहू के लगा देना। अलहम्दु लिल्लाह! तह्दीसे नेमत के तौर पर यह बात ज़िक्र करता हूं, वरना कोई और मुराद हरगिज़ नहीं, इन गुनाहगार हाथों ने वह हरे रंग का इत्र चेहरा-ए-अन्वर, दाढ़ी मुबारक पर ख़ूब ही मला और उस वक़्त यह भी जज़्बा था कि मुम्किन है अल्लाह तआला मुझे अपने इस मक़्बूल बन्दे के इत्र लगाने के ही सबब कल क़ियामत में मेरी बख़्शिश फ़रमा दें।

एक बात तह्दीसे नेमत के तौर पर अर्ज़ करता हूं कि जिस तरह हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने की वजह से उनके मुजाहदे और क़ुर्बानी देने की बरकत से अल्लाह पाक ने हब्शा वालों को और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की बरकत से फ़ारस वालों को इस्लाम की तरफ़ पलटा दिया, मैं तो उस मेवाती क़ौम के कुफ़्र व शिर्क की सरहदों से पलट आने का सबब और हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास नव्वरल्लाहु मरक़दहू, हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ नव्वरल्लाहु मरक़दहू और इस ख़ानवादा-ए-मुबारक के पिछले बुज़ुर्गों की तवज्जोह का क़ौम की तरफ़ मब्ज़ूल होना और क़ौम का दीन की बात पर लब्बैक कहना, जबकि तब्लीग़ की इस तहरीक की यू०पी० के पढ़े-लिखे लोगों ने भी अव्वल-अव्वल क़ुबूल नहीं किया, सिर्फ़ यह ही वजह समझता हूं कि हज़रत सैयद अहमद शहीद मुजाहिदे अज़ीम नव्वरल्लाहु मरक़दहू के साथ करीमुल्लाह ख़ां मेवाती शहीद, हिम्मत ख़ां मेवाती शहीद और वज़ीर ख़ां मेवाती शहीद ने आख़िर दम तक साथ दिया, बल्कि करीमुल्लाह ख़ां मेवाती को तो हज़रत रह० के साथ वालिहाना इश्क़ था। हज़रत रह० के साथ ही साथ रहा, यहां तक कि जान दे दी। ये मेवाती शुहदा क़स्बा नूह के रहने वाले थे। सीरत सैयद अहमद शहीद, मुरत्तबा मौलाना ग़ुलाम रसूल मेह्र ने तफ़्सील के साथ इन शहीदों के वाक़िए नक़ल किए हैं। इन तीनों शहीदों की क़ुर्बानी ने अह्ले हक़ को इस क़ौम की तरफ़ मुतवज्जह किया। असल में तो अल्लाह सुब्हानहू की रहमत का मुतवज्जह होना था। हज़रात अह्लुल्लाह तो मज़्हर हैं और जिस तरह वे तीनों शहीद हज़रत सैयद अहमद शहीद

नव्वरल्लाहु मर्क़दहुम के साथ आख़िर दम तक रहे, उसी तरह मौलाना मुहम्मद इलयास क़ुद्दिस सिर्रुहू हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ क़ुद्दिस सिर्रुहू इन मेवाती लोगों से ख़ुश-ख़ुश रुख़्सत हुए। हज़रते अक़्दस क़ु-त-बुल इर्शाद मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के ग़ुस्ल में अज़ीज़म मुहम्मद सुलैमान मेवाती ग़ोता वाले मियां जी मुहम्मद सुलैमान मर्द खड़ा वाले इस तौर पर शरीक रहे कि पानी लाकर देने की सआदत हासिल करते रहे।

भाइयो! कोई कहानी सुनाना मक़्सूद नहीं हम तो इन चीज़ों को हफ़्त अक़्लीम से भी बेहतर समझते हैं। अल्लाह तआला ने इस क़ौम में हज़ारों हाफ़िज़, सैकड़ों आलिम और क़ारी, जिसमें उस्ताज़ुल उलेमा मेवात हज़रत मौलाना अब्दुस्सुब्हान मेवाती नव्वरल्लाहु मरक़दहू और उनके साहबज़ादे साथ ही हज़रत मौलाना नियाज़ साहब पैदा फ़रमाए। मज्मा बढ़ता चला गया। रात को इशा की नमाज़ के बाद 9 बजे जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गयी। मौलाना इनामुल हसन साहब ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। 10 ½ बजे दोबारा हज़रते अक़्दस जानशीने बरहक़ हज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब दा-म मज्दुहुम ने रहे-सहे लोगों के साथ जनाज़ा पढ़ा, क्योंकि हज़रात सरगोधा से देर में पहुंचे थे, साथ ही मुलतान से और मुक़ामी सैकड़ों लोग देर से पहुंचने की वजह से जनाज़े की नमाज़ से रह गए थे। 11 बजे इत्तिला आई कि चार्टर जहाज़ एक बजे तैयार रहेगा, 12 बजे हवाई अड्डे पर पहुंचे। एक संदूक़ में रज़ाई रखकर लिटाया गया। डेढ़ बजे रात को जहाज़ उड़ा। मौलाना इनामुल हसन साहब छः साथियों के साथ थे, हाफ़िज़ सिद्दीक़ साहब, मौलवी मुहम्मद उमर साहब, हाजी अहमद साहब, क़ारी रशीद साहब, मौलवी मुहम्मद इलयास साहब मेवाती, मियां जी इस्हाक़ साहब मेवाती। मौलाना इनामुल हसन साहब ने फ़रमाया, बाक़ी सब जोड़ियां हैं मेरे सिवा। हवाई अड्डे पर मुख़्तसर सी बात भी फ़रमाई कि हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू कहते चले गए, अब करते रहने की ज़रूरत है। जो करेगा, अल्लाह की मदद उसके साथ होगी। याद दिलाया कि हज़रत जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू भाई ख़ुदा बख़्श, चौधरी नज़ीर साहब से बात करना चाहते थे, मगर न कर सके। चुनांचे उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत

जी नव्वरल्लाहु मरक़दहू यह ही चाहते होंगे कि इस काम को असल बनाया जाए और दूसरे ज़ाती मशाग़िल में निगरानी के अलावा कोई काम ज़िम्मे न लिया जाए। कल[1], सनीचर के 11.30 बजे टेलीफ़ोन किया, मालूम हुआ कि ख़ैरियत से रात के तीन बजे पहुंच गए। हज़रत शेख़ दा-म मज्दुहू रात ही को तशरीफ़ ले आए। सुबह 9 ½ जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गई। लगभग 11 बजे दिन को तद्फ़ीन अमल में आई।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُوْ الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

कुल्लु मन अलैहा फ़ानिंव-व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल जलालि वल इकरामि०

क़ता

तारीख़े विसाल

आसमां चुप है, दीवार व दर अश्क बार
आ रही है कहां से सदा-ए-हज़ीं
किसकी रहलत की हातिफ़ ने दी यह ख़बर
कर दो फ़ानी रक़म 'तुरबते अंबरी'
(1384 हि०) —फ़ानी कोपागंजी

1. 3 अप्रैल सन् 1965 ई० को तद्फ़ीन अमल में आई।

नापायदार हयात के आख़िरी लम्हे

दावत व तब्लीग़ के क़ाइद व रहनुमा मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बर्र-दल्लाहु मज़-जअहू की वफ़ात ऐसा अलमनाक वाक़िया है, जिसकी याद मुद्दतों ताज़ा रहेगी और हज़ारों दिल इस अलमिया से टीस महसूस करते रहेंगे। यह वाक़िया कोई अनोखा वाक़िया नहीं है, इस फ़ानी दुनिया में हर आने वाले को आख़िरकार जाना है, लेकिन कई वजहों से इस वाक़िए की अलमअंगेज़ी ज़्यादा है। इनमें से एक वजह यह थी कि यह हादसा इस तेज़ी से वाक़े हुआ कि सामने देखने के बावजूद इसका यक़ीन नहीं आ रहा था। मौलाना रह० की बीमारी भी अचानक ज़ाहिर हुई और इंतिक़ाल भी यकायक ही हुआ। इस वाक़िया की, जो तफ़्सीली बातें मुश्फ़िक़ मुकर्रम मौलाना मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब की बातों और उनकी दी हुई डायरी से मिल सकीं और जो बातें कुछ दूसरे दोस्तों से हुईं, वे नीचे दी जा रही हैं।

जी चाहता है हम मदीना तैयिबा में रहें

आख़िरी दिनों में मौलाना अलैहिर्रहमः 27 ज़ीक़ादा (31 मार्च) आप रायविन्ड में थे। दोपहर के वक़्त ख़ास दोस्तों के हलक़े में बैठे थे, फ़रमाने लगे, 'जी चाहता है, यहां (पाकिस्तान में) भी तब्लीग़ी काम चल जाता और हिन्दुस्तान में भी और हम मदीना तैयिबा में रहते। दोस्तों ने इस इज़्हारे आरज़ू को कोई अहमियत न दी। सफ़र जारी रहा। लाहौर तशरीफ़ ले आए और प्रोग्राम के मुताबिक़ अपनी कोशिशों में लग गए।

अब तो मंज़िल तै हो चुकी

जुमा की रात, यानी 28 ज़ीक़ादा (पहली अप्रैल, जुमारात) कोई सवा आठ बजे का वक़्त है, कुछ मुख़्लिस कारकुन इसरार कर रहे थे कि मौलाना इस वक़्त ख़िताब फ़रमाएं। हज़रत मौलाना मरहूम बहुत थके हुए थे और तबियत

भी मुतास्सिर थी। ख़ुसूसी अह्बाब मौलाना इनामुल हसन साहब और मौलाना मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन भी साथ में थे। मौलाना मरहूम ने तबियत की ख़राबी का ज़िक्र फ़रमाया। मोहतरम मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन से फ़रमाने लगे, मुफ़्ती साहब! यह सीने का दर्द एक अर्से से चल रहा है। ये डॉक्टर हज़रात इसका इलाज नहीं कर पा रहे। मुफ़्ती साहब ने अर्ज़ किया, हज़रत! इससे पहले तो आपने कभी इसका ज़िक्र नहीं फ़रमाया। फिर मुफ़्ती साहब क़रीब बैठे हुए हकीम साहब से फ़रमाने लगे, हकीम साहब! इस दर्द के बारे में क्या राय है? हकीम साहब ने फ़रमाया, गैस की वजह से दर्द है। अभी खाने के बाद दवा दे दी जाएगी। यह शिकायत इनशाअल्लाह दूर हो जाएगी। मौलाना रह० फ़रमाने लगे—

मुफ़्ती साहब! मेरी तश्ख़ीस भी सुनिए। मुफ़्ती साहब और दूसरे अह्बाब मुतवज्जह हुए। मौलाना ने फ़रमाया, जब मुझे यह दर्द परेशान करता है तो मैं ख़्याल करता हूं कि मैं सुपारी बहुत ज़्यादा खाता हूं, सुपारी के कुछ टुकड़े ऊपर आ गए हैं, तो मैं पानी का एक गिलास पी लेता हूं। इससे दर्द कम नहीं होता तो मैं एक गिलास और पी लेता हूं, दर्द रुक जाता है, तो मैं समझ लेता हूं कि ऊपर चढ़े सुपारी के टुकड़े नीचे चले गए हैं। मौलाना यह सब कुछ दिल्लगी के तौर पर कह रहे थे और अह्बाब भी इस बातचीत में इसी एतबार से शरीक थे।

इस मरहले पर मौलाना इनामुल हसन साहब ने फ़रमाया, हज़रत! अब उम्र पचास को पहुंच चली, अब आपको मुहतात रहना चाहिए। बे-वक़्त खाना, लम्बी से लम्बी तक़रीरें और बे-वक़्त सोना। अब इस उम्र में बहुत ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब ने इंतिहाई संजीदगी से फ़रमाया, 'अब तो मंज़िल तै हो चुकी।'

मौलाना इनामुल हसन : अभी तो मश्रिक़ी ताक़तों में फ़ैसला कराना है, इसके बाद इस्लाम के चमकने का ज़माना आएगा। अभी तो सिर्फ़ बात समझाई जा रही है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० : पॉलीसी तै हो चुकी। अब तो दूसरे अमल करें।

मौलाना इनामुल हसन साहब : उम्र अगर मश्वरे से तै करना हो तो कर लीजिए।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० : हज़रत वालिद अलैहिर्रहमः की उम्र कितनी थी?

मौलाना इनामुल हसन : 63 वर्ष

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० : हुज़ूरे अक्रम सल्ल० **और सैयदना अबूबक्र** रज़ि० की उम्र?

मौलाना इनामुल हसन : 63 साल

इस पर मौलाना अलैहिर्रहमः फ़रमाने लगे—अच्छा चलें, लोग इन्तिज़ार कर रहे हैं, कुछ कह दें। यह फ़रमाया और मस्जिद की तरफ़ चल दिए। मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और ख़िताब शुरू फ़रमा दिया।

इस ख़िताब में मामूल से ज़्यादा वज़ाहत थी और बातें ऐसी फ़रमा रहे थे जो आज ही नहीं इस दावत के रहनुमाओं के लिए लम्बी मुद्दत तक काम आने वाली हैं?[1]

आपने शुरू में 'अल्लाह की सिफ़ात' पर यक़ीन और इबादत में एहसान की हालत पैदा करने पर ज़ोर दिया और फ़रमाया कि अगर नमाज़ वह नमाज़ हो जो अल्लाह को सामने देखते हुए अदा की जाए, तो इस नमाज़ से वह सब कुछ मिलता है, जिसके लिए इंसान न जाने क्या कुछ करता है। आपने यह वाक़िया इसी सिलसिले में फ़रमाया—

सैयदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में क़ह्त पड़ा। हज़रत उमर रज़ि० ने अम्र बिन आस रज़ि० को लिखा। उन्होंने जवाब में लिखा कि ग़ल्ले से लदे हुए ऊंटों का ऐसा क़ाफ़िला भेज रहा हूं जिसका पहला ऊंट मदीना तैयिबा में और आख़िरी ऊंट मिस्र में होगा। इस ग़ल्ले से बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया। एक ऊंट में दस-दस हज़ार लोगों को खाना खिलाया जा रहा था। इसी दौरान एक आदमी ने ख़्वाब में हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा। आपने उस सहाबी से फ़रमाया, उमर रज़ि० से कहो, तुम्हें क्या हो गया? तुम तो बहुत अक़्लमंद थे।

---

1. यह तक़रीर हमारे इदारे से छप चुकी है।

यह ख़्वाब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० को सुनाया गया। ताबीर (स्वप्न फल) समझ में न आई। लोगों से पूछते रहे कि बताओ मुझमें कौन-सी तब्दीली वाक़े हुई है। जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात फ़रमाई है? एक आदमी ने कहा, बात सिर्फ़ इतनी है कि उमर की नमाज़ हक़ीक़ी और बनी हुई थी। दुआ क़ुबूल होती है तो उसे छोड़कर इंतिज़ाम के चक्कर में क्यों पड़े हुए हो?

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने दुआ के लिए हाथ उठाए, दुआ की तो बादलों का नाम व निशान नहीं था। दुआ जारी रही, बादल उठे और उन्हीं में से आवाज़ आई, 'अल-ग़ौसु या अबा हफ़्स!' (अबू हफ़्स उमर! तुमने जो मदद तलब की थी, वह मदद आ गई है।) मौलाना अलैहिर्रहमः फ़रमा रहे थे–

अगर तुमने अपनी दुकान में, अपने कारोबार में और अपने तौर-तरीक़ों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़ों को दाख़िल कर लिया और सब कुछ हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर किया, तो इस तरीक़े से बनाया हुआ झोंपड़ा मुश्रिकों और काफ़िरों की ढाई लाख से बनी हुई कोठी से ज़्यादा क़ीमती है और अगर तुमने अपने घर के नक़्शे में हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर अमल किया, तो तुम्हारे झोंपड़े को राकेट नहीं तोड़ सकेगा। हुज़ूर सल्ल० के तौर-तरीक़ों की वजह से तुम्हारा यह झोंपड़ा क़ीमती है। जो तुमने बे-क़ीमत मिट्टी से बनाया, यह क़ीमती कैसे बनी, इस मिट्टी की तो कोई क़ीमत नहीं है, यह तो बे-क़ीमत ही है, क़ीमत तो हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े की है अगर सातों ज़मीन व आसमान कोठी हो और सबको सोने से भर दिया जाए तो हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर बनी हुई पांव धरने और पाख़ाना करने की जगह के बराबर नहीं और यक़ीन करो कि हुज़ूर सल्ल० की मुआशरत से अल्लाह तआला मिलेगा, हालात दुरुस्त होंगे और अगर यहूदी और ईसाई के रास्ते पर मुआशरत उठाओगे तो हालात ख़राब से ख़राबतर होते चले जाएंगे।

इस क़िस्म के असरदार और दिलनशीं होने वाले जुम्लों से भरपूर तक़रीर ख़त्म की, मामूल के मुताबिक़ जमाअत की तश्कील की। इसके बाद अब्दुल हमीद पुरी के साहबज़ादे का निकाह हुआ और मामूल के ख़िलाफ़ आपने

मुख़्तसर दुआ फ़रमाई और मस्जिदे बिलाल पार्क से मिली हुई रिहाइशगाह की तरफ़ चल दिए।

दिल का हमला

अहाता मकान में दाख़िल हुए तो ग़श खाकर गिर पड़े। दोस्तों ने उठाया और चारपाई पर लिटा दिया। मोहतरम एहसान साहब भागे हुए मस्जिद में आए और मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब से कहा कि हज़रत जी को ग़शी हो गई है, किसी को लाइए। मुफ़्ती साहब हकीम अहमद हसन को लेकर फ़ौरन पहुंचे। हकीम साहब ने नब्ज़ देखी तो इंतिहाई कमज़ोर हो चुकी थी। हाफ़िज़ सिद्दीक़ साहब ने फ़ौरन जेब से जवाहर मोहरा की शीशी निकाली। मुफ़्ती साहब दूध लाए तो उसमें जवाहर मोहरा हल करके हज़रत के मुंह में चम्मच डाला। आपने ले लिया तो तीन चम्मच और डाला। इससे थोड़ी देर बाद नब्ज़ बहाल हो गई, पर लगभग आधा घंटे बाद पसीना आने लगा। हकीम साहब ने फिर नब्ज़ देखी और मोहतरम क़ुरैशी साहब (अमीर जमाअत तब्लीग़, मग़्रिबी पाकिस्तान) ने कहा कि विटामिन बी का इंजेक्शन लगाना चाहिए। क़ुरैशी साहब ने कहा कि अगर इलाज करना है तो हम डॉक्टर साहब को बुलाते हैं, चुनांचे डॉक्टर मुहम्मद असलम साहब और हाजी मुहम्मद अफ़ज़ल साहब (सुलतान फ़ाउन्ड्री, लाहौर) गए और कुछ अर्से के बाद डॉक्टर कर्नल ज़ियाउल्लाह साहब को ले आए। उन्होंने मुआयना किया, इंजेक्शन और कुछ दूसरी दवाएं तज्वीज़ कीं।

इशा की नमाज़ अदा की गई

इन दवाओं के इस्तेमाल के बाद देखा कि इजाबत कपड़ों में ही हो गई है। तहारत और तयम्मुम के बाद इशा की नमाज़ पढ़वाई गई। नमाज़ के बाद तमाम अहबाब आपके पास ही रहे, लगभग पौने तीन बजे नींद आ गई तो अक्सर ख़ुद्दाम कमरे से बाहर चले गए।

सुबह सवा पांच बजे आंख खुली तो फ़रमाया कि नमाज़ का वक़्त हो गया? मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब ने फ़रमाया, हज़रत हां! आपने फ़रमाया, क्या वुज़ू कराएंगे? मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया, नहीं तयम्मुम! मौलाना अलैहिर्रहमः

ने पूछा, क्या नमाज़ बैठकर अदा करूं? मुफ़्ती साहब ने कहा, नहीं हज़रत! सिर्फ़ इशारे से। चुनांचे यह नमाज़ इशारे से अदा हुई। नमाज़ के बाद मौलाना साहब रह० ने फ़रमाया, चाय पिलाओगे?

मुफ़्ती साहब ने अर्ज़ किया, 'हज़रत! जी चाहता है कि थोड़ी देर और सो जाऊं, फिर चाय पिएंगे।' तो फ़रमाया, 'मेरा भी जी सोने को चाहता है।' चुनांचे आप सो गए।

मुफ़्ती साहब सात बजे आए तो हज़रत मरहूम गहरी नींद सो रहे थे और ख़र्राटे ले रहे थे। वह बाहर बैठ गए। हकीम अहमद हसन साहब और क़ुरैशी साहब भी तशरीफ़ लाए और बाहर ही बैठ गए। सात बजे जागे। ये तीनों हज़रात आपके पास बैठ गए।

मौलाना रह० : (मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन से मुख़ातब होकर) रात क्या हुआ था?

मुफ़्ती साहब : हज़रत! चक्कर आ गया था।

मौलाना रह० : (हकीम अहमद हसन ने मुख़ातब होकर) 'मेरी नब्ज़ देखिए!' उन्होंने नब्ज़ देखी और कहा, 'अलहम्दु लिल्लाह! अब तो ठीक है!'

मौलाना रह० ने हकीम साहब से पूछा, 'रात क्या हुआ था?'

हकीम अहमद हसन साहब : दिल का दौरा था।

मौलाना ने मुफ़्ती साहब की ओर देखा, तो मुफ़्ती साहब आगे बढ़े।

मेरे तो दिल ही नहीं है

मुफ़्ती साहब : (मुफ़्ती साहब ने हज़रत के हाथ पर अपना मुंह रखा और अर्ज़ किया) 'हज़रत! इन हकीमों, डॉक्टरों को दिल के हाल का क्या पता? दिल का हाल तो दिल बनाने वाला जाने या दिल वाला जाने।'

मौलाना रह० : (इस पर हंसे और फ़रमाया), ठीक है और मेरे तो दिल ही नहीं। फ़िक्र की बात तो यह है कि मरने के बाद क्या होगा?

क़ुरैशी साहब : हज़रत! डॉक्टर साहब को बुलाया है, वह आकर तफ़्सीली मुआयना करेंगे, तो मालूम होगा कि रात क्या हुआ था।

मौलाना अलैहिर्रहमः : आप यह इसलिए कह रहे होंगे कि मुझे फ़िक्र लग जाए। जहां और सब दौरे पड़ते रहे, एक दौरा यह भी पड़ गया। यह कोई फ़िक्र की बात नहीं, फ़िक्र की बात तो यह है कि मरने के बाद क्या होगा?

हर तरफ़ जमाअतें भेज दो

इसके बाद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० ने साथियों से पूछा कि क्या जमाअतें रुख़्सत कर दी हैं?

आपको बताया गया, हां, तमाम जमाअतें रुख़्सत कर दी गई हैं।

मौलाना अलैहिर्रहमः ने फ़रमाया, 'हर तरफ़ जमाअतें भेज दो। हज़रत उमर रज़ि० ने यही फ़रमाया था।'

मौलाना मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन के रोज़नामचे की इबारत यह है—

'उस वक़्त हज़रत मरहूम हश्शाश-बश्शाश थे, न चेहरे पर बीमारी की अलामतें थीं और न आवाज़ में कमज़ोरी थी। मैंने अर्ज़ किया, हज़रत! चाय लाएं। फ़रमाया, हां। चुनांचे चाय की दो प्यालियां लेटे-लेटे डॉक्टर साहब की हिदायत के मुताबिक़, छोटी चायदानी से पिलाई गईं। चाय के बाद हज़रत फ़रमाने लगे, क्या पान खिलाओगे? मैंने अर्ज़ किया, ज़रूर खिलाएंगे। मैंने मौलाना इनामुल हसन साहब से पान मांगा, उन्होंने फ़रमाया, आज छालिया और तम्बाकू मामूल से कम देना है और दोनों चीज़ें कम डालीं। क़ारी मुहम्मद रशीद साहब ने मुझसे पान लिया कि मैं तोड़-तोड़ के मुंह में रखूंगा। जब यह पान लेकर हाज़िर हुए तो फ़रमाया, दिखलाओ और फ़रमाया, तम्बाकू कम करो। उन्होंने कम किया, फिर फ़रमाया और कम करो तो और कम किया। इसके बाद पान खा लिया और ग़ालिब ख़्याल यही है कि यह आख़िरी पान था।'

मौलवी इलयास साहब का बयान मुफ़्ती साहब के तवस्सुत से यों पहुंचा है कि—

'इसके बाद मैंने अर्ज़ किया, हज़रत आराम फ़रमा लें, चिल्ला भर की नींद जमा है कुछ तलाफ़ी हो जाए और हम खड़े हो गये। उस वक़्त क़ुरैशी साहब

से मुख़ातब होकर फ़रमाया, आज जाना भी है, तो मैंने अर्ज़ किया, हज़रत इनशाअल्लाह जाएंगे और अपने घर जाना है, जब जी चाहेगा, चले जाएंगे। इस पर क़ारी मुहम्मद रशीद साहब से पूछा, तेरी क्या राय है? तो उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत! जाना है, मगर आज नहीं। तो फ़रमाया, दोनों तरफ़ वाले परेशान होंगे? (मुराद सहारनपुर और दिल्ली थी) क़ुरैशी साहब ने अर्ज़ की कि हज़रत! फ़ोन से इत्तिला कर देते हैं। फ़रमाया, बहुत अच्छा (और हम दोनों जगह सुबह ही तार से इत्तिला दे चुके थे) और एहसान से कहा, तेल लगा दो। वह तेल लगाने लगे, हम बाहर चले गए। साढ़े आठ बजे, डॉक्टर असलम का फ़ोन आया कि कर्नल साहब एक घंटे तक आ सकेंगे, मगर वह लगभग 11 बजे आए और आकर तफ़्सीली मुआयना किया और हज़रत से पूछा, हज़रत! आप क्या खाएंगे? तो हज़रत ने फ़रमाया, जो आप फ़रमाएंगे। डॉक्टर साहब ने फ़रमाया, जी बहुत ख़ुश हुआ, यह हमारा काम है और मरीज़ अगर हमारी राय पर चले तो हमें इलाज में आसानी होती है। अच्छा यह है कि पेशाब भी लेटे हुए करें, वरना कोई उठावे और चारपाई पर पेशाब किया जाए, करवट ख़ुद न लें, यहां तक कि चादर अगर ऊपर सरकानी हो, तो कोई और सरकाए, ख़ुद न हिलें और ग़िज़ा कम खाएं, मगर बार-बार खाएं, ताकि ग़िज़ाइयत पूरी हो, और मेदे पर बोझ न हो। जो कुछ खाना है, वह इन साथियों को बता दूंगा।

डॉक्टर साहब बाहर आ गए। बाहर आकर उन्होंने हमें खाने न खाने की चीज़ें बता दीं। उसी वक़्त क़ुरैशी साहब ने पूछा कि हज़रत पर जाने का भी तक़ाज़ा है, कब तक अन्दाज़ा है? तो डॉक्टर साहब ने फ़रमाया कि पन्द्रह दिन से पहले सफ़र मेरे नज़दीक मुनासिब नहीं है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। इसके बाद डॉक्टर साहब मकान से बाहर आ गए। मैंने अर्ज़ किया, क्या अन्दाज़ा है मरज़ और सेहत के बारे में, तो डॉक्टर साहब ने फ़रमाया, हमला इतना शदीद था कि इससे बच पाना मेरे लिखे-पढ़े में नहीं है और इसकी रिपेयर भी उतनी ही अजीब है और यही रिपेयर यों ही चली तो इनशाअल्लाह फिर यह दौरा कभी न होगा, मगर तीन दिन इंतिहाई एहतियात के हैं।

डॉक्टर साहब रवाना हो गए, हम अन्दर आ गए तो हज़रत ने पूछा, क्या कहते हैं? हमने अर्ज़ किया, अलहम्दु लिल्लाह, बहुत मुतमइन हैं और तोस, हल्का सा मक्खन, चाय ज़्यादा दूध की, किनो संगतरा, केला, शोरबा यख़्नी, सब्ज़ी वग़ैरह खाने को बताया है। अंडा-गोश्त कुछ दिन के लिए मना है। इस पर फ़रमाया, चाय पिला दो। क़ुरैशी साहब ने तोस पर हल्का सा मक्खन लगा कर खिलाया, चाय पिलाई, इसके बाद अर्ज़ किया कि हज़रत आराम फ़रमाएं, हम उठकर चले गए।

ज़कात अदा कर दीजिए

इस हमले के होने के तुरन्त बाद हज़रत अलैहिर्रहमः ने मौलाना इनामुल हसन साहब से फ़रमाया कि 'अमा फ़िल अह्बारि' (मौलाना मरहूम की किताब) पर जो रक़म लगी हुई है, उसकी ज़कात अदा कर दीजिए। मौलाना इनामुल हसन ने कहा, 'हज़रत, बहुत अच्छा'। साथ ही कहा, हज़रत! मैं आपके साथ रहा हूं, माफ़ फ़रमा दीजिए। आपने फ़रमाया, माफ़ किया।

मरज़ का आख़िरी और जानलेवा हमला

नाश्ते के बाद हज़रत मरहूम मग़फ़ूर आराम फ़रमाने लगे, नींद आ गई। डेढ़ बजे मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब अन्दर तशरीफ़ ले गए तो आप आराम फ़रमा रहे थे। मुफ़्ती साहब, डॉक्टर कर्नल ज़ियाउल्लाह साहब की राय सुनने के बाद बहुत ज़्यादा तश्वीश महसूस कर रहे थे। चुनांचे उन्होंने जुमा के ख़ुत्बे से पहले अह्बाब को इस ओर मुतवज्जह किया कि यह इलाज-मुआलजा तो ज़ाहिरी तद्बीरें हैं, मोमिन की हक़ीक़ी तद्बीर तो ज़िंदगी बख़्शने वाले और सेहत अता फ़रमाने वाले रब से दुआ है। हज़रत की हालत तश्वीश से ख़ाली नहीं। ख़ूब-ख़ूब दुआएं की जाएं जो वसीला दुआ मंज़ूर कराने का है, वह अख़्तियार किया जाए। हुज़ूरे सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन ज़रियों को दुआ की क़ुबूलियत के लिए असरदार फ़रमाया है, वे सब अख़्तियार किए जाएं, सदक़ात किए जाएं, रोज़े रखे जाएं, रो-रोकर दुआएं की जाएं।

इस हिदायत के बाद मुफ़्ती साहब ने जुमा का ख़ुत्बा शुरू किया। दूसरे ख़ुत्बे के आख़िर में आवाज़ आई कि मुफ़्ती साहब और क़ाज़ी (अब्दुल क़ादिर) साहब को हज़रत बुला रहे हैं। क़ाज़ी साहब तो उठकर चले गए, मुफ़्ती साहब ने ख़ुत्बा ख़त्म किया और नमाज़ पढ़ाई। अभी दुआ के लिए हाथ उठाए ही थे कि फिर आवाज़ आई कि मुफ़्ती साहब जल्दी आएं। चुनांचे मुफ़्ती साहब फ़ौरन भागे, कमरे में पहुंचे तो हालत ख़तरनाक थी।

मुफ़्ती साहब और मौलाना इनामुल हसन साहब हज़रत को अस्पताल ले जाने पर मश्वरा कर रहे थे। इसी बीच हज़रत ने इन लोगों को देखा और कुछ ऊंची आवाज़ से कहा—

"لَا اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ، لَا اِلٰهَ اِلاَّ اللهُ محمد رسول الله، الله اکبر، الله اکبر، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ لَا شَیْءَ قَبْلَهٗ وَلَا شَیْءَ بَعْدَهٗ لَا شَیْءَ قَبْلَهٗ وَلَا شَیْءَ بَعْدَهٗ"

'ला इला-ह इल्लल्लाहु अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज-ज़ वादहू ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन-ज-ज़ वादहू व न-स-र अब्दहू व ह-ज़-मल अह्ज़ा-ब वह्दहू ला शै-अ क़ब्ल-हू व ला - शै-अ बादहू ला शै-अ क़ब्लहू व ला शै-अ बादहू'०

अस्पताल में तो औरतें होंगी

मुफ़्ती साहब ने हज़रत साहब से पूछा कि यह क्या हो रहा है? तो आपने फ़रमाया, सांस ठीक नहीं आ रही। इस पर मुफ़्ती साहब ने मौलाना इनामुल हसन साहब से कहा कि हज़रत! अगर इस वक़्त आपको अस्पताल ले चलते तो अच्छा था। हज़रत मर्हूम ने इस पर फ़रमाया कि वहां तो औरतें होंगी। मुफ़्ती साहब ने जवाब दिया कि हज़रत! वहां औरतें बिल्कुल नहीं होंगी। हमारे कमरे में कोई औरत नहीं आएगी। हज़रत मर्हूम इस पर भी मुतमइन नहीं हुए और मुन्करात व फ़वाहिश से हक़ीक़ी नफ़रत से भरपूर जज़्बे के साथ

फ़रमाया—

'क्या इसका इन्तिज़ाम हो जाएगा?'

मुफ़्ती साहब ने कहा कि हज़रत इसका इन्तिज़ाम इनशाअल्लाह यक़ीनन हो जाएगा। जब अल्लाह के इस मुख़्लिस और इताअत शआर बन्दे को यह यक़ीन हो गया कि उनका कमरा नर्सों से पाक होगा और वह इस शदीद मजबूरी के आलम में, महज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से इस मुन्कर से बचे रहेंगे, तो आप अस्पताल तशरीफ़ ले जाने पर राज़ी हो गए और फ़रमाया कि लुंगी की जगह पाजामा पहना दो, चुनांचे पाजामा पहना दिया गया।

हम तो चले

बड़ी जल्दी से, अल्लाह की ओर दावत देने वाले को कार पर लिटा कर अस्पताल पहुंचाने के लिए ले चले। मुफ़्ती साहब अस्पताल में इन्तिज़ामी उमूर के लिए दूसरी गाड़ी में रवाना हो गए। हज़रत मर्हूम के साथ क़ुरैशी साहब, मौलवी इलयास साहब और कुछ दूसरे लोग थे।

हज़रत मर्हूम पहले तो सुबह-शाम की मस्नून दुआएं ऊंची आवाज़ से पढ़ते रहे, फिर आवाज़ धीमी हुई और आख़िर में सिर्फ़ होंठ दिल रहे थे। आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

इसी बीच आपने मालूम किया कि, 'तुम्हारा अस्पताल कितनी दूर है? क़ुरैशी साहब ने जवाब दिया, 'हज़रत! लगभग दो फ़र्लांग। इस पर पर आपने फ़रमाया, अच्छा, फिर हम तो चले यह आख़िरी जुम्ला था जो अह्बाब ने सुना, इसके बाद होंठ हिलते रहे और महसूस हो रहा था कि आप दुआएं पढ़ रहे हैं। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०'

बल्ले जलील अल्लाह के हुज़ूर

मोहतरम ज़ैनुल आबिदीन अपनी डायरी में लिखते हैं, अस्पताल पहुंचने पर मैंने देखा, मुंह और नाक से एक झाग निकली हुई थी और ग़ौर से देखा तो नाक के सांस से झाग मिल रही थी, इसके अलावा चेहरा, आंख और नब्ज़ पर मौत के निशान ज़ाहिर हो चुके थे। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔ (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०) दुनिया भर को सफ़र कराने वाले ने आज

चलते-चलते जान जहानें अफ़रीं के सुपुर्द कर दी। उस वक़्त तीन बजने में दस मिनट बाक़ी थे। चार बजे नाशे मुबारक को लेकर वापस बिलाल पार्क आ गए। दफ़्न के बारे में मश्वरा हुआ, तै पाया कि हज़रत शेख़ से पूछा जाए। साढ़े चार बजे सहारनपुर बात हुई। साबिरी साहब ख़ुद न थे, उनके आदमी को पैग़ाम दिया कि हज़रत शेख़ से अर्ज़ करें। हज़रत जी रह० का वक़्त आ चुका, दफ़्न कहां किया जाए? और उससे ताकीद से कहा कि हम साढ़े पांच बजे पूछेंगे, तुम जवाब लेकर फ़ोन पर रहना। चुनांचे साढ़े पांच बजे जवाब मिला कि निज़ामुद्दीन लाना है। आपकी सई का हर मरहला अल्लाह ने आसान किया और 1½ बजे चार्टर जहाज़ निज़ामुद्दीन रवाना हुआ और ज़िंदगी भर के उस मुसाफ़िर ने एक सफ़र मौत के बाद भी कर डाला और पूरी दुनिया के इंसान इस बड़ी नेमत से महरूम हो गए। अस्पताल में वफ़ात के वक़्त ये दो जुम्ले बार-बार मेरी ज़ुबान पर आते थे, موت العالِم۔ موت العالَم 'मौतुल आलिम, मौतुल आलम' और موتوا علی ما مات محمد صلی اللہ علیہ وسلم۔ 'मुतूअला मा मा-त मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम'।

दिल्ली से मिलने वाली इत्तिलाआत के मुताबिक़ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ नव्वरल्लाहु मर्क़दहू का जनाज़ा हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब ने पढ़ाया और आपको हफ़्ते के दिन 30 ज़ीक़ादा 1384 हि० (3 अप्रैल 1965 ई०) साढ़े नौ बजे सुबह आपके जलीलुल क़द्र वालिद मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह० के पहलू में दफ़्न कर दिया गया।

برد اللہ مضجعه ونور مرقده اللّٰهم لا تحرمنا اجره ولا تغشنا بعده

बर्रदल्लाहु मज़-ज-अहू व नव-व-र मर्क़दहू अल्लाहुम-म ला तह्रिमना अज-रहू व ला तग़श्शना बादहू०'

—अल-मुनीर से साभार

हज़रत जी का इंतिक़ाल

—मौलाना मुहम्मद अल-हसनी नदवी, एटीटर 'तामीरे हयात', लखनऊ

○ एक ऐसे दाई का इंतिक़ाल है, जिसका पूरी दुनिया में कोई सानी तलाश करना मुश्किल है।

○ एक ऐसे मुजाहिद का इंतिक़ाल है, जिसने 20 साल में सैकड़ों साल का काम अंजाम दिया।

○ एक ऐसे मुबल्लिग़ का इंतिक़ाल है, जिसकी हिम्मते मर्दाना से दुनिया के बहुत दूर-दूर के हिस्सों में दीनी दावत व इस्लाह का पैग़ाम पहुंच गया।

○ एक ऐसे आलिम का इंतिक़ाल है, जिसकी ज़िंदगी सर ता पा अमल थी।

○ एक ऐसे रूहानी पेशवा का इंतिक़ाल है जो हरदम मैदान में सरगर्मेकार रहा।

○ एक ऐसे बन्दे का इंतिक़ाल है जिसने इस चौदहवीं सदी में क़र्ने अव्वल के इस्लाम का नमूना पेश किया।

○ एक ऐसे उम्मती का इंतिक़ाल है जिसने दुनिया को एक बार फिर सुन्नते मुहम्मदी की ज़िंदा झलकियां दिखाईं।

○ एक ऐसे इंसान का इंतिक़ाल है जिसके काम करने की ताक़त के सामने सैंकड़ों लोगों की कारकर्दगी हेच थी।

○ एक ऐसे साहिबे दिल बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल है, जिसका दिल सोज़ व तपिश की भट्टी था।

और

○ एक ऐसे मुअल्लिम का इंतिक़ाल है जिसने लाखों इंसानों को दीन का इल्म सिखाया। आज हज़रत जी रह० के ग़म में एक पूरी दुनिया सोगवार है।

आसमां उनकी लहद पर शबनम अफ़शानी करे।

आसमां तेरी लहद पर शबनम अफ़शानी करे

ये लाइनें लिखते वक़्त क़लम का जिगर फट उठता है कि आलमे इस्लाम की सबसे बड़ी तब्लीग़ी तहरीक के रहनुमा शेख़े वक़्त और आलिमे रब्बानी हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब लगभग चौथाई सदी तक, लगातार सफ़र, लगातार जद्दोजेहद, लगातार दावत और लगातार नक़ल व हरकत के बाद अब ख़ुदा के जवारे रहमत में आराम कर रहे हैं—

यानी रात बहुत थे जागे, सुबह हुई आराम किया।

يَا يَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ط
فَادْخُلِيْ فِيْ عِبَادِيْ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ.

अल्लाह के उस मक़्बूल व बरगज़ीदा बन्दे ने अपने वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाहि अलैहि की जिस अमानत को उनकी बीमारी के दौरान अपने सीने से लगाया था, उसको आख़िर दम तक इस वफ़ादारी से निभाया कि इश्क़ व मुहब्बत करने वालों, इस राह के फ़िदाकारों और वफ़ादारों और मुहब्बत का दम भरने वालों को भी इस पर रश्क आए, और बड़े-बड़े अज़ीमत वाले और मुहब्बत वाले इस हालत की तमन्ना और इस सआदत के हासिल करने की दुआ करें।

मौलाना की ज़िंदगी की सबसे बड़ी ख़ूबी और सबसे बड़ा कारनामा न तब्लीग़ी काम का फैलाव और उसका आम होना है और न मर्दुमसाज़ी और तर्बियत, उनकी ख़ास बात यह नहीं कि उन्होंने इस काम को हिन्दुस्तान से निकाल कर अरब देशों, और चीन, जापान और यूरोप व अमरीका तक पहुंचा दिया और चलत-फिरत और दौरों को इतना फैला दिया कि अगर उसका माली हिसाब लगाया जाए तो शायद करोड़ों तक पहुंचे। इस काम की वुसअत और तरक़्क़ी की अहमियत और उसके ज़बरदस्त नतीजों से कोई इंकार नहीं, लेकिन

मौलाना की सबसे बड़ी ख़ूबी और उनका असल इम्तियाज़ दो चीज़ों में छिपा हुआ है और ये वे चीज़ें हैं जिनमें मुबल्लिग़ों और दावत व इस्लाह का काम करने वालों के हलक़े में उनका कोई शरीक व हमसर नज़र नहीं आता और ऐसा मालूम होता है कि यह 'बुलन्द रुत्बा' इस अह्द में उन्हीं के साथ मख़्सूस रहा—एक यक़ीन की ताक़त, दूसरे तब्लीग़ व दावत में मुकम्मल फ़नाइयत (फ़ना होना)

उनका असल मौज़ू (विषय) और उनकी आवाज़ यही 'यक़ीन' था और यह यक़ीन उनके रग व रेशे में इस तरह घुस गया था कि उनकी ज़िंदगी का कोई लम्हा या कोई गोशा इससे ख़ाली न था। ऐसा न था कि गोश-ए-तंहाई या इबादत व रियाज़त के वक़्त तो यक़ीन उनको हासिल हो, लेकिन इक़्तिदार की क़ूवत, वजाहत, दौलत, इल्म व फ़लसफ़ा के सामने यह यक़ीन उनका साथ छोड़ दे, अपने मुबल्लिग़ों और मुहब्बत करने वालों के सामने यह यक़ीन पूरी ताक़त के साथ सामने आए और वज़ीरों, हुकूमत वालों या दौलत वालों के सामने उसमें इतनी ताक़त बाक़ी रह जाए। यह यक़ीन उस वक़्त तक हासिल हो, जब तक उसको आज़माने का मौक़ा न आए और इम्तिहान व आज़माइश के वक़्त बे-यार व मददगार छोड़ दे।

मौलाना ने एक बार दावत की शर्तों और आदाब पर तक़्रीर करते हुए फ़रमाया कि जब दो आदमी मिलते हैं तो ऐसा कभी नहीं होता कि कोई किसी से मुतास्सिर न हो या आदमी मुतास्सिर करता है या मुतास्सिर होता है, दर्मियान में कोई दर्जा नहीं है, इसलिए अगर तुम मुख़ातब को मुतास्सिर नहीं कर सके तो यह समझो कि तुम ग़ैर-इरादी तौर पर ख़ुद इससे मुतास्सिर हो चुके हो।

यह बात सबसे पहले ख़ुद मौलाना रहमतुल्लाहि अलैहि पर सादिक़ आती है। वह बड़ी से बड़ी शख़्सियत के सामने उसी क़ूवत, उसी यक़ीन, उसी सराहत, उसी दिलसोज़ी और उसी सतह से बात करते, जो कारे नुबूवत के शायाने शान और मंसबे उलेमा के लायक़ और मुनासिब हो। वह जिस तरह एक आमी से बात करते थे, उसी तरह एक वज़ीर या सफ़ीर या एक करोड़पति और बड़े से बड़े सियासी से बात करते थे, बल्कि शायद इससे

ज़्यादा सराहत और क़ूवत के साथ, पाकिस्तान में एक बार कुछ मुख़्लिस और अह्ले ताल्लुक़ ने जो हुकूमत के ऊंचे ओह्दों पर थे, एक मख़्सूस इज्तिमाअ किया और उसमें हुकूमत के वज़ीरों के आला ओह्देदार और मशहूर शख़्सियतों को दावत दी। मौलाना तशरीफ़ लाए तो इन सबका तआरुफ़ कराया गया कि आप फ़्लां वज़ीर हैं, आप उस महकमे के सिक्रेट्री हैं, आप फ्लां जगह के डायरेक्टर हैं। जब तआरुफ़ का सिलसिला ख़त्म हुआ तो मौलाना ने बात इस तरह शुरू फ़रमाई—

'भाइयो! अभी आपने मालूम नहीं किन-किन ओह्देदारों का तआरुफ़ कराया, इसके बाद आपने कुछ जानवरों का नाम लेकर फ़रमाया और कहा हां, अगर आप यों तआरुफ़ कराते तो शायद मैं ज़्यादा समझ जाता।'

जिन हज़रात ने इन लोगों को दावत दी थी, उनके सर मारे शर्म और डर के झुके हुए थे कि इस बात का क्या असर होता है। आगे मौलाना ने अजीब असरदार और दिलनशीं अन्दाज़ में फ़रमाना शुरू किया कि—

'मेरे भाइयो! वज़ीर तो मुस्लिम भी होता है और ग़ैर-मुस्लिम भी, डॉक्टर मुस्लिम भी होता है और ग़ैर-मुस्लिम भी, इसी तरह तमाम ओह्दों का हाल है। इसमें हमारी और आपकी कोई ख़ुसूसियत नहीं। हमारे बुज़ुर्गों का जब भी तआरुफ़ कराया जाता था, तो यह नहीं कहा जाता था कि इतनी मिलों का मालिक है, इतनी कोठियों का मालिक है और इतनी मोटरों का मालिक है, बल्कि यों तआरुफ़ होता था कि ये बद्री हैं, इन्होंने उहुद में हिस्सा लिया था, इन्होंने फ्लां ग़ज़वा में हिस्सा लिया था और ये इतनी लड़ाइयों में शरीक हुए थे और इन्होंने दीन के लिए ये क़ुर्बानियां दीं।'

इसी दर्द भरे या मुख़्लिसाना अन्दाज़ में लगभग साढ़े तीन घंटे तक़रीर की।

जिन लोगों ने यह जलसा बुलाया था, वे इन्तिज़ार में थे कि देखें, मौलाना की इस तक़रीर का क्या रद्देअमल होता है और ये लोग ग़ैज़ व ग़ज़ब की हालत में वापस जाते हैं या नहीं, लेकिन इसका रद्देअमल सिर्फ़ यह हुआ कि शाम के उमूमी इज्तिमाअ में न सिर्फ़ ख़ुद वे लोग मौजूद थे, बल्कि अपने साथ दूसरे ओह्देदारों को भी लाए थे और स्टेज पर वज़ीरों की तायदाद इससे कहीं ज़्यादा थी, जो उस ख़ास इज्तिमाअ में थी।

यह यक़ीन मौलाना के सीने से चश्मे की तरह उबलता और किसी वक़्त, किसी दिन या किसी हफ़्ते का ज़िक्र नहीं, उसका सोता न सूखता और ऐसा मालूम होता कि वह यह सब कुछ आंखों से देखकर कह रहे हैं कि यह उनका ऐसा हाल और वाक़िया है जिसके लिए किसी बनावट और तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं।

यह यक़ीन उनके पास बैठने वालों या उनकी तक़रीर सुनने वालों को इस तरह मुतास्सिर करता कि कभी उनके मज़्मूनों और उनकी तक़रीरों को पूरी तरह न समझते और ज़ौक़ और तर्ज़े बयान के इख़्तिलाफ़ के बावजूद वह उस गर्मी और हरारत को अपने सीने में मुंतक़िल होते हुए महसूस करते थे या कम से कम इतना ज़रूर समझ लेते थे कि इस आदमी को यक़ीन की जो दौलत हासिल है, वह कम लोगों के पास है। निजी बात-चीत हो या उमूमी, एक लाख का मज्मा हो या एक सौ का, मौलाना हमेशा एक जैसे तर्ज़ और एक जैसी ताक़त के साथ बात करते थे और एक लम्हे के लिए अपने मौज़ू से न हटते थे। वे बातें, जो इस माद्दापरस्ती के दौर में नामानूस हैं और जिनसे अच्छे-अच्छे उलेमा और दीनी रहनुमा मस्लहत के ख्याल से या ज़माने के रुझान से मजबूर होकर या इंसान की माद्दी तरक़्क़ी से मस्हूर होकर परहेज़ करने लगे हैं और चाहते हैं कि उनका ज़िक्र उनकी तह्रीरों और तक़रीरों में कम से कम आए और ज़्यादा ज़ोर मुसलमानों के सियासी व मआशी मसाइल और इस्लाम के जम्हूरी तमद्दुनी मसअलों पर दिया जाए और उसको सिर्फ़ एक सियासी तह्रीक, एक मआशरती निज़ाम, एक इक़्तिसादी तंज़ीम और एक तमद्दुनी इर्तिक़ा के तौर पर पेश किया जाए, वे बातें मौलाना बिला किसी झिझक के और बग़ैर किसी माज़रत के अपनी पूरी ताक़त के साथ पेश करते थे, बल्कि यही उनकी हर बातचीत और तक़रीर का मह्वर होता, आख़िरत पर यक़ीन, ख़ुदा के वायदे पर एतमाद, तवक्कुल, जन्नत का तज़्किरा जहन्नम वालों के वाक़िआत, ग़ैबी हक़ीक़तें और इंसान की रूह की अहमियत, माद्दियत का इंकार, दुनिया और आख़िरत का मुक़ाबला और रसूलुल्लाह और सहाबा किराम की ज़िंदगी और उनकी मिसालें और नमूने, दावत की ताक़त और उसकी तासीर व तस्ख़ीर, यक़ीन की अहमियत और उनकी अक़्ल को हैरत में

डाल देने वाले वाक़िआत, ये चीज़ें थीं, जिन पर मौलाना की तक़रीर मुश्तमिल होती थी, लेकिन इस अक़्लपरस्त बल्कि हवसपरस्त अह्द में और इस बदले हुए ज़ौक़ व रुजहान के बावजूद उनकी ये बातें हर तबक़े और हर हल्क़े को किसी न किसी पहलू से ज़रूर मुतास्सिर करती थीं और इसका सबसे बड़ा राज़ मौलाना की क़ल्बी क़ूवत और यक़ीन की ताक़त थी जो उनके लफ़्ज़-लफ़्ज़ से ज़ाहिर होती थी और अक़्ल के परस्तारों और नफ़्स के गिरफ़्तारों को मुतास्सिर किए बिना न रहती थी।

इसके साथ बातचीत के दौरान और तक़रीर के दौरान ऐसे मआनी का वरूद होता जिसको आउर्द और तकल्लुफ़ या नुक्ता आफ़रीनी से कोई ताल्लुक़ न था, बल्कि साफ़ मालूम होता था कि कोई और ताक़त उनसे ये मज़ामीन और हक़ाइक़ और मआरिफ़ करवा रही है, वे सिर्फ़ इसके नक़ल करने वाले हैं।

मौलाना को इस बात का पूरा यक़ीन था कि 'ईमान व यक़ीन' के बग़ैर उम्मते मुहम्मदी में कोई तब्दीली और इन्क़िलाब पैदा नहीं हो सकता और अगर इसके बग़ैर कोशिश की गई तो वह इस्लाम की रूह और इस उम्मत के मिज़ाज और इसकी तारीख़ व तजुर्बे के ख़िलाफ़ होगी, जिसका मुत्तफ़क़ा फ़ैसला यह है कि ईमान ही के सहारे यह उम्मत आगे बढ़ी और समुद्र व ख़ुश्की पर छा गई और ईमान ही के कमज़ोर होने और ख़ुदा से रिश्ता टूटने के बाद उसका शीराज़ा बिखर गया और उसको अपनी पनाहगाहों में वापस जाना पड़ा—

ख़ास है तर्कीब में क़ौमे रसूले हाशिमी

मौलाना की दूसरी अहम ख़ुसूसियत दावत में मुकम्मल तौर पर लगा रहना, बल्कि पूरी तरह उसी में फ़ना हो जाना है। यह असल में उसी पहली ख़ुसूसियत का साया और अक्स है। इस यक़ीन ने मौलाना को इस दर्जा बेचैन, मुज़्तरिब और तड़पने वाला बना दिया था कि उनको किसी पहलू क़रार न आता था और इस यक़ीन की इशाअत और तब्लीग़ व दावत उनके लिए उतनी ही ज़रूरी हो गई थी जैसे इंसान के लिए भोजन और हवा, उनकी पूरी ज़िंदगी इसी दावत से इबारत थी और वे इसी के सहारे जी रहे थे। रात के एक मुख़्तसर वक़्फ़े और मुख़्तसर क़ैलूला के सिवा उनका सारा वक़्त इसी फ़िक्र

और इसी तड़प में गुज़रता था। जमाअतों की तश्कील, वफ़्दों से मुलाक़ात, उनकी रुख़्सती की दुआ, दावत की हक़ीक़त और उसकी शर्तें, आदाब और ईमान व यक़ीन पर मुसलसल तक़रीरें, दर्से हदीस और मुसलसल बातचीत और मश्वरे यह उनके रात व दिन का मामूल था। देर रात तक यह सिलसिला जारी रहता। जहां कुछ नये लोग आ जाते, बस बहार आ जाती। मौलाना चाहते थे कि अपने सीने की सारी ताक़त और अपने दिल का सारा दर्द खींच कर उनके सामने रख दें। काम की नवईयत की वजह से आने वालों का सिलसिला बराबर जारी रहता, इसलिए मौलाना की बातचीत बराबर जारी रहती। तक़रीरों के बाद मौलाना बड़े एहतमाम और बड़े दर्द व सोज़ से लम्बी दुआ करते और सुनने वालों की आंखें नम और दिल गर्म हो जाते। कुछ शिद्दते असर या फ़र्ते नदामत से बेसाख़्ता रो पड़ते और आंखों को ग़ुस्ले सेहत देते। ये दुआएं अपनी तासीर व क़ूवत के लिहाज़ से और मांगने वाले के ख़ुलूस व यक़ीन, दिल शिकस्तगी और शाने बन्दगी और बेकसी व बेचारगी के साथ नाज़ व एतमाद की वजह से तक़रीरों से किसी तरह कम न थीं और बहुत से लोग जो कभी-कभी मश्ग़ूलियत की वजह से इन तक़रीरों से महरूम हो जाते, इस दुआ को ग़नीमत और तक़रीर का हासिल और अपने आने का सबसे बड़ा फ़ायदा समझते।

मौलाना उन जलसों को बिल्कुल ला-हासिल समझते थे, जिनके बाद अमल का कोई क़दम आगे न बढ़े। तब्लीग़ के जलसों में भी जहां उन्हें बुलाया जाता, वे पहले से वायदा ले लेते कि तुम्हें इतने आदमी देने होंगे, या इतनी जमाअतें निकालनी होंगी। दिन व रात के इन मामूलात के अलावा सफ़रों और दौरों की मुसलसल ज़ंजीर थी, जो ख़त्म होने को न आती थी बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि तब्लीग़ी जमाअत इन्हीं सफ़रों की बदौलत क़ायम है और उसकी ज़िंदगी और ताक़त का राज़ इसी में छिपा हुआ है। इसलिए अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मौलाना के दौरों का क्या हाल होगा। जहां मौलाना तशरीफ़ ले जाते, वहां पहले से बहुत एहतमाम किया जाता और हज़ारों-लाखों लोग ज़ौक़ व शौक़ से जलसों में शरीक होते और मौलाना की लम्बी तक़रीरें सुनते, सैंकड़ों जमाअतें बाहर निकलतीं और हिन्दुस्तान के अलावा दूसरे मुल्कों में भी जातीं।

मौलाना अगर किसी काम के आदमी को देख लेते और उसकी कोई सलाहियत उनके इल्म में आती, तो वे बेचैन हो जाते कि किस तरह उसको तब्लीग़ की तरफ़ मुतवज्जह कर लें। अच्छी अंग्रेज़ी जानता होता तो चाहते कि किसी तरह वह तब्लीग़ में लग जाए और उसको यूरोप के किसी मुल्क या अमरीका भेज दें। अच्छी अरबी जानता होता तो चाहते अरब मुल्कों में तब्लीग़ के लिए भेज दें। इसी तरह इंतिज़ामी सलाहियत और अक़्ल व फ़िरासत जिसमें जो भी ख़ूबी होती, मौलाना देखकर बेचैन हो जाते कि यह दीन के काम क्यों नहीं आ रही है।

मौलाना की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत और उनकी अज़्मत का राज़ यह है कि उनको देखकर यह मालूम होता है कि अल्लाह व रसूल पर दिल व जान से क़ुर्बान होना किसको कहते हैं। उसके रास्ते में अपने को मिटाने और मिटा-मिटा कर ख़ुश होने में क्या लज़्ज़त है, वह क्या बात है जो जब किसी को हासिल होती है, उसको बदल कर रख देती है, फिर उस राह का गर्द व ग़ुबार उसको नसीमे सेहरी से ज़्यादा अज़ीज़ होता है। रास्ते के कांटे महकते हुए फूल बन जाते और लज़्ज़त के थपेड़े अपने साथ 'बू-ए-दोस्त' लाते हैं। फिर आदमी सब कुछ भूल जाता है और उसको सिर्फ़ एक बात याद रहती है और उसमें वह इस तरह मस्त और सरशार रहता है कि फिर कोई फ़ानी लज़्ज़त, आरज़ी दौलत और वक़्ती फ़ायदा उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जह नहीं कर सकता।

किसी तरह उसकी फ़िक्रें एक फ़िक्र में सिमट कर रह जाती हैं और निगाहें हर तरफ़ से हट कर एक 'रूख़े ज़ेबा' पर जम जाती हैं। किस तरह उसका सीना हसद से अदावत, तकब्बुर से, अनानियत से, ख़ुदग़रज़ी से और तमाम गन्दी बातों से पाक व साफ़ हो जाता है और उसको किसी और तरफ़ रुख़ करने की फ़ुर्सत ही बाक़ी नहीं रहती। किसी तरह वह अपने वजूद, अपने जिस्म, अपने वक़्त, अपने माल और अपने बाल-बच्चे सबके साथ परवाने की बेताबी लिए हुए और बिला किसी मलामत की परवाह किए हुए अपने महबूब व मत्लूब पर निसार हो जाता है।

अल्लाह के इस बन्दे पर मरज़ पर हमला भी इस हालत में हुआ कि वह तक़रीर कर रहा था और इंतिक़ाल के बाद यह शान थी कि जनाज़ा तैयार है और जमाअतों की तश्कील भी हो रही है और हिदायतें भी दी जा रही हैं, फ़िज़ा ग़म से बोझल है, लेकिन दीन के क़ाफ़िले अज़्म भरे क़दमों के साथ अपने रास्ते पर रवां-दवां हैं और वह काम जिसके रास्ते में उसने जान दे दी, उसी क़ूवत, लेकिन सुकून और ख़ामोशी के साथ जारी है। मुहब्बत के दावेदारों और उस 'जिन्से नायाब' के ख़रीदारों के लिए मौलाना की ज़िंदगी एक ऐसा आईना है जिसमें वे इश्क़ की बोलती हुई तस्वीर देख सकते हैं और अपने 'सफ़रे जुनूं' के लिए सामाने निशान फ़राहम कर सकते हैं—

परवाने का हाल इस महफ़िल में, है क़ाबिले रश्क ऐ अह्ले नज़र!
एक रात में यह पैदा भी हुआ, आशिक़ भी हुआ और मर भी गया।

★★★

आज वह आबे हयाते जाविदानी छुप गया

आसमाने रूश्द व हिक्मत का दरख़्शां आफ़ताब,
दौरे हाज़िर का वह यूसुफ़ बेमिसाल व लाजवाब,
था दहाने तश्नगाने दीन की ख़ातिर जो आब,
आज वह आबे हयाते जाविदानी छुप गया।

गुलस्ताने दीन व मिल्लत का गुलाबे ख़ुश्तरीं
महफ़िले उश्शाक़े दीं का उश्वा परवर नाज़नीं,
मुस्लिहे अह्ले जहां व वाइज़े दीने मुबीं
गोया ख़िज़्रे राह था व ख़िज़्रे सानी छुप गया।

तारीख़े विसाल

—सैयद नफ़ीसुल हुसैनी

ऐ नूरे ऐन हज़रते इलयास देहलवी!
ऐ यूसुफ़े ज़माना व ऐ साहिबे जमाल,
इस्लाम का नमूना तेरी ज़िंदगी रही,
ला रैब तेरी ज़ात थी रोशनतरीं मिसाल,
हर बुतकदे में तेरी अज़ां गूंजती रही,
अल्लाह ने दिया तुझे नुत्क़ व लबे बिलाल,
तब्लीग़े दीने हक़ में गुज़ारी तमाम उम्र,
उस रास्ते में जान भी दे दी ज़हे कमाल,
वारिद हुआ वह क़ल्बे हज़ीने नफ़ीस पर
'रासे मुबल्लिग़ां' है तेरा साले इंतिक़ाल।

(सन् 1384 हि०)

ग़मे क़ुदवा-ए-बारगाह

(सन् 1384 हि०)

—फ़ानी कोपागंजी

अल्लाह रे यह जलवा-ए-लैला-ए-यूसुफ़ी,
दोनों जहां हैं मह्वे तमाशाए यूसुफ़ी।
उस मर्दे पाकबाज़ की सई-ए-ख़जिस्ता से,
ज़र्रे में गुम हैं वुसअते सहराए यूसुफ़ी।
अंबार इस क़दर हैं मज़ामीने ताज़ा के
बिखरे हुए हों जैसे गुहर हाए यूसुफ़ी।
आते हैं दूर-दूर से दीवाना-ए-बहार,
दामन में अपने भरते हैं गुल हाय यूसुफ़ी।
ताज़ा था उनकी ज़ात में पैग़ामे ज़िंदगी,
साज़े अज़ल है ज़मज़मा पैराए यूसुफ़ी।
होने लगी थी सारे ज़माने में सुबह सी,
इस तरह मुस्कराई थी लैला-ए-यूसुफ़ी।
करते थे पेश फ़लसफ़ा-ए-ज़िंदगी का राज़,
क़ुरआं की रौशनी में वरक़ हाय यूसुफ़ी।
इरफ़ान व आगही की मुरक़्क़ा थी उनकी ज़ात
जारी है उनके फ़ैज़ से दरिया-ए-यूसुफ़ी।
आई हरीमे ग़ैब से फ़ानी निदा-ए-दर्द
छाया है दिल पे नाला-ए-ग़म हाय यूसुफ़ी।

(सन् 1384 हि०)

कामयाबी और नाकामी की हक़ीक़ी बुनियाद

नीचे की तक़रीर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने आख़िरी सफ़र में ख़वास के एक इज्तिमाअ से फ़रमाई थी, जिसको हज़रत के एक ख़ास रफ़ीक़े सफ़र ने क़लमबंद किया था। उन्हीं की इनायत से यह हमको हासिल हुई है। हमने पाठकों के समझने की आसानी के लिए कहीं-कहीं लफ़्ज़ी तब्दीलियां की हैं।

भाइयो, दोस्तो! कायनात में जो कुछ हो रहा है और होता है, उसके दो रुख़ हैं—

एक रुख़ ज़ाहिर का है और वह यह है कि चीज़ों में से चीज़ें निकल रही हैं और चीज़ों में से असरात और ख़वास ज़ाहिर हो रहे हैं, जैसे मिट्टी से ग़ल्ला, ग़ल्ले से ग़िज़ा, ग़िज़ा से पेट का भरना, फिर उसका ख़ून बनना, ख़ून से मनी का यानी नुत्फ़े का बनना, फिर उससे ख़ून का लोथड़ा बनना, फिर उसमें से आज़ा का और इंसानी शक्ल का बनना और इसी पर क़ियास कर लीजिए, दुनिया की सारी चीज़ों को—यह वह रुख़ है जो इंसान पर इंसान की हैसियत से खोला गया है, यानी हर इंसान उसको देख रहा है और उसका मुशाहदा कर रहा है।

दूसरा रुख़ यह है कि यह सब कुछ अल्लाह की क़ुदरत से और उसके हुक्म से हो रहा है और यह सब अल्लाह का नज़र न आने वाला हाथ कर रहा है—यह रुख़ इंसानों पर इंसान की हैसियत से नहीं खोला गया, इसलिए हर इंसान उसको देख नहीं पाता, बल्कि यह रुख़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिए इंसानों पर खोला गया है, यानी यह बात अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने बताई है कि जो कुछ चीज़ों से बनता हुआ और ज़ाहिर होता हुआ नज़र आता

है, वह चीज़ों से नहीं बनता, बल्कि अल्लाह के हुक्म और अम्र से बनता है। अल्लाह तआला क़ादिर हैं कि जिस शक्ल से जो चीज़ चाहें, बना दें या बिना किसी शक्ल के महज़ क़ुदरत और हुक्म से चीज़ बना दें, इसी तरह वह क़ादिर हैं कि जिस चीज़ से जो असर चाहें, ज़ाहिर कर दें। पानी से चाहें तो डुबा दें और चाहें तो तरा दें, आग से चाहें तो जला दें और चाहें तो न जलाएं। ग़िज़ा से चाहें तो पेट भरें और चाहें न भरें, मौत की जगह से चाहें तो ज़िंदगी निकाल दें और ज़िंदगी की जगह से चाहें, मौत निकाल दें। मोजिज़ों से यही बात ज़ाहिर की जाती है कि चीज़ों में कुछ नहीं है। अल्लाह जिस चीज़ से जो चाहे निकाल सकता है, वह चाहे तो हुकूमतों की स्कीमों (और मंसूबों) को फ़ेल कर दे और महकूमों की स्कीमें चला दे। उसने नमरूद की स्कीम को फ़ेल कर दिया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की स्कीम चला दी। फ़िरऔन के क़त्ल के इरादे के बावजूद मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ुद उसके घर में पलवा दिया और उसके सारे लश्कर समेत समुन्दर में डुबा दिया। इब्राहीम अलैहिस्सलाम बीवी-बच्चे को ऐसे मैदान में डलवा कर जहां कोई आबादी नहीं थी, ज़िंदगी का कोई सामान नहीं था, पीने के लिए पानी तक भी नहीं था, उनकी यह स्कीम चला दी कि उस बच्चे की औलाद यहाँ वाली हिदायत की दावत लेकर सारी दुनिया में जावे और सारी दुनिया से लोग यहां हज को आवें, ख़ुद स्कीम वाला वहां था भी नहीं, मुल्क शाम में था, लेकिन उसकी स्कीम चल गई और जिस बच्चे के खाने-पीने का और हिफ़ाज़त का कोई बन्दोबस्त नहीं था, उसकी औलाद 'अक़ीमुस्सलात' को लेकर दुनिया में जाने लगी और सारी दुनिया से लोग आज तक हज को वहां आ रहे हैं। सारी हुकूमतें हज में कितने रोड़े अटका रही हैं, लेकिन हज की बरकत बराबर बढ़ रही है और इस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहि० की चलाई हुई स्कीम अब तक कैसे ज़ोर से चल रही है।

आदमी समझते हैं कि खेती और बाग़ों से ज़िदंगी बनती है, लेकिन अल्लाह तआला ने सबा की क़ौम को खेती और बाग़ों के बावजूद हलाक कर दिया और इस्माईल अलैहिस्सलाम को ऐसे जंगल में जहां खेती और बाग़ों का निशान भी न था, पाल दिया। आज दुनिया का यक़ीन फ़ौज पर

है। अल्लाह ने अबरहा की फ़ौज को हक़ीर परिंदों से हलाक करा के इस यक़ीन को ग़लत साबित कर दिया। ग़रज़ यह है कि मोजिज़ों से ज़वाहिर के आम इंसानों वाले यक़ीन की पूरी नफ़ी होती है। मोजिज़े ज़ाहिर करते हैं कि अल्लाह में यह क़ुदरत है कि वह असा अज़दहा बना दें, नार को बाग़ बना दें, हाथ में रौशनी और चमक की ख़ूबी की सिफ़त पैदा कर दें। दुनिया की सारी चीज़ें और सारी शक्लें घास के तिनके से लेकर एटम और राकेट तक और इसी तरह सारी ताक़तें और सारी हुकूमतें अल्लाह की क़ुदरत के तहत हैं—ये चीज़ें क़ुदरत नहीं हैं, बल्कि क़ुदरत इन पर तसर्रुफ़ करती है। ये सब चीज़ें फ़ानी हैं और क़ुदरत मुतबद्दल और ग़ैर-फ़ानी है। अल्लाह चीज़ों से ज़िंदगी बनाते भी हैं और बिगाड़ते भी हैं, कामयाब भी करते हैं और नाकाम भी करते हैं, ग़रज़ जो कुछ भी होता है, चीज़ों से नहीं होता, अल्लाह के हुक्म और उसकी क़ुदरत से होता है।

कायनात का यह वह रुख़ है जो नबियों अलैहि० पर खोला जाता है और उन्हीं के ज़रिए से मालूम होता है और वही क़ुदरत के एतबार से इस्तफ़ादे के तरीक़े लेकर आते हैं।

आलम की चीज़ों पर नज़र रखकर और उनमें नफ़ा-नुक़सान समझ कर उनको इस्तेमाल करने या उनमें अपने को लगाने का तरीक़ा हर शख़्स ख़ुद तज्वीज़ कर सकता है, क्योंकि चीज़ें नज़र आती हैं और हर आदमी उनको देखता है, लेकिन अल्लाह का हुक्म और उसकी क़ुदरत, जो चीज़ों में काम करती है, वह किसी को नज़र नहीं आती, इसलिए उससे फ़ायदा उठाने का तरीक़ा इंसान ख़ुद तज्वीज़ नहीं कर सकता। यह इल्म अल्लाह तआला नबियों अलैहिस्सलाम पर खोलते हैं, इसलिए इससे फ़ायदा उठाने के तरीक़े उन्हीं से मालूम हो सकते हैं। उन्होंने इंसानों को शक्लों और चीज़ों से हटाया नहीं, बल्कि यह बताया कि अल्लाह की क़ुदरत और उसके हुक्म को असल समझते हुए इन चीज़ों में लगो और यह यक़ीन बना लो कि जब तुम अल्लाह तआला के तशरीई अवामिर की ताबेदारी करते हुए इन शोबों में लगोगे और इन चीज़ों को इस्तेमाल करोगे तो अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से इन्हीं चीज़ों से तुमको नफ़ा पहुंचाएगा और यह नफ़ा आख़िरत तक चलेगा, बल्कि वहीं भरपूर

हासिल होगा, यही है 'ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का मंशा कि अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं होगा और कुछ नहीं मिलेगा, बस अल्लाह ही के करने से होगा और मिलेगा और उनका फ़ज़्ल व करम जब होगा, जब हमारी ज़िंदगी और चीज़ों में हमारा लगना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर होगा।

अब दो काम हैं, एक अपने में ला इला-ह वाले यक़ीन का पैदा करना और दूसरा हर अमल और हर शोबे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चलने का आदी बनना और उसकी मश्क़ करना—ये दोनों बातें पैदा करने के लिए नमाज़ दी गई और एक मेहनत दी गई और मस्जिद को इन दोनों का मर्कज़ बना दिया गया।

मस्जिद से दिन-रात में पांच बार एलान कराया जाता है, जिसमें सबसे पहले चार बार कहलवाया जाता है— اللہ اکبر اللہ اکبر – اللہ اکبر اللہ اکبر 'अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर'। इस कायनात में जो कुछ है, वह चार अनासिर (तत्त्वों) से यानी मिट्टी, पानी, हवा और आग से बना है और उनमें से हर एक का हाल यह कि उनमें से एक-एक सारी दुनिया को ख़त्म करने के लिए काफ़ी है, मिट्टी यानी ज़मीन अगर आधे दिन के लिए ज़लज़ला से हिला दी जाए तो सारी दुनिया ख़त्म हो जाए—इसी तरह अगर पानी छोड़ दिया जाए तो नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने की तरह सारी दुनिया ग़र्क़ होकर फ़ना हो जाए—इसी तरह अगर आद क़ौम की तरह हवा छोड़ दी जाए, तो सारी दुनिया का ख़ात्मा हो जाए—इसी तरह अगर आग को जला डालने का हुक्म हो जाए तो सारी दुनिया राख का ढेर बन जाए तो अज़ान में सबसे पहले चार बार कहा जाता है اللہ اکبر اللہ اکبر। 'अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) आसमान व ज़मीन अल्लाह के सामने कुछ भी नहीं। चारों अनासिर और इनसे जो कुछ बना है, वह सब अल्लाह की मख़्लूक़ है। अल्लाह सबसे बड़ा है। ख़ुदा की हस्ती के सामने हर चीज़ हक़ीर और बे-हक़ीक़त है। अल्लाह सबसे बड़ा है। रूस और अमरीका और दुनिया की सारी ताक़तों और हुकूमतों की अल्लाह के सामने कोई हक़ीक़त नहीं। अल्लाह की हस्ती सबसे बड़ी है اللہ اکبر اللہ اکبر। 'अल्लाहु

अक्बर, अल्लाहु अक्बर'।

इसके बाद दूसरी बात यह कहलवाई जाती है। "اشهد ان لا الٰہ الا اللّٰہ" 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु' बनाव बिगाड़ वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं, शक्लों और चीज़ों से कुछ नहीं होगा, अल्लाह ही के करने से होगा। "اشهد ان لا الٰہ الا اللّٰہ" अश्हदु अल-ला-इला-ह इल्लल्लाहु इसके बाद कहलवाया जाता है। اشهد ان محمدًا رسول اللّٰہ 'अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' अल्लाह तआला जो सबसे बड़े हैं और जिनके हाथ में बनाव व बिगाड़ और कामयाबी व नाकामयाबी है, उनकी क़ुदरत से फ़ायदा उठाने का तरीक़ा हम ख़ुद नहीं जानते। हम इस रास्ते में नाबीना हैं, इसके राहनुमा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं वह अल्लाह के रसूल हैं। उनके तरीक़े पर चल कर ही अल्लाह का फ़ज़्ल व करम हासिल किया जा सकता है। اشهد ان محمدًا رسول اللّٰہ अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलल्लाह०

इसके बाद कहलवाया जाता है "حَیَّ علی الصلوٰۃ، حَیَّ علی الفلاح" 'हय-य अलस्सलात, हय-य अलल फ़लाह'० ये बातें अपने अन्दर पैदा करने के लिए हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल व करम और कामयाबी हासिल करने के लिए नमाज़ के लिए यहां आओ, कामयाबी यहां वाले आमाल से मिलेगी।

अल्लाह वाले आमाल में (यानी इबादतों में) कुछ तो वे हैं जिनके साथ चीज़ों में भी लग सकते हैं, चीज़ों से पूरा अलगाव ज़रूरी नहीं। हज, रोज़ा, ज़कात का हाल यही है। रोज़े में तो खाना खा नहीं सकते, मगर खाना पका सकते हैं, दूसरों को खिला सकते हैं, तिजारत और ज़राअत वग़ैरह के काम कर सकते हैं, इसी तरह ज़कात देते वक़्त खाना-पीना दूसरे कामों में लगना मना नहीं है। हज में भी दूसरे कामों से मना नहीं है, यहां तक कि सिला कपड़ा पहनने से रोका गया है, लेकिन पहनने के लिए कपड़ा सीने को मना नहीं है, लेकिन नमाज़ वह इबादत है जिसमें आदमी तमाम चीज़ों से कट कर लगता है, न खाना खाएंगे, न खिलाएंगे, न पकाएंगे, न कपड़ा सिएंगे, न किसी से कोई बात करेंगे, ध्यान भी हर चीज़ से हटा कर अल्लाह पर लगाने की कोशिश करेंगे—तो अज़ान के ज़रिए पहले मस्जिद से तो 'अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु

अक्बर' और 'अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु' "اشهد ان لا اله الا الله" और اشهد ان محمداً رسول الله अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' की आवाज़ लगवा कर यक़ीन दुरुस्त करने की दावत दी जाती है, इसके बाद नमाज़ के अमल के लिए बुलाया जाता है, जिसमें चीज़ों से कट कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अल्लाह से वाबस्तगी की मश्क़ की जाती है और उसमें कामयाबी बताई जाती है।

भाई दोस्तो! जो कोई मशीन बनाता है, वही उसके चलाने का तरीक़ा और बनाव-बिगाड़ की बात भी जानता है। जो मशीनें बाहर से आती हैं, उनके साथ बनाने वालों की तरफ़ से चलाने के तरीक़े के बारे में हिदायतें भी आती हैं—इंसान को अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से बनाया है, मां के पेट में रखकर बनाया है, जहां किसी दूसरे का हाथ भी नहीं लग सकता, बल्कि नज़र भी नहीं जा सकती। वही अल्लाह जानता है कि इंसान की मशीन किस तरह इस्तेमाल होने में उसका बनाव और तामीर है और किस तरह इस्तेमाल होने में उसका बिगाड़ और तख़रीब है। उसने पैग़म्बरों को यही बताने के लिए भेजा और सबसे आख़िर में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा। अब जो कोई मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ अपने को इस्तेमाल करेगा, वह कामयाब होगा और जो उनके तरीक़े के ख़िलाफ़ अपने को इस्तेमाल करेगा, वह नाकाम होगा और उसकी यह नाकामी पूरी तरह आख़िरत में ज़ाहिर होगी जो इंसानों के लिए असली और दायमी आलम है।

अल्लाह तआला ने इंसानों को अलग-अलग तबक़ों में बांट दिया है हाकिम-महकूम, अमीर-ग़रीब, काले-गोरे वग़ैरह-वग़ैरह। अब उनकी तामीर और कामयाबी उन अलग-अलग तबक़ों के जोड़ में है। जोड़ वाले तरीक़े क़ुरआन मजीद ने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनाए हैं और यह भी बताया है कि अगर सारी दुनिया के ख़ज़ाने ख़र्च करके कोई जोड़ पैदा करना चाहे तो पैदा नहीं हो सकता। अल्लाह वाले आमाल में लगने से अल्लाह अपनी क़ुदरत से जोड़ पैदा कर देते हैं—

لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مَّا اَلَّفْتَ بَیْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَیْنَهُمْ

(ऐ मुहम्मद! आप सारी दुनिया के ख़ज़ाने ख़र्च करके उनके दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। हमने अपनी क़ुदरत से जोड़ दिया है।)

इंसान का मिज़ाज है जो उससे फ़ायदा खींचे, उससे कटता है और जो उसको फ़ायदा पहुंचाए, उससे जुड़ता है, अल्लाह ने और उसकी तरफ़ से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह तरीक़ा बताया जिस पर चलकर हर एक दूसरे को फ़ायदा पहुंचाने वाला बने, कोई किसी से फ़ायदा खींचने वाला न बने, ग़रीबों को बताया कि माल वालों के पास जो कुछ हो, उससे फ़ायदा उठाने का ख़्याल वे दिल से निकाल दें और ख़ुद अपनी ज़ात से हर ग़रीब व अमीर को फ़ायदा पहुंचाने वाले बन जाएं, जैसे वे रास्ता न जानते हों, तो ख़ुद चलकर और तक्लीफ़ उठाकर उनको रास्ता बता दें, मैयत हो जाए तो उसको उठाने और दफ़न वग़ैरह में मदद दें, ख़ुद क़ब्र खोदने में लग जाएं, बीमार पड़ जाएं तो बीमारपुर्सी करें, महज़ अल्लाह के लिए उनका बोझ उठावें और अगर उनके पड़े हुए पैसे नहीं मिल जाएं, तो पता चला कि उन तक पहुंचा दें, कोई ख़तरा हो तो उनकी हिफ़ाज़त करें, पहरा दें, रास्ते में अगर उनकी मोटर कहीं फंस जाए तो निकालने में मदद करें और ज़रूरत हो तो अपने झोंपड़े में उनको ठहराएं और जो मयस्सर हो, खिलाएं और जब वे इन ख़िदमतों के बदले में पैसे देने लगें तो कह दें कि मैंने जो कुछ किया था, ख़ुदा के राज़ी करने के लिए और उससे सवाब लेने के लिए किया, तुमसे कुछ लेने के लिए नहीं किया। तुम्हारे पैसे तुमको मुबारक—यह ग़रीबों को बताया गया और माल वालों को बताया गया कि अपने माल की हर जिंस और हर क़िस्म ग़रीबों पर लगाएं, पैसे भी ख़र्च करें, खाने में भी उनको शरीक करें, कपड़े भी उनको लाकर दें, अपनी मोटर और सवारी भी उनके इस्तेमाल के लिए दें और जब इसके बदले में ग़रीब अपनी जानी ख़िदमत के लिए पेश करें तो ये मालदार उनसे कहें कि हम तुमसे कोई जज़ा नहीं चाहते, ख़ुदा से ले

लेंगे। जब यह तरीक़ा चालू होगा तो ग़रीबों से अमीर और अमीरों से ग़रीब जुड़ जाएंगे।

ऐसे ही हाकिमों और महकूमों को बताया गया कि वे एक दूसरे को फ़ायदा पहुंचाने वाले बनें, फ़ायदा खींचने वाले न बनें। हाकिमों से कहा गया कि हुकूमत के जो अख़्तियार और जो वसाइल (साधन) उनके पास हों, वे उनसे महकूमों को फ़ायदा पहुंचाएं और उनको आसानियां पहुंचाने की कोशिश करें, उनकी तिजारतों और खेतियों में उनकी मदद करें, उनके लिए क़ानूनी मुश्किलें पैदा न करें। उनसे लेने और खींचने वाले नहीं, बल्कि उनको देने वाले और नफ़ा पहुंचाने वाले बनें। जब हुकूमत के लोग ऐसा करेंगे, तो पब्लिक के अवाम उनको बदलना ही न चाहेंगे। एलेक्शन के हंगामों की ज़रूरत ही न होगी। इसी तरह महकूम अवाम से कहा गया कि वे हुकूमत वालों से लेने की न सोचें, बल्कि उनको अपनी जान व माल से फ़ायदा पहुंचाने वाले बनें और उनके मसाइल में उनकी मदद करें, उनके लिए मुश्किलें पैदा न करें। उनसे अगर कोताहियां हों तो दरगुज़र करें और अल्लाह के हवाले करें।

ग़रज़ यह कि हर तबक़े को नफ़ा पहुंचाने के तरीक़े पर लगाया गया और बताया गया कि अपने जान व माल और दर्द व फ़िक्र का ज़्यादा हिस्सा दूसरों के बनाने पर लगाओ। यह इस्लाम का बताया हुआ तरीक़ा है। अगर इस पर चला जाए तो हर तबक़े का दूसरे से पूरा जोड़ होगा और हर काम दयानतदारी से और ठीक-ठीक होगा। कोई बे-ईमानी से रुपया और जायदाद पैदा करने की फ़िक्र नहीं करेगा और अगर इसके ख़िलाफ़ ज़ेहन फ़ायदा उठाने का हुआ तो फूट ही फूट होगी और लोगों की नीयतें ख़राब होंगी, फिर यह होगा कि पचास लाख के ठेके वाले पुल पर सिर्फ़ दस लाख की लागत लगाई जाएगी, जिस वजह से पुल कमज़ोर बनेगा, कोई सड़क ठीक नहीं बनेगी, कोई काम ठीक नहीं होगा। ख़ूब समझ लो, लेने वाले ज़ेहन से कोई तामीर नहीं हो सकती। तामीर नफ़ा रसानी और दूसरों को देने वाले तरीक़े से हो सकती है और नफ़ा रसानी का ज़ेहन जभी बन सकता है और अपनी पास वाली चीज़ दूसरों पर लगाने का तरीक़ा जब ही चालू हो सकता है, जब यह यक़ीन दिल

में उतर जाए कि देने वाले तो बस अल्लाह हैं, चीज़ों से कुछ नहीं होता, अल्लाह के करने से होता है और मैं जब उसकी रिज़ा के मुताबिक़ इस्तेमाल हूंगा तो अल्लाह मेरे सब काम बना देंगे और नेमतों के दरवाज़े खोल देंगे। इसकी मश्क़ नमाज़ में होगी।

आज कहते हैं कि मौजूदा ज़माने में इस्लाम चलने वाला नहीं है, सही है। लेने का ज़ेहन रखने वालों में देने का तरीक़ा कैसे चले, इस्लाम को अपनी ख़्वाहिश और अपनी हालत के मुताबिक़ बना के चलाओगे तो वह इस्लाम रहेगा ही नहीं, वह तो तुम्हारी बनाई एक नई चीज़ हो जाएगी।

किसी ने बदन पर गोदने वाले से शेर की तस्वीर बनवानी चाही। जब वह सूई से गोदने लगा और तक्लीफ़ हुई तो गोदने वाले से कहा कि क्या बना रहे हो? उसने कहा कि पहले शेर की दुम बना रहा हूं। उस आदमी ने कहा कि तुम छोड़ दो, बे-दुम के भी शेर की तस्वीर बन सकती है। उसने दुम छोड़ दी और दूसरी तरफ़ से बनाना शुरू किया। अब उसने कहा, अब क्या बना रहे हो? उसने कहा कि कान बना रहा हूं। उसने कहा, बे-कान भी शेर बन सकता है, तुम कान न बनाओ, बे-कान का शेर बना दो।

तो भाई दोस्तो! यही इस्लाम के साथ हो रहा है कि अपने मिज़ाज के बदल जाने की वजह से इस्लाम पर चलना मुश्किल हो रहा है, तो इस्लाम की काट-छांट की जा रही है और उसको अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ बनाया जा रहा है। इसलिए सबसे पहला काम यह है कि अपने मिज़ाज को इस्लाम के मुताबिक़ बना लिया जाए और यह जब बनेगा जब इस बात का यक़ीन पैदा हो जाए कि किसी मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता, सब अल्लाह से होता है और हालात का बनाव-बिगाड़ और तामीर व तख़्रीब और कामयाबी-नाकामी चीज़ों के होने न होने से नहीं होती, बल्कि अल्लाह के फ़ैसले से होती है और अल्लाह बनाने और चमकाने का फ़ैसला जब करेंगे, जब मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर आ जाऊंगा।—तो इस रास्ते पर चलने के लिए ख़ारिजी नहीं, बल्कि दाख़िली दौलतें चाहिएं, ख़ुदा का ध्यान हो, ख़ुदा का ख़ौफ़ हो— मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर ख़ुदा

के ख़ज़ानों से मिलने का और नेमतों के दरवाज़े खुलने का यक़ीन हो। इन अन्दरूनी तब्दीलियों के लिए कुछ करना पड़ेगा। चीज़ों से कामयाबी का यक़ीन हटाने के लिए और अल्लाह से कामयाबी का यक़ीन जमाने के लिए कुछ मुद्दत के लिए चीज़ों में से निकालना होगा। ईमान की मज्लिसों में बैठकर ईमान की बातें सुनना-सुनाना होगा। नमाज़ के फ़ज़ाइल और उसकी बरकतें मालूम करके इस यक़ीन के साथ नमाज़ में लगना होगा कि हम ख़ुदा में लगेंगे, तो ख़ुदा हमको नवाज़ेंगे, इसी तरह अज़कार व तस्बीहात के फ़ज़ाइल मालूम करके उनके यक़ीन के साथ उनमें लगना होगा। दूसरों के साथ अच्छे सुलूक और ख़िदमत की मश्क़ इस यक़ीन के साथ करनी होगी कि हम जितना अच्छा सुलूक अल्लाह के बन्दों के साथ करेंगे, ऐसा ही अच्छा सुलूक अल्लाह तआला अपनी शाने आली के मुताबिक़ हमारे साथ करेंगे, ख़ास कर ईमान की निस्बत से हर मुस्लिम के इक्राम की और अपने को हक़ीर व कमतर समझने की मश्क़ करनी होगी। इन बातों को दूसरों को भी दावत अपनी हाजत समझ कर इस यक़ीन के साथ देनी होगी कि जब मैं अल्लाह के दूसरे बन्दों में इसके लिए कोशिश और मेहनत करूंगा और इस रास्ते में तक्लीफ़ें और ज़िल्लतें उठाऊंगा तो अल्लाह मुझे इन चीज़ों से महरूम न रखेंगे, इसकी भी मश्क़ करनी होगी कि सारे काम सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा के लिए हों। इस तरह कुछ मश्क़ कर लेने से इनशाअल्लाह सब तबक़ों में जोड़ की शक्ल पैदा हो जाएगी।

अमरीका वालों ने सब कुछ बना लिया, लेकिन कालों और गोरों को जोड़ने में वे बिल्कुल नाकाम रहे। इस तरह उन्होंने शराब बन्द करने के लिए करोड़ों रुपए ख़र्च कर डाले और सारी कोशिशें कर लीं, लेकिन बजाए कमी के उसमें और ज़्यादती हुई। अल-हम्दु लिल्लाह इस तब्लीग़ के अमल से लाखों ऐसे आदमियों के जराइम छूट गए जिनका जराइम छोड़ना नामुम्किन मालूम होता था।

अलहम्दु लिल्लाह, इस काम में सारे ही तबक़े लग रहे हैं। जो तबक़ा इस पर मेहनत करेगा और ये बातें अपने भीतर पैदा करेगा, उससे सब लोग जुड़

जाएंगे। हम अगर अपने ही साथ जोड़ना चाहते तो जोड़ने की यह तर्कीब आपको न बताते। हम चाहते हैं कि आप सब इस तरीक़े पर कुछ मेहनत कर लें, फिर देखें कि अल्लाह तआला आप ही के ज़रिए कितनी आसानी से सब तबक़ों को जोड़ता है।

आज हर तबक़े में हर जगह जूता चल रहा है और मसाइल बिगड़ते चले जा रहे हैं। इसका इलाज सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े में है। जो जितना करेगा, अल्लाह की तरफ़ से वह उतना पा लेगा।

हमने इस काम के लिए कोई अंजुमन नहीं बनाई, न उसका कोई दफ़्तर है, न रजिस्टर है, न फंड है। यह सारा ही मुसलमानों का काम है। हमने जारी तरीक़ों पर कोई अलग जमाअत भी नहीं बनाई है। जिस तरह मस्जिद में नमाज़ के अमल के अलग-अलग तबक़ों और मश़ग़लों वाले मुसलमान आकर जुड़ जाते हैं और नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपने-अपने घरों और मश़ग़लों में चले जाते हैं। इस तरह हम सबसे कहते हैं कि कुछ वक़्त के लिए अपने घरों और मश़ग़लों से निकल कर यह मेहनत और मश्क़ कर लीजिए और फिर अपने घरों और मश़ग़लों में आकर इन उसूलों के मुताबिक़ लग जाइए। आपने अगरचे यह चीज़ हासिल कर ली तो दुनिया भर के साइंस वाले आपसे यह तरीक़ा सीखने आएंगे और ख़ुदा ने चाहा तो आप दुनिया के इमाम होंगे।

ताज़ियतनामा

—मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी, एडीटर 'सिदक़े जदीद'

शेख़ुत्तब्लीग़ मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी सुम-म देहलवी की शख़्सियत हिन्दुस्तानगीर (आल इंडिया) सी नहीं रही थी, आल वर्ल्ड (आफ़ाक़गीर) हो चुकी थी। बर्मा, जापान वग़ैरह तो फिर एशिया ही के मुल्क हैं। इनकी तब्लीग़ी जमाअतें तो ईमान का कलिमा पढ़ती हुई, यूरोप और अफ्रीक़ा और अमरीका के मुल्कों तक पहुंच चुकी थीं और कितनों को कलिमा शहादत पढ़ा चुकी थीं। एक हैरतअंगेज़ जादुई-सा दीनी निज़ाम उनकी मक़्नातीसी शख़्सियत ने, इस बेदीनी के दौर में, दुनिया भर में क़ायम कर दिया था और इस तहरीक की जो क़ियादत इन्हें अपने वालिद माजिद मौलाना मुहम्मद इलयास रहमतुल्लाहि अलैहि से वरसे में मिली थी, इसे उन्होंने बरक़रार ही नहीं रखा, बल्कि इसमें और चार चांद लगा दिए थे। अभी उम्र ही क्या थी, पूरे पचास के भी न थे, ज़ाहिर में तन्दुरुस्त व तवाना, इसी तब्लीग़ ही के सिलसिले में (और यही तो उनका मुस्तक़िल काम दिन-रात का रह गया था) लाहौर गए हुए थे, ठीक दावत व इर्शाद की हालत में, रात के वक़्त, दिल का दौरा पड़ा और जुमा के दिन ख़ुद ज़िक्रे इलाही करते करते दूसरों को ज़िक्रे इलाही की तालीम देते देते अपने मालिक व मौला के हुज़ूर में हाज़िर हो गए। परदेस की मौत वह भी ठीक ज़िक्र व ताअत के शग़्ल में जुमा का दिन बहुत बड़ी जनाज़े की जमाअत, ये सब चीज़ें मरहूम व मग़्फ़ूर के आमाले सालिहा के अज़ीम ज़ख़ीरे के साथ सोने पर सुहागे का काम कर गईं और जन्नत के इस मुसाफ़िर के अंजाम को रश्क के क़ाबिल बना गईं। ताज़ियत के मुस्तहिक़ मरहूम के रिश्तेदार, ख़ास तौर से उनके ससुर और चचेरे भाई बुज़ुर्ग मौलाना मुहम्मद ज़करिया शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर ही नहीं, सारी उम्मत, पूरी मिल्लत है और सदमा हर कलिमा पढ़ने वाले का ज़ाती व शख़्सी है। मौलाना का इल्मी दर्जा भी किसी बहुत बड़े फ़ाज़िल से कम न था। उनकी शरह मआनिल आसार, तहावी की शरह फ़िक़्ह व हदीस दोनों की एक यादगार ख़िदमत है।

अमीर जमाअत के जानशीन और साहबज़ादे का

मुश्तरका मक्तूब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

ख़ुदावन्द करीम से उम्मीद है कि मिज़ाज आली बआफ़ियत होंगे। इसमें कोई शक वक शुबहा नहीं कि मरहूम हज़रत जी बहुत ही कमालात के हामिल थे। बहुत-सी बीमारियों के इलाज की सूरत थे, बहुत से कमालात के हामिल थे और उनका हमारे दर्मियान से उठ जाना ज़ाहिरी तौर पर सूरते परेशानी, लेकिन हक़ तआला सुब्हानहू और रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन की मेहनत में क़ुर्बानियों के साथ इन्हिमाक और बारगाहे इलाही में उम्मते मुस्लिमा के लिए अनथक दुआएं इन ज़ाहिरी सूरतों का नेमुलबदल और बदले हक़ीक़ी हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी बाबरकत और बाअज़्मत हस्ती जिनके वजूदेगिरामी से उम्मत का वजूद और जिनके दर्द व कर्ब से और बेचैनियों से उम्मत का नश्व व नुमा और जिनकी गिरया व ज़ारी से उम्मत की फ़लाह व नजात और जिनके चेहरा-ए-अन्वर की ज़ियारत हज़ारों साल की इबादत है, ज़्यादा तरक़्क़ी दिलाने वाली थी। अगर वह भी इस दुनिया से तशरीफ़ ले जावें और पूरी उम्मत उनकी जुदाई के सदमे और रंज में मुब्तला हो और मुसीबतों में घिर जाए तो अल्लाह तआला शानुहू पर एतमाद और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर दीन के लिए क़ुर्बानियां और मेहनतों का इन्हिमाक और बारगाहे इलाही में गिड़गिड़ा कर दुआएं और इस मेहनत का तादिया व तब्लीग़ आप की ज़ाते आली का बदल है और क़ियामत तक के लिए यह सारे जाने वालों का बदल अपने में लिए हुए है।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ۝

हक़ तआला शानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम और फ़ज़्ल से दीन की मेहनत को जिस आली काम की तरफ़ हम तमाम अह्बाब की रहबरी फ़रमा दी है, उसमें पूरी उम्मते मुहम्मदिया मरहूमा के दारैन के मसाइब का पूरी तरह इलाज है। आप पूरे इन्हिमाक के साथ सारे मसाइब के इलाज का यक़ीन इसमें करते हुए इस मेहनत के बढ़ने और इसकी शक्ल के सही होने के लिए पूरी तरह मेहनत करें ताकि इस उम्मत के इलाज के लिए ईमान की क़ुर्बानियों वाली मेहनत की फ़िज़ाओं में बहुत से बा-हिम्मत, बे-लौस, नफ़्सकुश दाई इलल्लाहि पैदा हों और उनके वजूद में आने के लिए सवाबों को दारैन में हासिल करें। इसकी नक़्लें सारे अह्बाब को रवाना फ़रमा दें और यह वक़्त लगाना हज़रत जी के ईसाले सवाब की नीयत से करें और कराएं। सदक़ात व ख़ैरात और कसरते तिलावते क़ुरआन पाक ख़ुसूसन ज़िक्र व दुआ मुक़ामी व बैरूनी गश्त और रोज़ाना तालीम के ज़रिए भी ईसाले सवाब की सूरतें अख़्तियार की जाएं।

फ़क़त—वस्सलाम

मौलाना इनामुल हसन ग़ुफ़ि-र लहू

मौलवी मुहम्मद हारून ग़ुफ़ि-र लहू

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद यूसुफ़ साहब क़ुद्दिस सिर्रुह के बारे में सैयदुल औलिया हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब मद्दज़िल्लहू का

मक्तूबे गिरामी

बनाम एडीटर साहब रिसाला ख़ुद्दामुद्दीन लाहौर
बराए रिसाला 'हज़रत जी नम्बर'

इनायत फ़रमाएम सल्लमहू, बाद सलाम मस्नून।

कई दिन हुए, गिरामीनामा कार्ड 'हज़रत जी नम्बर' के लिए मज़्मून की तलब में आया था। एक तो गिरामीनामा इतनी देर से पहुंचा कि आपकी तह्रीर की हुई तारीख़ पर तो जवाब पहुंच ही नहीं सकता था। इसके अलावा इस नाकारा को इस क़िस्म के मज़्मून लिखने की बिल्कुल आदत नहीं और न इस क़िस्म के मज़्मूनों से मुनासबत है। हज़रते अक्दस मदनी और हज़रते अक़्दस रायपुरी नव्वरल्लाहु मरक़दहुमा के विसाल पर बहुत से अह्बाब के इसरार हुए। इसी तरह दूसरे अकाबिर के इंतिक़ाल पर अह्बाब के इसरार होते रहे, मगर यह नाकारा इंकार करता रहा। इस नाकारा के हवाले से इन अकाबिर के सवानहों में जहां कहीं मज़ामीन छपे हैं, उसकी सूरत यह रही है कि तालीफ़ करने वाले अह्बाब आकर उनके अह्वाल मालूम करते रहे और यह नाकारा अपनी मालूमात से जवाब अर्ज़ करता रहा। अज़ीज़ मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ मरहूम की पैदाइश 25 जुमादल ऊला 1335 हि० मुताबिक़ 20 मार्च 1917 ई० मंगल को हुई थी, 2 जुमादस्सानी, पीर के दिन अक़ीक़ा हुआ था, इसके बाद इसके सिवा क्या कहूं—

كان مملوكى فاضحى مالكى
ان هذا من اعاجيب الزمن

का-न मम्लूकी फ़-अज़्हा मालिकी
इन-न हाज़ा मिन अआजीबुज़-ज़मन

शुरू में वह मेरा छोटा भाई था, शागिर्द था, मेरी तर्बियत में था। वह मेरी नालायक़ी, सख़्त मिज़ाजी की वजह से अपने वालिद यानी मेरे चचा जान नव्वरल्लाहु मरक़दहू के मुक़ाबले में इस नाकारा से बहुत ज़्यादा डरता था। चचा जान के हुक्मों को वह पिदराना नाज़ की वजह से और अपने बचपन की वजह से कभी टाल देता था, लेकिन इस नाकारा की सख़्त मिज़ाजी की वजह से मेरे कहने को नहीं टालता था। चचा जान को कभी-कभी यह इर्शाद फ़रमाना पड़ता कि यूसुफ़ से फ़्लां काम लेना है, तुम्हारे कहने से जल्दी कर देगा। दिल्ली के दोस्तों का चचा जान पर बहुत इसरार होता कि साहबज़ादे सल्लमहू को शादी में ज़रूर लाएं, मगर मरहूम अपने तलबे इल्म में इस क़दर मुनहमिक था कि उसको यह हरज बहुत नागवार होता। कभी-कभी इसकी नौबत आई कि इन वक़्तों में अगर इस नाकारा का दिल्ली जाना होता तो अज़ीज़ मरहूम मुझसे जाते ही यह वायदा ले लेता कि भाई जी फ़्लां जगह जाने का मुझसे आप न कहें और चचा जान मुझसे इर्शाद फ़रमाते कि यूसुफ़ को भी साथ ले लीजियो तो मैं यही माज़रत करता कि उसने आते ही मुझसे यह वायदा ले लिया है कि मैं न कहूं।

यह तो शुरूआत थी, इसके बाद मरहूम ने हवाई जहाज़ से वह उड़ान भरी कि वह आसमान पर पहुंच गया और यह नाकारा ज़मीन पर ही पड़ा हुआ उसकी बुलन्दी को देखता रहा। चचा जान के विसाल के बाद ही एक उड़ान उसने भरी, जिसके बारे में इस नाकारा का और हज़रते अक़्दस रायपुरी नव्वरल्लाहु मरक़दहू का यह ख़्याल हुआ कि चचा जान नव्वरल्लाहु मरक़दहू की निस्बते ख़ास्सा मुंतक़िल हुई है और हर-हर बात में उसका ख़ूब मुशाहदा होता। इसके बाद से उसकी तरक़्क़ियात को देखता रहा। हज़रत मदनी क़ुद्दिस सिर्रुह के विसाल के बाद से मरहूम में एक जोश की कैफ़ियत पैदा हुई और किसी बड़े से बड़े ज़ी वजाहत शख़्स के सामने भी अपनी बात को बड़ी जुर्रात और बेख़ौफ़ी से कहने का ज़हूर हुआ और वह बढ़ता ही रहा।

इसके बाद हज़रते अक़्दस रायपुरी नव्वरल्लाहु मरक़दहू के विसाल के बाद उसकी बातों और तक़रीरों में अन्वार और तजल्लियात का ज़हूर पैदा हुआ। क्या बईद है कि इन दोनों बुज़ुर्गों की ख़ुसूसी तवज्जोहात और मरहूम के साथ ख़ास शफ़क़त और मुहब्बत का यह समरा हो। इन्हीं चीज़ों का यह असर हुआ जो इस नाकारा ने शुरू में शेर में ज़ाहिर किया कि फिर यह नाकारा इससे मरऊब होने लगा कि उसके इसरार पर मुझे मुख़ालफ़त दुश्वार हो गई। इसका असर था कि पिछले साल अपनी इंतिहाई माज़ूरियों और मजबूरियों, मर्ज़ों की शिद्दत के बावजूद जब मरहूम ने इस पर इसरार किया कि तुम्हें हज को मेरे साथ ज़रूर चलना है, तो मुझे इंकार की हिम्मत न पड़ी, और जब मैंने अपने मर्ज़ों को ज़ाहिर किया और कहा कि मेरे उज़्रों को नहीं देखते हो, तो मरहूम ने यह कहा कि ख़ूब देख रहा हूं, मगर मेरा जी चाहता है कि आप ज़रूर चलें। आख़िर में अल्लाह जल्लशानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम की वह बारिश फ़रमाई कि मुझ जैसे बे-बसीरत को भी बहुत-सी चीज़ें खुली महसूस होती थीं। इस क़िस्म की चीज़ें न लिखनी आती हैं, न लिखने को दिल चाहता है। सिर्फ़ एक औरत के ख़्वाब पर अरीज़े को ख़त्म करता हूं।

ख़्वाब तो मरहूम के हादसे के बाद लोगों ने अजीब-अजीब देखे और लिखे, लेकिन यह ख़्वाब चूंकि इस नाकारा के नज़दीक लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ वाक़िया है, इसलिए लिखवा रहा हूं। इस हादसे पर अपने ताल्लुक़ात के मुवाफ़िक़ साथ ही अपनी दिली कमज़ोरी व तहम्मुल के मुवाफ़िक़ असरात तो बहुत ही आम हुए, लेकिन एक औरत के बारे में मालूम हुआ कि वह किसी भी वक़्त चुप न होती थी, हर वक़्त रोती थी, बार-बार वुज़ू करती और तस्बीह लेकर बैठ जाती। वह इसी हाल में एक बार वुज़ू करके तस्बीह लेकर बैठी थी कि उसको ऊंघ आ गई। उसने अज़ीज़ मरहूम को देखा। वह फ़रमा रहे हैं कि क्यों पागल हो गई है? मरना तो सभी को है। ताल्लुक़ मालिक से पैदा किया करे हैं, बन्दे से नहीं।

इस पर उसने वालिहाना अन्दाज़ में यों कहा, हज़रत जी! यह एकदम ही हुआ क्या? मरहूम ने कहा, कुछ भी नहीं। कुछ दिनों से जब मैं तक़रीर किया करता था तो मुझ पर इलाही तजल्लियात का ख़ास ज़हूर हुआ करता था। इस

बार जब मैं रात को तक़रीर कर रहा था तो उनका इतना ज़्यादा ज़हूर हुआ कि मेरा दिल उनका तहम्मुल न कर सका और दौरा पड़ गया। इसके बाद मुझे एक बहुत बड़ा गुलाब का फूल सुंघाया गया। इसके साथ मेरी रूह निकल गई। बस इतनी सी बात हुई, फ़क़त! अज़ीज़ मरहूम की पहली शादी मेरी सबसे बड़ी लड़की से 3 मुहर्रम सन् 1365 हि० के मज़ाहिरे उलूम के सालाना जलसे में हुई थी। हज़रत मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने निकाह पढ़ा था, चूंकि पहले से कोई तज्वीज़ न थी। ठीक वक़्त पर चचा जान ने फ़रमाया, निकाह का इरादा है, इसलिए उस वक़्त रुख़्सती न हुई। लगभग एक साल बाद चचा जान नव्वरल्लाहु मरक़दहू की एक आमद पर इसी तरह फ़ौरी तौर पर बिना साबिक़ा तज्वीज़ के रुख़्सती हुई और 23-24 रमज़ान सन् 1358 हि० पीर-मंगल की दर्मियानी रात में 12 बजकर 40 मिनट पर अज़ीज़ हारून सल्लमहू की पैदाइश हुई। हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल व करम से उसको अपने बाप-दादा के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

—फ़क़त वस्सलाम

ज़करिया, मज़ाहिरे उलूम 12 मुहर्रम 1385 हि० बक़लम

मुहम्मद आक़िल गुफ़ि-र लहू

—मौलाना मस्ऊद अली आज़ाद फ़तहपुरी मद्दज़िल्लहू

तास्सुरात

बर वफ़ात हसरते आयात रईसुल मुबल्लिग़ीन हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब देहलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू

ऐ कि तू सिलसिला-ए-रुश्द व हिदायत का नगीं
जामा-ए-सिदक़ व सफ़ा पैकरे ईमान व यक़ीन।

जान फिर डाल दी बेजान तनों में तूने
फूंक दी रूह नई मुर्दा दिलों में तूने।

इक चुभन दिल की नुमायां तेरे हर रंग में थी
इक तड़प दीन की ज़ाहिर तेरे हर ढंग में थी।

मश्अले नूरे हिदायत का अलमदार भी तू
उम्मते अहमदे मुख़्तार का ग़मख़्वार भी तू।

वह तेरी सई-ए-मुसलसल जो शब व रोज़ में थी
आग दर असल वह तेरे दिले पुरसोज़ में थी।

तपिशे दिल ने तेरी फूंक दिए दिल कितने
तूने तूफ़ानों से पैदा किए साहिल कितने।

एक दुनिया तेरी आवाज़ से बेदार हुई
हर कठिन राह तेरी सई से हमवार हुई।

आईना दारे नुबूवत तेरे औसाफ़े जली
कार फ़रमा मेरे अख़्लाक़ में ख़ुल्क़े नबवी।

ऐ गुले ताज़ा बहारे चमनिस्ताने रसूल
तेरी ख़ुश्बू से महक उठा गुलिस्ताने रसूल!

हर शजर बाग़े नुबूवत का समर बार हुआ
यह चमन तेरे क़दम से गुल व गुलज़ार हुआ।

हर ज़लालत को हिदायत की हुई जलवा गरी
तूने बख़्शा शबे तारीक को नूरे सेहरी।

इस तरह तूने ज़माने को पुकारा कि बहम
हो गए सारे कमरबस्ता अरब हों कि अजम।

रूहपरवर तेरा नग़्मा असर अन्दाज़ हुआ
सुन लिया जिसने वह तेरा ही हम आवाज़ हुआ।

कर गई काम यहां तक तेरी जादू नज़री
रहज़नों में हुई पैदा सिफ़ते राहबरी।

दीन का रंग भरा ज़िंदगियों में तूने
काम पूरा किया सदियों का दिनों में तूने।

तेरी जांबाज़ी पे अल्लाह को प्यार आ ही गया
मुज़दा-ए-वस्ल तुझे आख़िरे कार आ ही गया

देखकर रज़्मगहे ज़ीस्त से बेगाना तुझे
मुद्दतों रोएगी अब हिम्मते मरदाना तुझे।

ताज़ियत अब तेरी किससे करूं किससे न करूं
कौन दीन दार ज़माने में है, जिससे न करूं।

नाम लेवा तेरे हर चंद हैं ग़मगीन व हज़ीं
बस ही क्या है मगर ऐ साकिने फ़िरदौसे बरीं।

रहमतें तुझ पे हों अल्लाह की दिन-रात मुदाम
और हम सबकी तरफ़ से भी शब व रोज़ सलाम

हज़रते अक़्दस मौलाना शाह मुहम्मद यूसुफ़ साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू की

आख़िरी तक़रीर

कतबा यके अज़ रफ़ीक़े सफ़र, तारीख़ 29 ज़ीक़ादा सन् 1384 हिजरी मुताबिक़ पहली अप्रैल 1965 ई० बवक़्ते शब जुमा बाद नमाज़ मग़्रिब बमक़ाम मस्जिद बिलाल पार्क, लाहौर

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम अम्मा बाद—

अल्लाह तआला ने जो कुछ ज़मीन व आसमान में बनाया है, उसमें सब वक़्ती रखा है, वक़्ती पेट भरना, वक़्ती प्यास बुझाना, वक़्ती इज़्ज़त, वक़्ती ज़िल्लत, वक़्ती मौत, वक़्ती हयात, थोड़ी सी देर के लिए तन्दुरुस्ती है, फिर बीमारी है, थोड़ी देर लज़्ज़त, फिर तक्लीफ़ आती है, वक़्ती परवरिश, और वक़्ती ज़रूरतों का पूरा होना दुनिया की चीज़ों में रखा है और इंसान में जो कुछ रखा है, वह वक़्ती भी है और अबदी भी है, वक़्ती इज़्ज़त और अबदी इज़्ज़त, ऐसी ही राहत व सुकून और चैन व सेहत वक़्ती व अबदी। इंसान में जो दौलतें रखी हैं, वे एक तरफ़ दुनिया में कामयाब बनाने वाली हैं और दूसरी तरफ़ मरने के बाद अबदी कामयाबी दिलवाने वाली हैं। इसलिए एक इंसान की दौलत की क़ीमत सातों ज़मीन व आसमान नहीं बन सकते। अगर इंसान के अन्दर की दौलत बिगड़ जाए तो सातों आसमानों और ज़मीन से न बन सके और अगर इंसान की दौलत बन जाए और उसके अन्दर की माया उभरे, तो सातों आसमानों व ज़मीन की कामयाबी से ज़्यादा कामयाबी मिलती है। दौलत तो बहुत बड़ी चीज़ है। इस दौलत का पहला हर्फ़ और पहली ईंट **'अल्लाह'** कहना है। आदमी ख़ाली 'अल्लाह' कहे, उसमें बोलने की दौलत रखी है। यह अल्लाह कहना भी बहुत बड़ी दौलत है, क्योंकि लफ़्ज़ अल्लाह कहने वाला एक भी दुनिया में बाक़ी रहेगा, तो ज़मीन व आसमान इसी तरह खड़े रहेंगे। अगर एक भी 'अल्लाह' कहने वाला न रहा तो अल्लाह तआला

सारे ज़मीन व आसमान को तोड़-फोड़ देंगे। अगर आदमी के अन्दर में कोई और दौलत भी न हो, सिर्फ़ एक दौलत ज़ाहिर हो रही हो कि ज़ुबान से अल्लाह कह रहा है, यह दौलत इतनी बड़ी है कि सातों आसमान व ज़मीन उस पर खड़े हैं, नमाज़-रोज़ा और हज व ज़कात कुछ भी न रहा, सिर्फ़ अल्लाह को माने और कहे 'अल्लाह', बस इतनी-सी दौलत इतनी बड़ी है कि इससे सातों आसमान व ज़मीन खड़े हैं। अगर इतनी दौलत भी न रहे तो पांच अरब इंसान भी हों, तो वे भी मरेंगे। दरिया, ख़ुश्की और हवा के सारे जानवर जमादात, नबातात सब ख़त्म होंगे, अगर इंसान के पास वह अल्लाह वाली दौलत न रहे, तो सब ख़त्म कर दिए जाएंगे। एक 'अल्लाह' कहना इतनी बड़ी दौलत है कि आसमान व ज़मीन उसी पर क़ायम हैं। क़ुरआन मजीद में है—

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَٰئِكَةُ أَلَّا
تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ○

तर्जुमा—'जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उस पर) क़ायम रहे, उस पर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अंदेशा करो, न रंज करो और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो, जिसका तुमसे (पैग़म्बरों के वास्ते से) वायदा किया जाया करता था।' (हामीम सज्दा, रुकूअ 4)

अल्लाह रब हैं, यह लफ़्ज़ नहीं, बल्कि एक मेहनत है। अगर कहे कि मैं दुकान से पलता हूं या किसी खेती या मुलाज़मत या सियासत या हुकूमत से पलता हूं तो यह कहना लफ़्ज़ नहीं है, बल्कि एक मेहनत है। इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है कि ज़मीन ख़रीदता है, हल चलाता है, ग़ल्ला लाकर बेचता है, जानवर और मकान ख़रीदता है, निकाह करता है, ग़रज़ इस लफ़्ज़ के पीछे लम्बी-चौड़ी मेहनत की ज़िंदगी है। ऐसे ही जब कहा कि 'हमारे रब अल्लाह हैं' तो बात ख़त्म न हुई, बल्कि यहां से शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं, तो ग़ैरों से पलने का यक़ीन निकालो। यह पहली मेहनत हुई कि मैं ज़मीन व आसमान और उसके अन्दर की चीज़ों से नहीं पलता, बल्कि

अल्लाह से पलता हूं, इसको मेहनत करके दिल का यक़ीन बनाओ। इस यक़ीन को रग व रेशा में उतारने के वास्ते मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

'अल्लाह से पलता हूं' इस बोल की हक़ीक़त दिल में उतारने के लिए मुल्क व माल, तिजारत व खेती की मेहनत नहीं है, बल्कि वह तो दिल से निकल कर ज़ुबान पर आएगी, यानी अल्लाह की रबूबियत के यक़ीन वाली मेहनत छोड़ कर मुल्क व माल वाली मेहनत पर लगेगा, तो अल्लाह की रबूबियत दिल से निकल कर ज़ुबान पर रह जाएगी, नबियों वाली मेहनत और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत इस लफ़्ज़ पर करनी होगी यानी मेहनत करके इस हक़ीक़त तक पहुंचो कि हमें सीधे-सीधे अल्लाह से पलना है, ख़ुदा को पालने में खेती और दुकान की ज़रूरत नहीं है, वह अपने हुक्मों से पालता है। अगर इसकी हक़ीक़त पैदा हो जाए, तो अमरीका और रूस भी तुम्हारी जूतियों में होगा, शर्त इतनी है कि सिर्फ़ ज़ुबान का बोल न हो, दिल के अन्दर की हक़ीक़त हो, तो दुनिया में कामयाबी मिलेगी और क़ब्र के अज़ाब से बचोगे। हूरें, बाग़ और सोना-चांदी के मकान, हमेशा की जवानी, हुस्न व जमाल इसी पर मिलेगा इसी को दिल में फिट करने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत है कायनात में जो कुछ है, वह ताबे, महदूद और फ़ानी है और अल्लाह के पास ला महदूद ग़ैर-फ़ानी है। परवरिश उस ला महदूद की तरफ़ से है, इसलिए हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े पर मेहनत करो, अल्लाह तर्बियत करने वाले हैं। अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है। अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगे, तब दिल में उतरेगा। इबादत नमाज़ है, नमाज़ तुम्हारे इस्तेमाल का अपना तरीक़ा है। ज़मीन या मोटर या जानवरों के इस्तेमाल के तरीक़े का नाम नमाज़ नहीं, बल्कि अपनी आंख, कान, नाक वग़ैरह को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो, जैसे आपने इस्तेमाल किया। सोना, चांदी और कायनात से पलने में क्या है? ज़मींदारी यानी ज़मीन से ग़ल्ला लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीक़ा, तिजारत यानी दुकान से फ़ायदा लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीक़ा, हुकूमत यानी मुल्क से फ़ायदा लेने के एतबार से हमारे इस्तेमाल का तरीक़ा,

नमाज़ क्या है? कायनात से नहीं, बल्कि अल्लाह तआला से दोनों दुनिया में लेने के वास्ते हमारे इस्तेमाल का तरीक़ा यह नमाज़ है, हमको सिर्फ़ अल्लाह पालेगा, उसमें हमारा इस्तेमाल आप सल्ल० के तरीक़े पर होगा। आपकी किस तरह सौर ग़ार में हिफ़ाज़त हुई, बद्र में फ़त्ह कहां से मिली? ख़ंदक़ में हमले से कैसे बचे? इस सबके वास्ते जवाब मिलेगा कि नमाज़ पढ़कर ख़ुदा से मांगा, तो ख़ुदा ने किया। आपके जितने मसले हैं, अगर कोई पूछे तो यही जवाब मिलेगा कि नमाज़ से हुआ। उनकी जितनी इबादत आपने की है, किसी वली ने भी नहीं की।

हदीस में है कि आप सल्ल० ने इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ी कि नमाज़ पढ़ते-पढ़ते सूखी मुश्क की तरह हो गए थे और रानों तक वरम आ गया था। अच्छे बहादुर भी, अगर नफ़्लों में आपके पीछे खड़े हुए तो सारे दिन बदन में दर्द होता, चार-पांच-छः पारों की एक रकअत होती, एक बार जितना बड़ा क़ियाम, उतना ही बड़ा रुकूअ, क़ौमा, सज्दा और जल्सा किया। आपने ऐसी चार रकअतें पढ़ीं, जो सहाबी आपके पीछे खड़े थे, उनका बुरा हाल हुआ। आपने सुबह को फ़रमाया, अगर मुझे पता होता तो मैं मुख़्तसर कर देता। आपने इबादत करके अल्लाह को राज़ी किया। अल्लाह ने कहा, मांगो, आपने क़ियामत तक उम्मत का पलना मांगा कि कोई दुश्मन उसका नाम व निशान न मिटा सके और उस उम्मत की बख़्शिश का और आख़िरत की निजात का फ़ैसला करा दिया। अब चाहे कितने ही गुनाह करे, आपका माफ़ी चाहना क़ुबूल हुआ।

आप सल्ल० ने कहा कि आपस में लड़ाई न हो, यह दुआ मांगी। अल्लाह ने फ़रमाया, यह तो होगा, दुनिया में बदअमली की सज़ा होगी। जो कुछ अल्लाह से मनवाया, उसके लिए आपने क्या रास्ता अख़्तियार किया? ख़ुदा जाने कितनी लम्बी मुद्दत है, क़ियामत तक का बक़ा तै करा दिया और आख़िरत की मग़्फ़िरत करा दी, यह किस बात पर हुआ? ऐसी नमाज़ पढ़ी कि अल्लाह को तरस आया। जब आप नमाज़ पढ़कर इस उम्मत के लिए रोते थे तो ज़मीन तर हो जाती थी। हज़रत जिब्रील अलैहि० को अल्लाह ने भेजा कि जाकर पूछो, इतना क्यों रो रहे हो? फ़रमाया कि उम्मत के लिए रो रहा

हूं। जवाब दिया कि रोओ मत, हम इस उम्मत के बारे में आपको ख़ुश कर देंगे। यह इबादत और नमाज़ पर किया, एक दिन इतना लम्बा सज्दा किया कि सहाबा किराम रज़ि० को गुमान हुआ कि आपका इंतिक़ाल हो गया। आपने फ़रमाया कि काम हो गया। उम्मत की मग़्फ़िरत की बशारत मिल चुकी, यह उसके शुक्रिए में इतना लम्बा सज्दा किया था। एक बार तीन दिन का फ़ाक़ा था, लेकिन किसी आशिक़े ज़ार से भी न कहा, बल्कि मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ी और ख़ुदा से मांगा कि ऐ अल्लाह! रोटी दे। वापस आकर हज़रत आइशा रज़ि० से पूछा, जवाब दिया कि अभी कुछ नहीं है, फिर मस्जिद तशरीफ़ ले गए। तीन-चार बार यों ही किया। तीसरी या चौथी बार हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, अल्लाह ने दिया, यानी (हज़रत) उस्मान रज़ि० ने आकर दिया और उन्होंने रोकर कहा, घर से मंगवा लिया करो। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जूते का तस्मा भी टूटे, तो अल्लाह से मांगो, 'अल्लाह हमारे रब हैं', इसकी हक़ीक़त यह है कि नमाज़ के ज़रिए मसले हल कराओ, वरना ज़ुबान पर रहेगा कि 'अल्लाह रब हैं', लेकिन जब नमाज़ पर मेहनत करके रोटी, औलाद, मकान, सेहत, इज़्ज़त और अम्न के मसाइल हल कराए जाएं, तो नमाज़ से होगा। शख़्सी मसलों का हल शख़्सी नमाज़ से होगा और मुल्क के मसले मुल्की नमाज़ से हल होंगे। इंफिरादी शहरी-देहाती मसलों को नमाज़ पर मेहनत करके अल्लाह से हल कराओ। यह रब होने की मेहनत है।

आप सल्ल० ने सारे सहाबा को मेहनत पर डाला, किसरा व क़ैसर अमरीका व रूस की तरह थे, दोनों ब्लाकों के ख़ज़ाने अल्लाह ने क़दमों पर डाले और देहाती लोग गवर्नर बने, यह सब कुछ नमाज़ से हुआ। हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में फ़तूहात हुईं, फिर बाद में बड़ा भारी ज़बरदस्त क़ह्त पड़ा, चारों तरफ़ से लोग मदीना आए। हज़रत उमर रज़ि० ने इंतिज़ाम शुरू किया और दुआ की कि ये लोग मरने न पाएं, भारी इंतिज़ाम था। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को मिस्र में ख़त लिखा कि जल्दी से ग़ल्ला भेजो, जवाब दिया कि खाने-पीने का सामान लाद कर ऊंटों का इतना बड़ा क़ाफ़िला भेजूंगा जिसका पहला ऊंट मदीना में और आख़िरी मिस्र में होगा। (चुनांचे ग़ल्ला आया, उस वक़्त) चालीस-पचास हज़ार आदमी तो हज़रत उमर रज़ि० के

दस्तरख़्वान पर रोज़ाना खाना खाते थे। देहात में अगर एक घर भी होता तो खाना वहां भी भेजा जाता, बहुत लम्बा-चौड़ा इंतिज़ाम किया मगर क़ह्त बढ़ रहा था। उसी ज़माने में एक साहब ने एक बकरी ज़िब्ह की, तो उसमें सिवाए हड्डी, ख़ून और खाल के कुछ न निकला, इसके बाद आदमी की चीख़ निकली और कहा, 'वा मुहम्मदाह' (हाय, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आंखों में से आंसू निकल पड़े, पड़ कर सो गए, ख़्वाब में हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत हुई। फ़रमाया कि उमर को मेरा सलाम कहकर कहो, तू तो अक़्लमंद था, क्या हुआ? आंख खुली तो हज़रत उमर रज़ि० के दरवाज़े पर जाकर कहा कि या अमीरुल मोमिनीन! अजिब रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़ाम लाने वाले को जवाब दो। हज़रत उमर रज़ि० भूल में आपका ज़माना जान कर दौड़े। दरवाज़े पर याद आया कि यह हुज़ूर सल्ल० का ज़माना नहीं है। यह सुनकर हज़रत उमर कांप उठे और कहा कि मेरी ज़िंदगी में फ़र्क़ आ गया। सारे मदीना के लोगों को जमा करके पूछा, मैं आप सल्ल० की ज़िंदगी से बदला तो नहीं? लोगों से कहा कि नहीं, फ़रमाया कि यह आदमी क्या कहता है? ख़्वाब सुना तो सबने जाना, सिर्फ़ हज़रत उमर रज़ि० ने न समझा। मतलब यह है कि जब तुम्हारी नमाज़ और दुआ क़ुबूल है तो इज्तिमाअ के चक्कर में क्यों फंसे? दुआ क्यों नहीं मांगते? हज़रत उमर रज़ि० ने वहीं बारिश की दुआ मांगी, क़ह्त दूर होने की दुआ मांगी, मुख़्तसर सी दुआ थी اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغْفِرُكَ وَنَسْتَسْقِيْكَ। 'अल्लाहुम-म इन्ना नस्तग़्फ़िरु-क व नस्तस्क़ी-क' मुंह पर हाथ फेरने से पहले बारिश शुरू हो गई। जानवरों में जान पड़नी शुरू हुई। देहातियों ने कहा कि चारों तरफ़ से बादलों में से यह आवाज़ आ रही है !اَتَاكَ الْغَوْثُ اَبَا حفص 'अताकल ग़ौस अबा हफ़्स!' (ऐ उमर रज़ि०! तूने बारिश मांगी, आ गई।) ऐसी नमाज़ अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर पढ़ी थी। अल्लाह पालने वाले हैं तो नमाज़ पर मेहनत करके हुज़ूर सल्ल० वाली नमाज़ बनानी पड़ेगी, फ़ज़ाइल और मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी। वुज़ू, इमामत, इक़्तिदार के मसाइल पर भी मेहनत करनी पड़ेगी, जो न आएं, उनके लाने के लिए भी मेहनत करनी पड़ेगी। सूरत बनाकर सीरत बनाओ, न आने वालों को मस्जिद में लाओ और

सिखाओ। सहाबा किराम के ज़माने में ज़बरदस्त मेहनत करके मैदान क़ायम किए गए थे, अल्लाह के रब होने की बुनियाद पर नमाज़ का क़ियाम था। शरीफ़ इंसानों का ऊपर आना और इंसानों की ज़िंदगी का बनाना यह सब जब होगा कि आपके तरीक़े की नमाज़ को दुनिया में क़ायम करने की मेहनत करो, तुम ख़ुद न करोगे, बल्कि ख़ुदा करेगा। दुकान खेत से पलने के मंसूबे के बजाए अल्लाह से पलने के लिए नमाज़ पर मेहनत करनी होगी। यह ज़बरदस्त मेहनत है।

पहले तो 'ला रब-ब इल्लल्लाहु' मेहनत का मैदान है, फिर ऐसी नमाज़ कर लो कि 'अल्लाहु रब्बुना' की तर्तीब क़ायम हो, ऐसी नमाज़ बनाओ कि ईमान पर ख़ात्मा हो और क़ब्र के अज़ाब से हिफ़ाज़त हो और क़ियामत में रौशनी मिले। नमाज़ को तर्बियत के लिए चालू करो, अपनी कमाई में से वक़्त निकालो और खेती से पलने के यक़ीन को ख़त्म करो, अल्लाह से पलने का यक़ीन पैदा करो, इसी की दावत दो। ज़ाते इलाही के ख़ज़ानों की अज़्मत और बड़ाई को सुनो और इतना सुनो कि वह ज़ात तुम्हारी आंखों के सामने आ जाए اِنْ تَعْبُدُوا اللّٰہَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ الخ 'इन ताबुदुल्ला-ह क-अंन्न-क तराहु' यानी अल्लाह की इबादत इस तरह करो कि गोया कि ख़ुदा को देखता है। यह उस वक़्त होगा कि ज़ात व सिफ़ात को देखे, कलिमा, नमाज़ के फ़ायदों का इल्म अन्दर लेना होगा, ज़िक्र व इख़्लास से लेना होगा, अपने अन्दर पैदा करना और दूसरों के अन्दर पैदा कराने की मेहनत करना, यह मस्जिद का काम हुआ, दुकान, खेत का यक़ीन हटाना है और मस्जिद वाले आमाल का यक़ीन लाना है।

अदावत, इग़्वा, चोरी, डकैती सब रुकेंगे। अगर आप वाली सारी चीज़ें मेहनत करके मस्जिद में चला दी जाएं। अल्लाह को अल्लाह और रब कहने की बुनियाद पर यह मेहनत होगी, इसके लिए मस्जिद की चीज़ें चलाओ। आपने मस्जिद की चीज़ें भूखे और प्यासे रहकर चलाई थीं, सर्दी से बदन कपकपा रहे हैं और मस्जिद में तालीम चल रही है। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० का मज्मा था। आप आकर खड़े हुए, उनमें से मुझे पहचाना और आप बैठ गए और फ़रमाया कि ऐ फ़क़ीरों और मुहाजिरों के गिरोह! मालदारों से पांच सौ वर्ष पहले जन्नत में जाओगे इसके

लिए इमामत, इक़्तिदा, ख़ुशूअ-ख़ुज़ूअ, सफ़ सीधी करना, इन सब बातों पर मेहनत है वह नमाज़ बने जिस नमाज़ से ख़ुदा दुनिया की तर्तीब बदले, ज़ालिमों को ज़िना करते हुए सज़ा दें, उसके लिए नमाज़ का माहौल बने, फिर ताक़त का मुज़ाहरा होगा। अगर अल्लाह को रब मानते हो तो यह मेहनत करो कि अल्लाह रब हैं, वह नमाज़ पर और नमाज़ की तालीम पर पालेंगे, सेहत देंगे, क़र्ज़ दूर करेंगे, इसे बैठकर सुनो, फ़ज़ाइल की तालीम होगी, तो मालूम होगा कि बाहर वालों का बचाव मस्जिद के अन्दर की आबादी से है, वरना बेड़ा ग़र्क़ होगा। यह हदीस है। ये बातें मुख़्बिरे सादिक़ सल्ल० की बातें मालूम होंगी। हम इज़्ज़त, हिफ़ाज़त और ग़िना कहां ढूंढ रहे हैं? और यह इज़्ज़त, हिफ़ाज़त और ग़िना है कहां? तुम्हें सब चीज़ें नमाज़ में मिलेंगी। दावत, तिलावत, क़ुरआन वग़ैरह पर यक़ीन हो, नमाज़ के बाहर और अन्दर भी यक़ीन भरा हो। अल्लाहु अक्बर कहकर سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ 'सुब-हा-न-कल्लाहुम-म', फिर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ 'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' कहे यानी तर्बियत करने वाले अल्लाह हैं, सारे आलम की तर्बियत करने वाले اِيَّاكَ نَعْبُدُ 'इय्या-क नअबुदु' यानी हम इबादत पर तर्बियत करेंगे और क़ियाम व रुकूअ इबादत है, इस पर ख़ुदा पालेंगे। अगर मेरा रुकूअ और क़ुरआन पढ़ना और इस्तिक़्बाले क़िबला आप सल्ल० के तरीक़े पर आ गया, तो अल्लाह मुझे पालेगा, पालने वाला इबादत पर पालेगा क़ियाम आपके वाले तरीक़े पर होगा, तो पालेगा। سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ 'सुबहा-न रब्बियल अज़ीम' में भी यही बात है कि तर्बियत करने वाले अल्लाह हैं, इबादत पर तर्बियत करेंगे, रुकूअ इबादत है, सर, कमर, कूल्हे आपके तरीक़े पर होंगे तो अल्लाह पालेंगे। हर-हर हिस्से पर ख़ुदा से परवरिश का यक़ीन जमाओ, जलसे में رَبِّ اغْفِرْلِيْ 'रब्बिग़्फ़िरली' कहा, यानी अल्लाह पालने वाला है।

नमाज़ किस बात से ठीक होगी? ईमान, ज़िक्र वग़ैरह ठीक किया जाए। यक़ीन, नीयत, शक्ल, शौक़ और ध्यान बनाओ, अपने में बनाओ, दूसरे में मेहनत करो, अपने मुहल्ले में और दूसरे मुहल्ले में गश्त करो। शहर और गांव में कोई बे-नमाज़ी न रहे, सारी दुनिया में कोशिश करो। नुबूवत मिलने के बाद

आपने इंसानों से लेने का कोई रास्ता अख़्तियार नहीं फ़रमाया, आपने तायफ़, तबूक, यमन, हज़रमौत और नज्द वालों को नमाज़ बताई, जो कलिमा पढ़े, नमाज़ बनाने की मेहनत करे। जब यक़ीन बने कि अल्लाह रब है और रास्ता नमाज़ है, यह दुनिया में चले तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी, नमाज़ को अन्दर से बनाओ। मसले का अन्दर से ताल्लुक़ है। जब यह बना लो तो नमाज़ की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो। घर, कारोबार और मुआशरत।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वे तरीक़े लाओ, जो अल्लाह की ज़ात से पलने के लिए दिए हैं। आप सल्ल० के रास्ते में भी कमाई और घर है और इंसानों के रास्ते में भी कमाई और घर के नक़्शे हैं। रब की बुनियाद पर नमाज़ और नमाज़ की बुनियाद पर कमाई, यानी जब कमाई से परवरिश नहीं, बल्कि अल्लाह से परवरिश है तो अल्लाह का हुक्म मान कर लेंगे। जब यह बात है तो फिर क्यों कमा रहा है? पहले नमाज़ से परवरिश ली, लेकिन नमाज़ के बाद दो रास्ते हैं, कमाना और न कमाना। अगर न कमाया और सिर्फ़ नमाज़ पढ़कर अल्लाह से ले तो ठीक है। इसमें सिर्फ़ यह शर्त है कि अगर न कमाओ तो किसी मख़्लूक़ का माल न दबाना और हाल का इज़्हार न करना, सवाल न करना, इसराफ़ न करना, तक्लीफ़ पहुंचे तो जज़ा फ़ज़ा न करना, अल्लाह से राज़ी रहना। अगर इतनी बात आ जाए तो कमाई की ज़रूरत नहीं। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं और अस्हाबे सुफ़्फ़ा हैं और लाखों मिसालें हैं कि सिर्फ़ नमाज़ से काम चलाया।

अगर कमाना है, तो उस पर भी पाबन्दी है, अगर न कमाना हो, तो ग़सब, इसराफ़, सवाल, जज़ा, फ़ज़ा और घबराहट न हो, अगर कमाते हो तो यह बुनियाद है कि कमाई से न मिलेगा, अल्लाह से नमाज़ पर मिलेगा और आपके तरीक़े से कमाई पर मिलेगा, फिर ख़ुदा देगा। मैं पैसे के लिए नहीं कमाऊंगा, बल्कि आपके तरीक़े कमाई में चलाने हैं, कमाना हुक्म को पूरा करने के वास्ते है, हम यक़ीन करते हों कि सिर्फ़ अल्लाह पालेगा। हम तस्वीर और बदमाशी के नावेल नहीं बेचेंगे, हराम से नहीं कमाना है, जो चीज़ें हलाल हैं, उनसे कमाने के दो तरीक़े हैं। उसमें एक तरीक़ा हलाल है, दूसरा हराम है। सुवर, कुत्ता,

बिल्ली इनका खाना हराम है। बकरी, गाय, मुर्ग़ी, हिरन हलाल है। इनमें भी हराम व हलाल बनेगा। अगर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहकर ज़िब्ह किया, तो हलाल, वरना हराम होगा, बकरी को बीच से मार कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कहा तो भी हराम बनेगा क्योंकि तरीक़ा ग़लत था। पहले तो कमाई की क़िस्म है कि हलाल पर है या हराम पर है, फिर हलाल में भी तरीक़ा हलाल है या हराम है? अगर अल्लाह के रब होने का यक़ीन है तो आपका तरीक़ा चालू करने पर आवें। ख़ुदा की रिज़ा के लिए कमाइए, फ़ज़ाइल के शौक़ और मसाइल की पाबन्दी के साथ कमाइए। जो बात नमाज़ में कही, वही कमाई में कही, अब कमाई, तिजारत, ज़राअत (खेती) में राब्ता ख़ुदा की ज़ात में हो, तो दुनिया में चमकना और फलना-फूलना होगा। ज़लज़ला, सैलाब, बमबारी में दुकान और घर का बाल बांका न होगा। क्योंकि महबूब का तरीक़ा है, चाहे दुकान मिट्टी की है, आप सल्ल० का तरीक़ा है तो एटम से ज़्यादा ताक़तवर है, फिर कमाई की बुनियाद पर घर चलावेंगे।

कुछ लिबास हराम और कुछ हलाल हैं, खाना और तर्ज़ कुछ हराम, कुछ हलाल हैं। इस यक़ीन को लो कि अल्लाह रब हैं, आपके तरीक़े पर पैसे ख़र्च करेंगे, लिबास और ग़िज़ा की तर्तीब आपके तरीक़े पर होगी तो अल्लाह पालेगा। आपके तरीक़े का झोंपड़ा किसरा के क़िले से बेहतर है, मुश्रिकीन, मुलहिदीन, फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार की ढाई लाख की कोठी से बेहतर है। पांच रुपए की झोंपड़ी में वह ख़ैर है जो पचास लाख की कोठी में नहीं है, इसका नाम ईमान है।

आपके तरीक़े का सवा रुपए का कुरता मज़ेदार होगा। यहूद व नसारा के तर्तीब वाले पचास लाख के कपड़े से उसमें वह मज़ा नहीं है। आप सल्ल० के तरीक़े पर अल्लाह पा लेंगे और यहूद व नसारा के तरीक़े पर घर का नक़्शा आया तो ख़ुदा पालेगा, वरना बिगाड़ेगा। शादी के तरीक़े, दवा-दारू, वलादत व मौत के तरीक़े में भी आप सल्ल० के तरीक़ आवेंगे, अपने तरीक़े बदल कर आप सल्ल० के तरीक़े लो। अगर तुमने इन घरों को यहूद व नसारा के तरीक़े पर रखा तो पानी की बौछार और ज़मीन का झटका उसे तोड़ देगा। अगर आपका तरीक़ा है तो एटम बम भी नहीं तोड़ सकेगा।

लोहा, पत्थर मस्जिद में लगाया, बे-क़ीमत है, क़ीमती तो आप सल्ल० के तरीक़े हैं। आपके बदन से जो तरीक़े चले, वे क़ीमती हैं। हुक्म ख़ुदा का हो और तरीक़े आपके हों, अगर सारी दुनिया की कोठी हीरे-जवाहरात हों तो आपके पाख़ाना फिरने की सुन्नत उससे क़ीमती है। आगे मुआशरत है। जब कमाई और ख़र्च आप सल्ल० के तरीक़े पर लाओ तो ग़नी बनोगे। अमरीका और रूस और सारी दुनिया फ़ज्र की दो रकूअत के बराबर भी नहीं। एक आदमी पांच हज़ार रुपया लेकर अफ़्रीक़ा गया, वहां बहुत नमाज़ी बने, इंग्लिस्तान और फ्रांस में मस्जिदें बनीं, इसलिए माल यहां ख़र्च करो। ज़िंदगी सादा बनाओ, तो कमाई की हवस न रहेगी। कमाई की हवस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबूबक्र व उमर वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम के नक़्शे पर आने के लिए नहीं है, बल्कि क़ारून, फ़िरऔन, शद्दाद और शराबियों और ज़ानियों के तरीक़े पर आने के लिए है। ख़ूब पैसा और वक़्त बचेगा, जबकि आपकी तर्बियत के तरीक़ों पर आओ। अमीर व ग़रीब को जोड़ा तो सारी दुनिया की इंसानियत पर भारी एहसान होग, ख़ुदा ख़ुद बदला लेगा। एक-एक नमाज़ पर सातों ज़मीन व आसमान से बड़ी जन्नत मिलेगी, फिर मुआशरत है, दुनिया में इंसाफ़ चलाना है, हम लाखों की बिल्डिंग में रहे और लोगों को झोंपड़ा भी न मिले, यह ज़ुल्म है इंसाफ़ नहीं।

ये यहूद व नसारा दूसरों का ख़ून पीते हैं, उनकी नक़ल उतारने में मज़ा आता है और जिस ज़ाते गिरामी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ाक़े बरदाश्त किए और अपना ख़ून बहाया, उनके तरीक़े पसन्द नहीं आते। आपके ख़ून के कई क़तरे बहे, एक वक़्त का फ़ाक़ा और ख़ून का एक क़तरा सारी दुनिया से अफ़ज़ल है। उश्शाक़ माल देते थे और आप उम्मत की ज़रूरत पर माल लगा कर फ़ाक़ा करते थे। हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार थीं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू जह्ल की बेटी से निकाह करने का इरादा किया, आपने मिंबर पर खड़े होकर फ़रमाया कि मैं हलाल को हराम नहीं कहता, लेकिन इस निकाह से फ़ातमा को तक्लीफ़ होगी और उसकी तक्लीफ़ से मुझे तक्लीफ़ होगी, इतनी महबूब बेटी की शादी में पचीस रुपए भी न लगाए। हज़रत फ़ातमा रज़ि० ख़ुद चक्की पीसती थीं। हज़रत अली रज़ि० मज़दूरी

करते हैं, मशक ढोते हैं, छः बच्चे परवरिश पाते हैं। हुज़ूर सल्ल० के पास ग़ुलाम-बांदी आए। हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत फ़ातमा रज़ि० को भेजा कि ग़ुलाम-बांदी मांगो, हाथ बटाएंगे। हज़रत अली रज़ि० ने हाथ और कोख दिखाई और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने भी हाथ कोख दिखाए और ग़ुलाम और बांदी मांगे। आपको ग़ुस्सा आया, फ़रमाया, तुम्हें तो बांदी और ग़ुलाम दूं और मेरी उम्मत भूखी रहे। आपने अपने को और अपनों को क़ुर्बान करके उम्मत बनाई है। तुम अपने ऐश को क़ुर्बान करके उम्मत को बचाओ। क़ौम, वतन, क़बीले के बन के न चलो, अल्लाह के बनकर चलो। परदेसियों और मक़ामियों का मसला हो तो उसे ज़ुल्म का नारा न बनाओ, सिंधी और पठान कहा तो यह ज़ुल्म का नारा है। जब आदमी ज़ुल्म करे, जाहिलियत और असबियत पर मदद करे तो नमाज़, रोज़ा मुंह पर फेंक कर मार दिया जाता है, यहां तक कि मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम मसला भी नहीं है। मुस्लिम ने हिन्दू को मारा और मुस्लिम की मदद की तो तुम जालिम बने, हर मसले में वाक़िया की तह्क़ीक़ करो। सिंधी ने पंजाबी को पीटा, पंजाबी ने पठान का माल दबाया, अब कहो कि ज़ुल्म और इंसाफ़ का मसला है। मुसलमान से इंसाफ़ दिलाना है, इंसाफ़ वाले सरों पर आते हैं और ज़ुल्म वाले पैरों पर गिरते हैं। इंसाफ़ पर ख़ुदा ऊपर लाएगा। क़ौमियत, उबूवत, नुबूवत की बुनियाद पर मदद होगी कौन मज़्लूम है? कौन ज़ालिम है, यह देखा जाएगा।

इन तीनों लाइनों में अल्लाह को रब मानकर आपके तरीक़े पर आओ तो राकेट और एटम बम से ख़ुदा महफ़ूज़ करेगा। आप सल्ल० के तरीक़े पर करेगा। आपके तरीक़े टूटने पर न मानने वालों को पैरों पर डालता है और मानने वालों को सरों पर लाता है। पहले इबादत को ताक़तवर बनाओ, फिर तीनों लाइनों को अल्लाह के रब होने पर और आप सल्ल० के तरीक़े पर उठाओ तो ख़ुदा मदद करेगा, इसलिए आपने कमाई और घर की तर्तीब बनाई। इस पर आना आसान होगा, अल्लाह आसान करेगा।

यूरोप वाले ख़ून लेने वाले हैं और अपना ख़ून देने वाले हैं, तो अब बताओ कि हाल के मुश्रिक, मुल्हिद और यहूद व नसारा ने जो ख़ून किया है उसे देखोगे तो आपका तरीक़ा महबूब बनेगा, जब अल्लाह के रब होने का यक़ीन

हो, इसलिए आपने वक़्तों की तर्तीब क़ायम की, साल भर में चार महीने मदनी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अपना माल लेकर ख़ुदा के रास्ते में निकले ताकि इबादत का माहौल दुनिया में क़ायम हो और आठ माह अपने मक़ाम पर रहते हुए आधा दिन मस्जिद में और आधा दिन कारोबार में, आधी रात मस्जिद में और आधी रात घर में। इसके एतबार से चार महीने मक़ामी इबादत का माहौल बनाने के लिए दो महीने कारोबार और दो महीने घर के लिए और चार महीने बाहरी नक़्ल व हरकत करते हुए, इबादत का माहौल बनाने के लिए।

जब एक तबक़ा मदनी सहाबा रज़ि० की तर्तीब पर पड़ जाए, तो दुनिया में दीन फैले और यह तो आला तर्तीब है और दूसरी अदना तर्तीब है और वह यह है कि एक बार चार महीने दे और हर साल चालीस दिन और हर महीने तीन दिन और हर हफ़्ते में दो गश्त और रोज़ाना की तालीम और तस्बीहात की पाबन्दी और हफ़्तेवारी इज्तिमाअ। यह तर्तीब ऐसी है जैसे उंगली कटवा कर शहीदों में नाम लिखवाना। हर हफ़्ते में बिलाल पार्क के इज्तिमाअ में रात गुज़ारें। इबादत की यह तर्तीब क़ायम करो, किसी दिन नमाज़ ताक़तवर बन जाएगी और ख़ुदा तुम्हें उस रास्ते पर चमका कर रहेंगे। अब बोलो, कौन किस तर्तीब पर आता है।

इस बयान के बाद लोगों से चिल्ला, तीन चिल्ले के औक़ात की तश्कील की गई। इसके बाद एक साहब का निकाह पढ़ाने की दरख़्वास्त की गई। हज़रत जी रह० ने निकाह पढ़ाया, तबियत चूंकि पहले से मुज़्महिल चल रही थी, इसलिए कि मश्रिक़ी और मग़्रिबी पाकिस्तान का लगभग डेढ़ माह से ज़्यादा का सफ़र रहा, जिसमें शब व रोज़ इंतिहाई मेहनत व जांफ़शनी की वजह से राहत व आराम का मौक़ा नहीं मिला था, इसलिए अपनी हमेशा की आदत के ख़िलाफ़ सिर्फ़ एक मिनट की दुआ फ़रमा कर क़रीब की क़ियामगाह की तरफ़ तश्रीफ़ ले जा ही रहे थे कि साद बिन हाफ़िज़ मुहम्मद सिद्दीक़ नूही को बुलाकर फ़रमाया कि मुझे चक्कर आ रहे हैं और उसका हाथ पकड़ कर चलते रहे, यहां तक कि अचानक वे ज़मीन पर बैठते चले गए। गिरते ही पसीनों में तरबतर हो गए। मुश्किल से चारपाई पर लाद कर लिटाया गया, बेहोशी तारी हो गई। हकीम साहब ने दवा खिलाई। कुछ मिनट के बाद होश

आया। इशा की नमाज़ दो आदमियों के साथ मिलकर रात को साढ़े तीन बजे अदा की, फिर सुबह के वक़्त सुबह की नमाज़ अदा फ़रमाई। मौलाना इनामुल हसन साहब को अपनी किताबों की ज़कात निकाल देने की वसीयत की। डॉक्टर साहब ने मुआयना करके कहा कि अब ख़तरे से बाहर हैं, मगर शदीद एहतियात की जाए। जब सब लोग जुमा की नमाज़ के लिए मस्जिद चले गए तो फिर हालत मुतग़य्यर हो गई। दो आदमियों के साथ मिलकर नमाज़ इशारे से अदा फ़रमाई, लेकिन सांस उखड़ चुकी थी। बार-बार رَبِّیَ اللّٰہُ رَبِّیَ اللّٰہُ 'रब्बियल्लाहु रब्बियल्लाहु' पढ़ रहे थे। अस्हाब जुमा के फ़र्ज़ अदा करके आए। आपने फ़रमाया, शायद आख़िरी वक़्त है। सब लोग क़ुरआन पढ़ें और ज़िक्र करें और ख़ुद हिज़्बुल आज़म की दुआएं पढ़ने में मशग़ूल हो गए, ख़ास तौर से वह दुआ, जो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की फ़त्ह के वक़्त पढ़ रहे थे, यानी

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू अन-ज-ज़ वादहू व न-स-र अब्दहू व ह-ज़-मल अह्ज़ा-ब वह्दहू विर्दे ज़ुबान थी और اَنْجَزَ وَعْدَهٗ 'अन-ज-ज़ वादहू' पढ़ते हुए शहादत की उंगली आसमान की तरफ़ बार-बार उठाते थे।

इतने में डॉक्टर आ गए और अस्पताल ले जाने का मश्वरा दिया। हज़रत जी ने अस्पताल की बात सुनी, तो फ़रमाया, 'वहां औरतें होंगी, मैं न जाऊंगा।' डॉक्टर और बाअसर हज़रात ने अर्ज़ किया कि हज़रत! एक औरत भी पास न आएगी, फ़रमाया, 'फिर कोई मुज़ायक़ा नहीं, आख़िर एक बड़ी कार में लिटाया गया, फ़रमाया कि मेरे साथ कौन चल रहा है? मौलाना इनामुल हसन साहब और हाफ़िज़ मुहम्मद सिद्दीक़ साहब वग़ैरह ने कहा कि हम सब साथ हैं। आपने फ़रमाया, मेरे साथ कोई नहीं चल रहा है, बस अल्लाह साथ है।

रास्ते भर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ला इला-ह इल्लल्लाहु का विर्द ज़ुबान पर जारी रहा। एक बार मालूम फ़रमाया कि अब अस्पताल कितनी दूर है, कहा गया

कि बस पहुंच रहे हैं। अब لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ला इला-ह इल्लल्लाहु की आवाज़ ज़रा धीमी पड़ चुकी थी, फिर होंठ कलिमा तैयिबा की तकरार से हिलते रहे, यहां तक कि अस्पताल के दरवाज़े ही पर रहमते हक़ ने उस बेचैन रूह को बढ़कर अपनी गोद में ले लिया और वर्षों के थके मुसाफ़िरों ने रफ़ीक़े आला के पास जाकर आराम पा लिया। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ- 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०'

नौहा-ए-ग़म

रईसुत्तब्लीग़ मुजाहिदे दीन, सरे हल्क़ा-ए-औलिया-ए-मुताख़्ख़रीन हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रहमतुल्लाहि अलैहि के नाक़ाबिले तलाफ़ी सदमा-ए-रेहलत पर

—ग़मज़दा (मौलाना) अब्दुर्रहमान ख़ां शाकिर देहलवी

यह किसने जादा-ए-मंज़िल दिखा के छोड़ दिया
दिलों को राह में बिस्मिल बना के छोड़ दिया।

किसी ने ख़ूब यक़ीन व ख़ुलूस का आलम
दिल व नज़र में बसाया, बसा के छोड़ दिया।

अभी हयात की तफ़सीर ना मुकम्मल थी
अधूरा क़िस्सा-ए-हस्ती सुना के छोड़ दिया।

क़सम है गिरया-ए-याक़ूब व ज़ब्ते यूसुफ़ की
तेरे फ़िराक़ ने सबको रुला के छोड़ दिया।

अमीरे क़ाफ़िला तुझ पर ख़ुदा की रहमत हो,
क़रीबे मंज़िले मक़्सूद ला के छोड़ दिया।

वह इक उम्मीद जो वाबस्ता तेरी ज़ात से थी,
ग़ज़ब किया उसे हसरत बना के छोड़ दिया।

हर एक शक्ले ज़माना को शक्लें दीं के सिवा
मिसाले नक़्शा-ए-बातिल मिटा के छोड़ दिया।

तेरे ही सोज़ ने मेवात की फ़िज़ाओं में
चराग़े रुश्द व हिदायत जला के छोड़ दिया।

कहां यह दीन पे मेहनत कहां यह दौर मगर
तेरे ख़ुलूस ने आसां बना के छोड़ दिया।

ख़ुदा को सौंप चला अपनी नाख़ुदाई भी
सफ़ीना क़ौम का लंगर उठा के छोड़ दिया।

वह बेकसी है कि आंसू भी ख़ुश्क हैं शाकिर
ग़मों ने अरसा-ए-वहशत में ला के छोड़ दिया।

ख़ुदा का चाहने वाला

वह यूसुफ़, वह अमीरे आज़मे तब्लीग़े इस्लामी,
ख़ुदा के नाम का आशिक़, ख़ुदा के दीं का मतवाला।
उसे अब हम न पाएंगे, उसे अब हम न देखेंगे,
ख़ुदा के पास जा पहुंचा, ख़ुदा का चाहने वाला।
लगन थी उसके दिल में हर घड़ी हर लम्हा मज़हब की
उसे हर दम ख़्याले इश्क़े मौला मस्त रखता था।
ख़ुदा के दीन की ख़ातिर लुटा दी ज़िदंगी उसने
ख़ुदा के दीन की ख़ातिर ही वह दुनिया में जीता था।
ख़ुदा के दीन का परचम उड़ाया उसने दुनिया में
बजाया, चार सू उसने ख़ुदा के दीन का डंका।
क़ियामत तक ख़ुदा-ए-पाक की हों रहमतें उस पर
करे अल्लाह उसका आख़िरत में मर्तबा ऊंचा।

—पैकरे ग़म क़ारी मुहम्मद इसहाक़ हाफ़िज़ सहारनपुरी

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० का दौर जिन लोगों ने देखा है वह अच्छी तरह जानते हैं कि उनकी तक़रीरें दीनी तड़प और दावती बेकली और बेचैनी और तअल्लुक़ मअ-अल्लाह और यक़ीन व ऐतमाद अलल्लाह में डूबी हुई होती थीं जिनके पढ़ने से आज भी अल्लाह का यक़ीन व तवक्कुल और दीन की ख़ातिर जान व माल की कुर्बानी देने का जज़्बा दिल में पैदा हो जाता है।

मुन्शी अनीस अहमद मरहूम ने हज़रत जी (मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह०) के आख़िरी दौर की ऐसी बहुत सी अहम तक़रीरें जमा करके छापी थीं, साथ ही हज़रत के आख़िरी वक़्त के हालात, इंतिक़ाल के वक़्त की कैफ़ियत, वफ़ात के बाद कई अहम हस्तियों के ताज़ियतनामे, अहम मज़ामीन, ताज़ियती नज़्में, ग़रज़ बहुत सी अहम चीज़ें छापी थीं।

अब यही मज्मूआ हिन्दी ज़बान में बड़े एहतमाम से छापा गया है जो दावती काम से तअल्लुक़ रखने वाले लोगों के लिए नादिर तोहफ़ा है।

ISBN 81-7101-474-7 www.idara.co
9 788171 014743 ₹ 60000